



विदेह १४७ म अंक ०१ फरवरी २०१४ (वर्ष १ मास १४ अंक १४७)

ए अकमे अछि:-



पाखत्रे (लोकनी उपासक)-

डुकावाम बया लेष्ट- मैथिली अखबार-



श. निशु कुमार मिह

एक

आग बरि छि। हमर निह कनी देवीसँ खूजन। हम अगल कनयन स्रनुकेँ उठ। देवि।
ओलौषणव गडन-गडन हमर नजयि देवौनपव गेन। गोरिन्द अगला सगे भगवानक दनु ह्यांछे न२
गेन डन। टिकुनि माष्टिसँ टोवन देवौनपव आरि कोला ह्यांछे ले बहे। ओ एकदम स्रन बुंमाग।

हम ओलौषणव गडन-गडन सोटेत बही। गोरिन्द लोकरी करौजे पाजी शिव डन। रौबुजीक
रुगना गडाति ओ अगल माएकेँ अगला सगे पाजी न२ गेन डन। हम दनु ग्यांछे ए घबमे बहेत
बही। हम आ हमर भगिनी।

हम उठौलौ, थिचकी खोनलौ, आ केराड खोलैएरना बही आकि एतरोमे आलसक अरौज स्रलेमे
आएन।

“स्यो पाखत्रे ! अखनि धरि स्रतले डी ? पाखत्रे... स्यो पाखत्रे...”

रिना किडु रँजल हम केराड खोनि देलौ। हम केराड रँन केरौ आ एकठा रौसण न२ क२
नगीचक हेष्टन जागले ओकरा पाडु-पाडु टुपाटाग टलि देलौ।

आलस हमर लणषणक मीत डी। हमसभ अखला नीक मीता डी। एकरुठाम काज करै डी।
ओहो ड्रागलर आ हमसँ। एकरु कसनीमे लोकरी करै डी आ एकरु बंगक ट्रक टनरै डी।
हमरा गुमसुम टलेत देखि ओ रौजन-

“स्यो डी ! कोन सोचमे डूमन डी ?

“किडुओ तँ ले ? चेतना एना गडाति हम कहलौ।

“किडु केना ले ? ओहिना रौजि बहन डी की ? कनी सोटु, जँ अहाँक रिआह भ२ जय तँ भगिनीकेँ
देखेरानी कियो तँ भ२ जेती ?”



ए रातपव हंसत हम पुढि देदिथ-

“के देत हमवा अपन रैषी ? ” अ रात सुनिते ओ जेव-जेवसँ हंसत नगन । ओकव हंसि बोकेले आ किछु आव रैजेले हम ओकवासँ पुढलौ-

“ए यो आजेस, अहाँक पामपोष्ट रैषि गेन की ? ”

“हँ । ”

“तखन दूरैअ कहिया जअ बहन छी ? ” हम पुढलियनि ।

“अगिना सगुन, कपोन (छेष्ट गिबिजाघव)क प्रार्थनासेरक पछाति । ”

“कपोनक प्रार्थनासेरक रौद ? ”

“हँ, रैक ओग दिन । ”

“ओग दिन किअए ? उँसेर पछाति चलि जाएरँ... । ”

“ले, अमनमे ओग दिन हमव मीत ज्ञा बहन अछि, ए जेन हम ओकरे संगे ज्ञाए चहि छी । ”

“तखन तँ अहाँकेँ हमवा कसणीक लोकरी छोडए पडत । ”

“एहेन तिअगणा लोकरी करौने के कवए ? ओहूना भावतमे बहि कए के नीक पाँग कमा सकैए ?

ओतए मज्जुवीओ तँ रैसी छै ? ”

“तखन अहाँक रिदेशे जाएरँ एकदम पक्का ल ? ”

“हँ”, एते कहि ओ अपन पोष्टक रैष्टे आव कसए नगन ।

“रिदेशे जूनि जाड । ”, हम पछिना किछु दिनसँ आजेससँ कहैत बहिथ ।

“हमवा रैष्टमे अडँगा जूनि नगाड । ”, ओग समय ओ हमवा कहनि । हम टूगटाप रैष्ट चलेत बहलौ ।

जखनि गोरिन्द गाम छोडा पणजी शेरव गेन छना, तखन हमवा रैड खवाप नागन छन, ह्रदा आरँ तँ

आजेस अपन गाम आ देसे छोडा पवदेस ज्ञाए बहन छन, आग हमवा कसिको खवाप ले नागि बहन अछि ।

हम दूनु गोष्टे हेष्टन पहुँचलौ । तीतव जागते सब क्रियो हमवा घुमि-घुमि कए देखए

नगन । हम मोल-मल मोचलौ, “रूमागत अछि जे ओकरा सरँहक नजबि हमर केन ठंठन केने आ केन रोगयाँपव चलि गेन छै, हमर नहसुनियाँ आँधि, उँकरव चाम आ गमगव देह...”

“पाखलो, अहाँक रौसणमे दुध दी, आकि चाह ? ” हेष्टनरैना हमवासँ पुढनक । हम भवि रौसण चाह नए

जेलौ । दूठी रैडका पौरवेष्टी आ एकठा ककिण (रनयाकाव पौरवेष्टी) जेलौ । आजेस अपन मीतक संग

दूरैअ जागरैना रात करैत बहन । ओकव मीत ओतएसँ ओकरा जेन कोना रिदेशी समाष अलेले कहैत

बहे । रिदेशे जागसँ सरँनित रात करैरैना आजेसकेँ छोडा हम अपणा घबक रैष्ट जेलौ ।

पडामक कसिणी मीसी हमवा घब अएन छेली । ओ सुनुकेँ उँठा कए हँह धोएले कहनि आ ओकरा

डुँठगव नान हवाक पहिरेनिथि । हमसँ अपन हाथ-हँह धो जेलौ । दूठी गिनाममे चाह ठ वलौ आ

कसिणी मीसीकेँ चाह पीरैले पुढलियनि, “अहाँकेँ चाह चाली की ? ”

“ले राड । हम अखल घबसँ चाह पीरि कए अएन छी, ओहूना हम होष्टनक चाह ले पीरै छी । ” कसिणी

मीसीक ए ज्वरैपव हम टूप भए गेलौ । हम सुनुकेँ रैजेलौ । ओ थपडि पाडत हमरा नग एनी

आ पुढए नागनि, “मामा आग बरि छिथक ल ? आग तँ अहाँ काजपव ले जाएरँ ? ” हम हँ कहि अपन

माथ टोलौलौ । “मीसी आग अहाँ हमवा अपणा ओग्याम ले नए जाएरँ । आग हम एते बहरँ...मायाक

संगे । ” ओ मीसीसँ राजनि ।

“ठीक छै दाग... आग हम अहाँकेँ ले नए जाएरँ । ” हम दूनु गोष्टी चाह पीरैते बही तारत कसिणी

मीसी अपन डाँवक साडि सन्तारैत घबक रैवतन-रौसण धोएले चलि गेली ।

सुनुक रौरुजी ओकरा सन्तारैले तैसाव ले बहनि । ओग समय ओ मात्र छेठ रैथिक छेली । नीक

जकाँ राजियो ले होगक । केरव दू चावि शेरुहि राजि सके छेली । आरँ तँ ओ साठ त्रिण रैथिक

भए गेन अछि, ह्रदा देखरामे पाँट-साठ पाँट रैथिक रूमाग छेली । गोब-नाव चेहवा ! हम ओकरा



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

माथपव अगल हाथ फेबलौ। मोम-सल नवम केशे आ नहसुनियाँ आँथि। हम ओकरा आँथिमे देखलौ, आ ओ हमरा आँथिमे देखलक। ओ अगल आँथि पौघ कइ लेलक। ओकर नहसुनियाँ आँथिमे एक्क सँग कएकठा दृष्टि उठबि गेल।

एहेन रूमांग छन जेना ओ किछ पुछए छै छेली। हमरा कनी आश्चर्य भेल।

“अहाँक नहसुनियाँ आँथिसँ हमर कोना प्रवास सँबन्ध अछि।” हमर नजबि ओकर गुनारी केशपव गेल। ले जानि किएक ओकर गोब-नाव टाम, गुनारी केशे देखि हमरा एहेन रूमाएन जेना पूवा अकाम मेघसँ आछादित भइ गेल हूअए, ठीक तहिना हमर मोल अतीतक सवासँ भबि गेल...। तबबि कमिणी मौसी घबक काज पूवा कइ कइ अगल घब जेपव बहथि, कि हम सुनुकेँ हूका सँगे नइ जागले कहलियनि।

“हम ले जाएँ।” सुनु अगल माथ डोना कइ ज्वरौ देलक।

“ले, हमरा काजपव जागक अछि, अहाँ मौसीक सँगे छनि जाँ। दुगहबमे हम जल्दी आँरि अहाँकेँ नइ आँएँ।” एते कहि हम सुनुकेँ समेसँक प्रवास केलौ।

सुनु काणए नगनी, दूद पढाति जाए कइ ओ मौसीक सँगे जागले तैयार भइ गेली। कमिणी मौसी सुनुकेँ नइ कइ छनि गेली। हम केरौड रँल कइ लेलौ। हमरा दिसागमे आँएन सलठा प्रवास सृति एकठा पबज आ चमकक सँगे रीथबि गेल। रूनु हम अगला आँगकेँ पूर्ण रूपेण ओकरेमे तकइ नगलौ... अगल पहिचानक खोज कबए नगलौ...।



दु

गोरिनन्दक दान्दी द्वारा कहन गेन थिम्सा अथनि धरि पाखलोकें सक्ती छैननि । शोनी आ मोषु दुनु भए-रहिन बहथि । गामक सीमानपव हुनक घर छैननि आ अणन किछु खेती-बाँची सेहो । ओ अणला खेती-बाँची करै छन आ दोसरोक खेतमे काज करैले छनि जाग छन । एकव अतिविद्ध ओ गवामीमे मज्जुरीक काज करै छन ।

एकदिन शोनी नकड़ १ काँठेले जंगन गेन छेली । फुमावि शोनीक संग तीरुषी आर स्त्री लोकनि छेली । आष दिन जकाँ ओ सब नकड़ १ काँठे क२ ओकर रौम सेहो रँगा लल बहथि; तखल हुनका सबकेँ सीठीक अराज सुनरामे एननि । ओ टाक गोठे डरि गेली । तग दिन पाखले (पुर्तगाली हिरवगी) जंगनमे सिकार करैले अरै छन, ओ सब एहेन सुनल छेली । हिरवगी सरहक मलमानी आ स्त्रीगणपव कएन गेन अवाचारसँ ओ सब परिचित छेली । ओग सीठीक अराज सुनि ओकरा सरहक तँ जेना होशे-हराम गुम भ२ गेन । ओ सब रँहुत घरवा गेली । तारत हाथमे रँदुक लल तीरुषी पाखले ओत पहुँट गेन । बाघकेँ सोमहा आरि गेना पछाति जेना लोक नक न२ लोत अछि ठीक ओहिना ओ सब नकड़ १ रौम छोडि पड एन । तीनु पाखले ओकरा सरहक पीछा कए नगन । अणन जल रँचरेले भालीरानी शोनी गिरेत-पडत रँहुत थकि गेन छेली । आर आर रँसी गतिअँ दोगर ओकरा रूतक रात लै बहि गेन छन । ओ पाछु तकनक, तँ देखनक जे एकठी हिरवगी अणन कहापव रँदुक आ छातीपव एकठी तमगा नगोल मितिथी रेशेभुयामे ओकरे पाछु दोगन आरि बहन अछि । ओग पाखलोकें देखि शोनी अणन जल रँचरेले अणन अतिम शक्ति नगा क२ दोगनी । ओ सबठी स्त्रीगणकेँ पाछु छोडत आर जी-जानसँ दोगए नगनी । रँहुत रँसी दोगराक कावणँ आर ओ थकि क२ टकनाटुव भ२ गेन छेली । जेव-जेवसँ डुपव-मिटाँ करैत ओकर छाती आर फाँट क२ राँहव निकलि जाएत, ओकरा एहल रूमाए नगले । ओकर दोगराक गति मँद हुअए नगले आ एतरेमे ओ पाखलो ओकरा नगीट पहुँट गेन । नगीटक आष-आष स्त्रीगणकेँ छोडि ओ पाखलो शोनिअ दिन रँठन आ अततः ओ शोनीकेँ अणन राँहिमे कसि जेनक ।

एतरेमे पाछुसँ दुष्टी आर पाखले ओत पहुँट गेन । ओहो सब शोनी दिन अणन हाथ रँठनक, दूदा ओ पाखलो ओग दुनु पाखलोकें पुर्तगाली भायामे किछ कहनके । अ सुनि ओ दुनु पाछु हँठन आ आगु भालीरानी स्त्री सरहक पीछा कए नगन ।

पाखलोक राँहिमे शोनीक साँस फुलए नगले आ ओकर राँक् सेहो रँग भ२ गेली । ओग हिरवगीक देहमे शोनी आरि गेन छेली ।

शोनीकेँ होस आरि गेली । अथनि धरि साँस परि गेन बहे । पुवा जंगनमे अहाव पमरि गेन छेली । अ अहावकेँ देखि शोनीकेँ रूमाग जे जेना हएव ओकर दम निकलि जेते । ओकरा देहपव कोलाठी नुआ लै बहे, दूदा ओकरा देहपव किछु फाँटन-छिँन नुआ बाधि देन गेन बहे ।

ओकरा माथक मिटाँ कोला कड़गव टीज बहे, दूदा की ? से पता लै छनि सकले । ओ जडरँत भ२ गेली । ओकर कलेज धक-धक करै छेली, देहक पोष-पोषमे दरद होगत बहे । ओ जेतए केतो अणन हाथ बथे तँ ओकरा सुखन खुन हाथ नली । ओ रँहुत डरि गेन छेली, दूदा कनि लै सके छेली ।

ओ उँठ क२ रँस गेली; तखल अकसात् शीटिक गजोत रँवले । ओकर गजोत ओकरा सद्धटा देहपव पडले जगसँ ओकर आँधि टोहिया गेली । छल भविने अणन आँधि रँग क२ क२ हएव खोननक तँ देखनक जे रएह पाखलो ओकरा नगीट आरि बहन छेली । आष दुष्टी पाखलो जेतए ठाँठ बहे ओत बहन । पछाति जए क२ ओ दुनु ओही शीटिक गजोतमे आगु रँठि गेन ।

शोनी दिन आरि बहन पाखलो नागठे देह छन । ओ हएव डवसँ मिरि गेली । ओ फाँटनका नुआ-फाँट न२ क२ अणना छातीकेँ सँपेत ठाँठ होगत प्रवास कए नगनी, दूदा छँठन गाछ जकाँ धवतीपव गिब गेली । ताधरि ओ पाखलो शोनीकेँ नष्ट द२ अणन हाथेँ पकड़ि जेनक । ओ पाखलो शोनीक देहक मिटाँ ओछोन गेन कपड । उँठा जेनक । शोनीक माथक मिटाँ बाखन शैपी शोनीक माथपव



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

वाथि ओ जेव-जेवसँ हंसए नगन । शौलीक घरवाहए रँडिते जा बहन डेल्ले । ओ डरै खबख काँपए नगनी । ओकरा बुमेले जे एकठा रँडका अजगव खुब पैघ दूह रौल ओकरा अणन ग्राम रँगा जेते । ओ जेवसँ टिकवनी, दूदा ओकर अरौज ओकरा दूहसँ ले निकलि सकन ।

ओ फेवसँ शौलीकेँ दुना-टाठी कवर शुक कइ देनकेँ आ ओकरा अणन राँहिये कसि जेनकेँ ।

ओग अह्वाव गुणुग जंगनमे ओ अजगव सविपहूँ ओकरा अणन कारुमे कइ जेनकेँ । नाव-नांखाव आ पात सभसँ अजरी तवहँ अरौज आरँ नगले ।

साँम पर्जा ते अ राँत सौसे गाममे पसरि गेले । सीता कह डेली, जे केना ओ पाखलोक टंगनसँ रँटि गेली । शौलीक घवनी रँतले डेली जे केना पाखलो कमरि शौलीकेँ उँठा कइ भागि गेन ओ ओकर गच्छति नुष्टि जेनक । शौलीकेँ तँ पाखलो लाटि-टोथि लल हेते, अ सभ मोटि-मोटि अणन सभ लोक ओकरा प्रति अणन दया-भार देखरौत बहे ।

“पाखलो शौलीक शौलीक कइ देनकेँ ।”

अ राँत सौसे गाममे आगिक भाँति पसरि गेले । ओकर भाय जे लोकबीसँ घर घुमेत बहे ओकरा अ राँत बुमनामे आरि गेले । ओ गोम्ससँ नान भइ गेले, सगे डरि सेहो गेले । ओकरा हाथमे फडहरि बहे जेकरा ओ अणन कहापव वाथि जेनक ।

“ए फडहरिसँ जँ हम ओग पाखलोकें जित ले काँटि देनियनि तँ हमरो नाँ ले ।”

ओ रँव-रँव यहर शेट, दोहरौत बहे । शौलीकेँ ताकए जागले ओ केतेको लोकसँ शिती केनक दूदा कियो ओग अह्वाव जंगनमे जागले कियेक तैयाव होगते ? ओ एकठा नानठेस जलोनक आ अणनरे चलि देनक । लोक सभ ओकरा पागन कहए नगले । “पाखलो अहाँकेँ गेली मारि देत ।” अ कहि लोक-सभ ओकरा डेरौक प्रयास केनकेँ दूदा ओ अणन जिदगव अडन बहन । ओ अणनरे चलि देनक, तखन दादी सेहो ओकरा सगे जागले तैयाव भइ गेले । दादी कार्वेव (रँस) क चानक बहे । शिकन-सुवतमे ओ सौषुँ-सण बहे । दूनु हरा जागले तैयाव भइ गेन । दादी शौलीक काणमे किड कहनकेँ ।

ओ दूनु पातोलेक राँठे जंगन ले जाए कइ सीधे गामक पुनिस सृशेन दिस चलि देनक । एहेन देखि गामक किड आब रूठ आ जूआण सभ ओकरा सग भइ गेले । सभ कियो पुनिस-सृशेन पहुँच गेन । दादी पुनिस-सृशेनक केर, (पुठगानी पुनिस अधिकारी) देसाअ साहेरकेँ शौव पावनकेँ । ओ दवरँछा ले खोलि थिडकी खोननक आ ओतिसँ रौलवक दृष्टि देखनक ।

“पाखलो तीतवमे डे की ?” दादी काल्शुँरनसँ पुछनकेँ ।

“ले ।”

साधावण भेषमे काल्शुँरन कहनकेँ ।

“तखन गेले केतए ?”

दादी फेव पुछनकेँ ।

“कार्मोक प्रयाण आ हूक दूठा सगी जेले-जेव शिकावण गेन डथि, अखनि धरि ले आएन डथि ।

हूक पाजरी शिह सेहो जेरँक डगहि, ए जेन आरँ ओ काल्हि अँता ।”

काल्शुँरन कहनकेँ ।

“साँटे ?”

“हँ, साँटे ।”

देरकीप्रुष्ठ भगवानक किविया । काल्शुँरन देसाअ कहनकेँ ।

ले, ले ओ मुठ रौजि बहन अछि । हमरा सभकेँ पुनिस सृशेनक तीतव जइ कइ देखरौक चली ।

“पहिल दवरँछा खोनु, हमरा सभकेँ देखि कइ पाखलो तीतवे ग्रुदी मारि देल हएत ।”

सोषु जेवसँ टिकडा कइ कहनक आ अणन फडहरि नचरँ नागन ।

जाँ ! जाँ ! रँन कक अणन अँ नाँक । काल्शुँरन गोम्ससँ कहनकेँ ।

“अखनि जँ अहाँक रँहिक गच्छति पाखलो नुष्टि लल बहितए तँ अहाँ कि अलिा दुग रँस बहितौ ?”



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सोनु गोम्सार्स राजन ।

“आरि अहाँ किछु रैसीए राजन नगलौ अछि, एम्स रैसी जँ किछु राजलौ तँ हमरा रँदुक निकामे पड़त ।”

“अहाँ एना किएक राजि बहन छी कान्स्ट्रैन ?” दादी रीछुटेमे छैकनक । कारी शीशोक नकड़ी सन देहरना दादी कोगना जकाँ गवम भ२ गेन ।

“अहाँ कि कोना राहबी लोक छी ? हिरवीक प्छैपोम्सा, अणन आ आणक कोना गलैल लै ? एहेन-एहेनकेँ तँ पाखजोएक सग भगा देरौक चली ।”

“हँ साँटे !”

एते कहि सभ लोक हँ-मे-हँ मिननके ।

लै, लै हमरा सभकेँ अहाँक रातगव भरोस लै अछि । हमरा सभकेँ देखि दिअ, पाखजो निश्चिते जीतव दूरकन अछि । एते कहि सोनु जीतव जागक जिद करए नगन ।

“लै, लै एहेन रात लै छै । जँ एहेन बहिले तँ अहाँ सभ अखनि धरि पड़ । गेन बहिलौ । पाखजोसँ अहाँ सभकेँ कोली खाए पड़ि तए । अहाँ सभकेँ जँ अखला रिश्रास लै लोगत अछि तँ जीतव आरि जाँउ दूदा जन्दीए रँहवा जएरँ ।”

सभ कियो पुनिस सृष्टिमिक जीतव टुकि गेन । ओतए तीणठा पुनिसक अतिरिउ कियो ल बहए । एक कान्स्ट्रैन देसाङ्ग दोसव बायक कारीम आ तेसव पोनु पुनिस ।

सोनु आ दादी, दूनु शोलीकेँ तकेले पातोलेक जंगन दिस चलि देनक । सोनु शोलीक बाँउ न२ न२ क२ टिकडए नागन, दूदा ओकवा कोना जराँ लै भेटेलै । जंगनमे भानु सभ कालेत बहए । टाक दिस कीड़-मकोड़-क अराँज आ तैगवसँ अन्हाव आ मल्लोष्ट पसवन बह । दूनुगोष्टे बाति भवि जंगनक थोक छालेत बहन दूदा ओकवा काणमे मात्र ओकले दूवा नगोन गेन अराँजक प्रतिधुनि सुवागत बहलै । सोनु छल भविले रँहूत निवाशि भ२ गेन । गाम-घबमे केकरो देहमे भा आरि कोनासँ जे हिति लोगत छै ओहिना सोनुक देह काँपए नगलै । ओ अणन देहगव निरात्रण केनक आ अणन आधि कन्हव क२ क२ गोम्सार्स राजन नगन-

“हम सौंसे जंगनमे आगि नगा देरै, आ जवा क२ सुझाह क२ देरै । यएह जंगन पाखजोकेँ शिवा देल छै । सुझाह क२ देरै एकवा, सुझाह क२ देरै । ओ रँदुरँदुए नगन ।”

एते कहत ओ काँपए नगन । ओ नानठैमक रँतिहरि उकसा देनके । नानठैमक गजोत भतकए नगलै । ओग रँतिहरिसँ ओ सौंसे जंगनकेँ जनेरौक तैवावी कवए नगन, दूदा दादी ओकवा लोकि जनके ।

“अहाँ ज्ञ कोन पगनपण क२ बहन छी ?”

“ज्ञ पगनपण लै छै दादी । एँ जंगनमे आगि नगा क२ हम ओग पाखजोकेँ सुझाह क२ देरै ।”

सोनु अणन दौत आ ठोव पीसित राजन ।

“लै, लै, एना ओ तँ लै मरि सकत, हँ जंगन अरमस जवि क२ सुझाह भ२ जेते । एते कहि दादी ओकवा लोकिक प्रयास केनके । एँ रातकेँ न२ क२ दूनुमे घिचोतली भ२ गेलै, आ एँ रीच सोनुक हाथसँ नानठैम गिब गेलै आ रूत गेलै । टाक दिस गुण्ण अन्हाव भ२ गेलै ।

रँहूत बाति तीजनागव ओ दूनु गाम घुमन ।

अखनि दूगा पहिले-पहिले रौंग देल छेते । खान्सँ उगर्छि क२ रैसन सोनुकेँ मिन आरँए नगलै, तखल दवरँजजागव खँ-खँक अराँज भेलै । सोनु उर्छि क२ केरौड नग गेन । ओकवा केरौड नग पँहूटेसँ पहिले केरौड धकेलि क२ तीणठा पाखजो जीतव आरि गेलै । सोनु ओग केरौड नग खान्सँ जकाँ ठाढ़ बहन ! घबमे रँलेत नानठैमक गजोतमे ओ पुनिस प्रधाण कार्मो रेयसकेँ चिह्न गले । गोव-गहूमा टाम आ तैगव गुनारी मोड़ । पुनिस प्रधाण अणन कन्हासँ शोलीकेँ मिचाँ उतावि देनके । ओ शोलीकेँ कहुना रँसेरौक प्रयास केनक दूदा अमहन बहन, हारि क२ ओ अणन अगाँ थोनि ओछा देनके आ ओगव शोलीकेँ सुता क२ तीनु पाखजो घुमि गेन । ओकवा सरँहक जूताक अराँज शेलै:-शेलै: कय भेन जा बहन छन ।



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

शानी धवतीपव घोनठन डेली । ओकव आँधि खुजले बहे । सोषुकेँ तँ रूमू जे कियो ओकवा पएवमे काँठी ठोकि देनके, ओ भारशुच ठाठ भ२ सभ किछु देखेत बहन । ओकव मज्जबि कोणमे बाखन फुडहविपव गेलै । नानठेमक गजोतमे ओग फुडहविक चमकेत धाव सोषुक अमहायतापव हँसत बहे । ओ चमक सोषुक करेजकेँ टावनि केल जा बहन डन ।

सोषु जखनि शानी नग आएन, तँ शानी नहूँ-नहूँ अणष आँधि थोननक । दुषुक रोकू हवा भ२ गेन बहे । सोषु शानीकेँ मोव पावनके तँ ओ 'आहि-आहि' कहि क२ ज्वारै देनके । सोषु ओकवा पाणि पीरैले देनके । एतरेमे सोषुक अदवक भार रौहव निकलि गेलै ।

शानीक शीनउंग कएना पछाति पाखनो ओकवा सोषुक ओगठाम डोडा देल डेलै ए जेन गामक लोक सभ सोषुकेँ समाजसँ रौडा देल डेलै । शानीकेँ गर्ड डनहि अ रौत सोसे गाममे पसवि गेलै । सोसे गाममे ल तँ कियो सोषुसँ रौत करै आ ल कियो ओकवा काजपव रँजलै । सोषुक रोजी रँग भ२ गेलै ।

ओग घण्टाक देसले दिस शानी आमेहवा करैक प्रयास केल डेली, ह्रदा सोषुकेँ रौटचेमे घब आरि जागक कावणेँ ओकव जिणगी रँटि गेलै । गर्डरती होगक नाजक कावणेँ ओ कएक रँव घबसँ भाणि गेन डेली ह्रदा सभ रँव सोषु ओकवा घ्या नगत ।

Illustration -01

ओकव घब गामक सीमापव बहे । ए जेन गामक अण लोकसँ ओकवा रिशेय अणक लै बहे । तेकवा रौदो गामक मोगी सभ शानीकेँ देखि ओकवा नाँपव खुक हेलै । ओकवापव हुरती कसत बहे । शानी रेचारी सभ किछु महण केल जा बहन डेली । "टाहे जे किछु भ२ जाए ह्रदा अणष जान लै देरै शानी ।" सोषु ओकवा कहनके । ओ अहो कहनके- "रौया टाहे कखूक हूअए रा केहलो हूअए जँ एकरेव ओ माँठेमे पडा जाग डै तँ ओकव पानन-पोषण माँठेकेँ करै पड डै । माँठि रँजव लै होगक चली ।"

सोषुकेँ काज डेठेरै मोसकिन भ२ गेलै, आ ओ दुषु प्रयासः उँगामे बहए नगन । डुपकसँ लोक सरहक डुँट-गीट सुलैत-सुलैत ओ आजिज भ२ गेन डन । ओ रँहूत पनेमिष बहए नगन । "जँ आव किछु दिस गाममे बहनो तँ तुखसँ मवि जाएरँ आ लोकक डुँट-गीट तँ सुषहि पडत ।", अहिना सोटि क२ ओ एकदिस गाम डोडा क२ शैनणेँ चलि गेन । शानी घबमे अमगले बहि गेली । सोषु कहियो-कान गाम आरै आ शानीकेँ अण-पाणि द२ क२ आपन चलि जाग ।

भोवका पहव बहे । शानी केरौडसँ मनकेत सर्वग दिस निहारी डेली । तखन ओ टोकेठसँ तीव अरैत कार्मो प्रधाणकेँ देखनके । ओकव तँ करेजा धक् द२ बहि गेलै । अणष कणहा आ ड्हातीपव तमगा नगेल कार्मो प्रधाण अणषा हाथक रँदुक धवतीपव बथेत ओतै रँस गेन । शानी तँ डवक मवन काँपन नगनी । कार्मो प्रधाण ओकवा किछु कहए टाँह डन ह्रदा रौजि लै सकन । ओकवा कोकणी लै अरै डेलै सागत ए जेन ओ टुप बहि गेन । पछाति जख क२ ओ जे किछु पुरतगानी भाषामे कहनके तेकवा शानी लै रूमि सकनी । ओ शानीकेँ अणषा नगेमे रँसिक गणीवा केनके । आ हेल किछु थिण भ२ क२ टुप बहि गेन । भ२ सकेँ डै जे ओकवा पश्चाताप भेन होग, "एहेन शानीकेँ नगलै ।" ओ उँठन, अणष रँदुक अणषा कणहापव बखनक आ चलि देनक । ओकवा जूताक अरौज शानीक करेजक धुकधुकीक पाडाँ ग्या भ२ गेलै ।

शानी अणषा घबमे पाखनोकेँ महावा देल डै, कियो अ रौत सोसे गाममे डिडा या देनके । अ खरँरि सोसे गाममे ब्रती जकाँ पसवि गेलै । सोषुकेँ अ खरँरि जखनि शैनणेमे डेठलै तँ ओ



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अपन हाथसँ काण दारि जेनक । आरि ओ कोन झूठे गाम ज्ञात ? एहेन मोटि ओ अपन काण अँठ जेनक ।

कार्यो लेवने पुनिस सृशेनक सब पाखजोक प्रधाष छन । ओकवा निस्सँसँ भावत एनाग छन-सात रँथक नगधक भ२ जेन बहे आ ए गामक पुनिस-सृशेनमे ओकव दोसव रँवथ बहे । ओकव डीन-डॉन-नान, गोव, गुनारी केमे आ मोडरना बहे । राघ-सन ओकव दूनु आँथिसँ लोककेँ डव भ२ जाग । ओ जहियसँ ए गाममे आएन तहिसँ ए गामक लोकपव अपन हूफम चनरँ नगन छन । दू मास धरि ओ लोक सबकेँ खुरि डरोनक-धमकोनक-सतोनक आ पीठनक । आरि ओ लोककेँ सतअरँ उँ रँन क२ देल छन झूदा गामक लोककेँ ओकवासँ रँहूत डव नछे ।

दोसवे दिन साँममे जखनि मोनी अपन घबक दीग जेसँ छेनी, तखने दवरँज्जापव झूताक अराज स्रनक । कार्यो प्रधाष सीधे घबमे घुमि गेन, आ रँदुक कनहापवसँ निचाँ बाधि रँस गेन । डवसँ मोनीक हाथसँ दीग छुटि गेलै आ टाक दिस अन्हाव भ२ गेलै । प्रधाष अपना जेरीसँ सनाग निकानि दीग जेसनक आ हँसए नगन । ओकव हँसीक अराजसँ गुवा घब गुँजायमान भ२ गेलै । ओ मोनीकेँ अपना नग रँसा जेनक आ ओकव गान, ठोव आरि ठुँडीकेँ सहनारँ नगलै । ओ स्रन हँसि बहन छन आ मोनीकेँ हँसैरँक प्रधाष क२ बहन छन । झूदा मोनी डवसँ काँपि बहन छेनी । जग समए पाखजो मोनीकेँ अपना रँहिसे घीटे छन ठीक ओग समए ओकव नज्जवि ओकवा लावपव गेलै । ओ ओकव गवम लावकेँ पौछनक आ ओकवा समनरँ-रँमरँजे पीठपव थपकी यावए नगन । रँदमे ओ मोनीक ठुँडीकेँ उँठरँत ओकवा अपना दिस देखेजे गिावा कवए नगन । झूदा मोनी ओकवा दिस ले देखि सकनी । ओ अपन दूनु हाथेँ अपन आँधि साँपि, काँपैत-काँपैत ओतअसँ जागक उँफम कवए नगनी । एतरेमे पाखजो ओकवा अपन दूनु हाथेँ अपना रँहिसे कमि जेनके ।

दोसव दिससँ बोले-बोव गामक लोक सब कार्योकेँ मोनीक घबसँ निकलैत देखनके । ओकवा देखते लोक सब मोनीक नाँपव खुक हफकए नगन आ ओकवा सँरँधमे तिस-तिस प्रकावक रँत सब कवए नगन ।

“हे-रँ देखिओक ! मोनीक भड् आ ।”

“ओ पाखजोकेँ अपना घबमे बाधि रँधा शुक क२ देल छै रा अपन नर दूनियाँ रँसा लेल अछि ?”

“दूनियाँ केहेन यो ? रँधा कहिओ, रँधा ।”

“झी ! झी ! ओ नाज-शेवम पीरि गेन अछि ।”

“ओझी ! नाज-शेवम बहते केतअसँ ! ओ उँ अपन ज्ञातिओ-धवम श्रुत क२ लेल अछि ।”



तीस

गामरनाक नजबिमे हम पाखलाएक कगमे ए धवतीपव जन्म जेलौ। ठीक ओग मान पुर्तगानी सबकाव गामर पुनिस-सृशेन छै जेनके। हमर रांग ओग सम्य गाम छोट्टा पशजी मेहव छनि गेना। हुनकव कप कहियो हमरा आथिक सोमला ले आरि सकन। लषणमे हम हुनका कहियो देखल बहिसनि की ले ? सेहो हमरा सवण ले अछि।

हमर माए शोनी, रासुरमे एकठा देरीक कगमे ए संभावमे आएन छेली। हुनकव र्पि तँ श्याम छेननि द्दम सुनवि छेली। एकदम सोएन देह। ओ प्रायः नान आकि हबिखव वंगक साङ्गी पहिले छेली आ माथपव सिनुवक छीका नगरे छेली। ए परिवारमे ओ एकदम सुनवि नछे छेली। एकदम सातेवी माए-सव। हमर जन्म एकादशी दिन भेन छन, ए जेन माए हमर नाँउ 'रिठु'न राखल छेली। ओग एकादशीक दिन सातेवी माएक मदिबमे बहाव भन् बहन छेली। ए धवतीक पाखरसँ रँगा'न गेन श्री रिठु'नक कारी प्रतिमा ओग दिन ओग मदिबमे स्थापित कएन गेन बहे। ओ रात हमर माए रँतोल छेली। ओ अणव मधुव अराजसँ हमरा 'रिठु' कहि रँजरे छेली।

कार्यो प्रधासकेँ पशजी मेहव छनि गेना पछाति हमर माएक हावति आरि सविगहूँ रँहूत खवाप हूअ नागन छन। सोसै गाम ओकवा मदिबक दसरीक सदृश देखेत बहे जखनि कि ओ एकठा पतिव्रता नावी छेली। गामहिये एकठा ब्रह्मणक घबमे लोवीक काज क२ क२ ओगसँ प्राप्ति मजुवीसँ ओ हमर पानष-सोषण केल छेली।

दादी अणव रँष्टा गोरिन्दक संग हमरो युन तेजए नागन। ओग दिससँ हम आ गोरिन्द दुनु गोष्टे खाम मीत रँनि गेलौ। रिशानयक प्ररेशे-पशजीमे शिक्षक हमर नाँउ पाखला निख देननि। अही नाँउसँ हम ओग रिशानयमे मराठी माध्यामसँ चरिमि कक्षा धरि पठ गेलौ। हाजुरी दैत कान हमर ए नाँउपव हमरा कक्षाक आन-आन छत्र लोकनि हमर खुरँ मजाक उँरँए जे हमरा रँहूत खवाप नछे छन। प्ररेशे-पशजीमे हमर नाँउ पाखला निख देन गेन बहए अहो जेन हमरा रँहूत खवाप नछे छन।

गोरिन्द हमवासँ एक कक्षा आगु छन तेकव पशतोते हमरा ओकवासँ दोसती भन् गेन छन। हम ओकवा संगे मान-जान न२ क२ जंगन धरि जागत बही। जंगन जागत कान हमरा काँठ-रुमीक कोला डव ले होग छन। ओतए हम सत कषेवा-काष्ठा, टर्वा-टुर्वा (जंगली फल) खाग छेलौ। 'घुस-गे' राये घुस (गोरिक फेवमे खेनन जागरना एकठा खेनमे प्रयाङ्ग शेट्ट, जंगमे एहेन मायता छै जे ओ शेट्ट, राजवासँ कोला खाम लोकक देहमे कोला आमोक प्ररेशे भन् जेते।) शेट्ट, राजि क२ एक दोसवापव भा आरँए धरि कोसणा-रौन, गड्डाणी (गोरा फेवमे लषा सरँहक द्वावा खेनन जागरना एकठा खेन।) आदि खेलै छेलौ। आन-आन चवरोह सरँहक संग हमसँ चवरोह रँनि गेन छेलौ।

गोरिकेँ सुतँव होगसँ पहिलक रात छी। तखन हमर उँमेव षअ-दम रँर्थक बहन हेधत। गामक रँन पछन पुनिस-सृशेन एकरेव खेव चानु भन् गेन बहे। ओतए तेमेव नाँउक एकठा नर पुनिस प्रधासक निशुद्धि भेन छेली। ओ कहियो कान समह पशजीसँ गामक पुनिस सृशेन अरँत-जाग छन। ओ अणवा जेन ओतए एकठा धोवरी बाधि लल छन। ओकवा ओ अणवा संगे घोड 1-गाड 1पव घुसरेत बहे छन।

गामक रँगनरना जमीनक जेन दत्ता जशी आ सदा ब्रह्मणक रीट रँहूत दिससँ रिराद छेली। ओकवा सरँहक रीट मोकदमा छनि बहन छेली। दु-तीस मान रीति गेना पछागतो अखनि धरि केकरो पक्षमे हँसना ले भेन छेली। सदाकेँ एकठा हाडि सुमले। एकरेव ओ नर पुनिस प्रधास (तेमेवकेँ अणवा घव रँजा क२ खुरँ मनु-दाक खुँनक-पिँनक। ओग दिन ओकव नजबि ओकवा स्त्रीपव गेली। ओग स्रण ओ ओकवा प्रति आसङ्ग भन् गेन आ ओ जंग कक्षमे बहनि तंग दिस देखते बहि गेना। सदा प्रधाससँ रिशती केनक जे ओ मोकदमा ओकरे पक्षमे कवा दग। कनीकान टुप बहना पछाति प्रधास ओकवा हँ कहि देनके। शीतक कगमे ओ सदासँ ओकव स्त्री माँगि जेनके। सदाकेँ जमीनक जमीनक संगे-संग गामक सभसँ पेशे जमीन केगदी भँष्ट (फेव रिशेयक नाँउ) भेष्टैरना बहे।



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

चावि-पाँट दिन पञ्चाति प्रतगानीक विरोधमे काज करिक अतिशोगमे दत्ता ज्ञानीके तीतर क२ देन गेले । तेकर बाद ओकर की भेले तग संरक्षणमे केकरो कोला पता ले चलि सकन । कियो कहे जे दत्ता हबवार भ२ गेले त कियो कहे जे प्रधाष ओकरा मरि देनके ।

०७ दिन पञ्चातिसे सदाक घर नग सभ दिन एकठो गाडी नागए नगले । सदाक स्त्री सभ साँस नर-नर साडी पहिबए, नीक जकाँ अणन केशे-रिग्याम कबए, काजब, धुँकनी, पौडव आदि नगा अणन त्रिगाव कबए आ तेशेवक गाडीमे रैस जाए । तेशेवक गाडी सदाक रँगनापव धुवा उडरैत हूँव भ२ जाग ।

दोसब भोव ओ गाडी हुँका एतए पहुँचा दग । ओ गाडीक पछिना सीठपव जेठन बहे छेली । हुँकव केशे आ छोटी सभ उँजबन-उँतबन बहे, आँखिक काजब नाक आ गानपव जेठवाएन बहे छेली ।

सोकदमाक हँसना सदा जमीदावक पक्षमे भ२ गेन छेली ए जेन ओ सल्लावायण भगराणक पुजा करैले सोचनक । पुजामे अरैले ओ भवि गामक लोकके हकार देनके । सदा ओ ओकर स्त्री पुजापव रैस चूकन छेली । तखल प्रधाष तेशेव अणन गाडी न२ क२ ओतए आरि गेन । ओ पुजापव रैसनि सदाक स्त्रीके उँठा जेनक । पुजामे आएन सभ लोकके ए घटनासे रँडु आश्चर्य भेले । केगदी दाम-रौसक कागत-गतव सदाके खन्हेत ओ ओकरा स्त्रीके न२ क२ आगु रँडन, तखल सदाक जेठ भए ओकरा लोकके प्रधाष केनके । तेशेव ओकरापव रँडुकसे निमान मरि जेनके आ आरि गोनी दाँलेए रँगा बहे की सदा ओकरा लोक देनके । तेशेव अणन रँडुक मिटा क२ जेनक । तेकरा पश्चात् ओ जनुके एक दिन धकलैत ओकरा स्त्रीक हाथ पकडि आगु रँडि गेन । एपव सदा अणना स्त्रीसे कहनके-

“ओकरा रँग एना जाए क२ अहाँ हमर नाक कठएर की ?”

३ सुनि सदाक स्त्री अणन दूँह चमकलैत रँजनी-

“अहाँके नाको अछि की ? जँ अहाँके नाके चली त हे ३ निअ...”

एते कहि ओ अणन नाकक नथिया निकलि सदाक पव नग धवतीपव हँकि देनके आ प्रधाष तेशेवक रँग चलि देनक ।

तेसरे दिन प्रधाष ओकरा न२ क२ प्रतगान चलि गेन ।

प्रधाष तेशेवके प्रतगान जागसे ठीक एकदिन पहिलक गग डी । वातिक नगभग दू रा तीन रँजेत हेते । कियो हमरा घबक केराड खोनि घब घुमि गेन । हमर माए कम कएन नानठेसक गजोतके कनी तेज केनक । देखलौ तँ एकठो अणतआव लोक ! ओ रँजन-

“रँहिन हमरा केतो घुका दिअ, हमरा पाडु हिवगी पुलिस नागन अछि । एकरेव जँ हम ओग पुलिस प्रधाष तेशेवक हाथ आरि गेलौ तँ ओ हमर जाण न२ जेत । हम ज़रित ले रँटि सकर ।”

एतरेमे दुबसे अरैत जूताक धुनिसे रँमाग जे कियो आरि बहन छे । हमर माए ओकरा ओठरैले अणन साडी देनके आ ओ साडी ओठ । क२ ओकरा हमरे नग सूता देनके । किछए डनक पश्चात् घबमे गजोत देधि प्रधाष तेशेव हमरा घबमे घुमि गेन । हमर माए रँहूत डरि गेली । तेशेव सौसे घबक तनाशी न२ जेनके आ ओतए के सुतन छे ? ओकरा संरक्षणमे पछए नागन-हमर माए डरैत-डरैत रँजनी-

“ओ हमर रँ-रँ-रँहिन थिकीह... साहेर ।”

एते सुनि ओ लोकनि चलि गेन ।

०७ वाति ओ अणतआव लोक हमरे ओगठास ठहवन आ भोव होगते ओ चलि गेन । ओ अणन नाँठ वामनाथ कहल डन आ ओ गोरोक सुतवता संधामे भग लल डन । ओ आ ओकर दूठी रँगी, गामक पुलिस-सुशेनके उँडरैले आएन डन । ओकरा रँगीके तँ हिवगी पकडि लेल छेली दूदा एकरा पकडले ओ सभ एकर पडोव क२ बहन छेली । ओ डाँगामागठ नगा क२ पुलिस-सुशेन उँड । देनके । भोव होगते ३ खरिबि गाम आ आस-गामक गनाकामे पसरि गेली ।

३ तग दिनक गग डी जखनि गोराले दूडि भेठन छेली । ०७ दिन दूठी रँडका धमाका सुनन गेन छेली । ३ धमाका रँसक छेली, ३ रात लोकके पञ्चाति पता नगले । उँजगार आ रँगाडुवी गामक



दूनु पुन उँड । देन गेन बहे । भावतीय सेनाकेँ गोरासे थरने कलेसँ बोकेने ओ पुर्तगाली गिनिट्टी द्वारा तोड़न गेन छेले । ओ के आ किएक तोड़ल छन, पहिले ए रातक पता केकरो ले छनि सकले । दूगहबमे गामक आसमासमे एकठो हरागजनाज उँडत बहे । ओग हरागजनाजसँ पवटा मभ गिवाँन जा बहन छेले जे हरामे उँडि गायग छन । ओग पवटा मभकेँ बूठेने हम मभ रँटा लोकनि रँहुत दुब धरि दोगेलो । हमरो एकठो पवटा भेठन, जेकवा न२ क२ हम दादीक ओतए पँहुँटेलो । पवटा पुर्तगालीमे निखन बहे जेकवा दादी हमरा मभकेँ अगल भायामे सुनरौत बहथि-

“ओ गडियन मनेठवीक पत्रक छे । ओ कहल छथि- अहाँ मभ डवरँ ले, अहाँ मरँहक जिणगीकेँ कोला खतरा ले अछि । अहाँ मभ पुर्तगाली बाजसँ दूडू भ२ गेन छी ।”

ओग दिन हमरा गिन्यानमे डुप्ली छन । कादोने गाममे उँसरक माहोन बहे । किछ लोक लोक अयस्क रॉर्ड (मानरौहक जनाज) सँ पाजी गेन छन । गोराकेँ दूडू भेठनाक किछु दिन रौद गोबिन्दक दादी हमरा घब अएन छना । “भावत सबकाव रँहुत बाम पाखनेकेँ पकडि ओकवा जनाजमे रँसमा पुर्तगाल भेज देल अछि ।”

हमरा माएकेँ ओ खरँबि रहल देननि । रँमाएन जे ए खरँबिसँ ओ किछ हतथत भेली, दूदा ओ दुप आ गुमसुम बहनी । हमर रौबुजी कार्मो टिफ, जे पाजी शेरबमे छना, हुनको ओग जनाजसँ भेज देन गेन छेननि, ए लेन माएकेँ दुःख भेलनि की ? से हम रँमि ले सकलौ । दूदा रौदमे हुनका आथिमे लाव आरि गेन छेननि ।

• हम रौबह-तेबह रँथक बहन हएँ, तखल हमर माए मरि गेली ।

रँबथाक मोमिा बहे । केतेको दिससँ दिस-बाति नगाताव रँबथा भ२ बहन छेले । नदीक रौट्टा क पाणि गाम धरि पँहुँट गेन बहे । गामक केनराय मदिबक टाक दिस रौट्टा क पाणि आरि गेन बहे । ओग रौट्टा मे पाँछी गव थमि पड़न छेले । मान-जान आ गोहान मभ रौट्टा मे भासि गेन बहे ।

हमर घब सीमासक रौहव पहाडीक कोणमे कनी डूँटगव सुनपव छन । अथनि धरि रौट्टा सँ घबकेँ कोला डति ले भेन छेले दूदा नगाताव होगत रँबथा आ हरक कावषेँ हमरो घब ओग दिस थमि पड़न । घबक एकठो टाव कर्व-कर्वक अरौजक मंग धूँष्ट क२ थमि पड़न । हम जथनि सुतन बली तखल ओ हमरापव गिवन । हम आ हमर माए दूनु गोठे मरि जेतो । हमर माए हमरा रँटरौले दोग क२ एनी जेकवा कावषेँ हुनका माथमे रँहुत छेँट नासि गेननि । पहिले तँ हुनका माथपव कोरो धूँष्ट क२ गिवन आ पडाति जाए क२ पूरा टाले हुनका माथपव थमि पड़ननि । ओ रँहोशि भ२ गेली । हम हुनका दूहपव पासिक डुप्ली देनिसनि तखल हुनका छेत एननि । हम रँटि गेलो आ हमरा छेँट ले नागन, ओ जनि ओ रँहुत खुशि भेली । रौदमे हमरा अगल कोवामे न२ क२ खुँ काणए नगनी । जथनि ओ हमरा कोवा लले छेली तखल हमरा हाथमे हुनक छेँटसँ निकनन खुल नागन । देखलौ तँ हुनका माथमे छेँट नागन छेननि । हुनक माथ काट जकाँ फुँष्ट गेन बहनि । हम जोबसँ टिचियेलो, दूदा माए हमरा दुप बहरौक गशिवा केनथि । हमर टिचियाएँ सुनि ए रँबथाक बातिमे कियो आरिस रँना ले छन । हुनकव कलगासुमाव हम हुनका नजेणीक पात पासि क२ हुनका माथपव नगा देनिसनि । किछु कान पडाति हुनका माथसँ खुल रँहरँ रँल भ२ गेननि ।

घबक रँटनाहा हिम्माकेँ हम मोगव नगेलो । हरा रँहिते बहे आ ककि-ककि क२ रँबथा सेहो भ२ बहन छेले । मगे हरा घबक रँटनाहा हिम्माकेँ लोचल जा बहन छन । दुपपडक रीट दल पाणि आरि बहन छेले । घबमे कल्लिको सुखन जगह ले छेले ।

माएकेँ रँहुत छेँट नागन छेननि तँ ओ दवदसँ अरँहि भेली आ रीट-रीटमे अगल ठँगि हिन बहन छेली । दीप जवा हम हुनका सिवमा नग रँस गेलो । दीप हरक कावषेँ रीट-रीटमे रँता जाग छेले जेकवा हम हएबसँ जवरँत बली । अरँह आ रँबथा ओरो तेज भ२ गेन बहे । हम पाणि गवम क२ क२ माएकेँ शिओनिसनि । छेँटक दवदक कावषेँ ओ भरि बाति फहरँत बहनी । बाति तीजनापव हुनका रौखाव आरि गेननि आ से रँटति ते गेन । “भोव होगत हमे डाकदवकेँ रँजा अरँसि ।”



हम मोच्यौ। दूदा बाति कष्टते ल वरुह।

दोसव दिस, तोरे-तोरे गोरिन्दक दान्दी डागदवकेँ रँजा अणननि। डागदव हुनका स्वग्या-दरौंग देनथि, दूदा कोला नाभ ले भेन।

ओ रीट-रीटमे आँधि खोजे छेनी। हुनक सोसे देह उँकर भन्ने गेन बहनि आ आँधि तीतव दिस घीचन जा बहन छन। हुनक हाथ-पएव काँपि बहन छेननि। ओ हमरा अणना नग रँसिक गशिवा केननि। ओ हमरा किछ कहए चाँहे छेनी से तँ हम रूमि गेलौ दूदा ओ किछ रँजि ले सकनी।

ओग दिस हुनक रौंखाव रँहूत रँट्टा गेन बहनि। हुनक आँधि रँन हूअ नागन बहए। रौंखावसँ ओ काँपि बहन छेनी। बादमे हुनका गवसँ घब-घबक अरौज भेन ओ ओग अरौजक सँगे, जेतए स्वतन छेनी तेतए किछए पनमे सब किछ शीत भन्ने गेन। ओ हमरा जोडा कइ छनि गेली। हमरा अणनाथ कइ कइ छनि गेली।

दान्दी अमगले आँधि कइ अँतिम सँकारक तैयारी कवए नगना। शैलपेमे बँह रँना ममा धरि केँ खरँधि दगरँना हमरा कियो ल भेटैन। रँवखा रँहूत जेव-जेवसँ भन्ने बहन छेली। गाममे आँधन रँट्टा क पाँधि अँधि धरि सँकन ले छेली।

शुशौन घाँपव दान्दी अमगले चितापव नकड़ि बाँधेत जा बहन छना आ हम हुनक सँग दइ बहन छनि। हमर माँक अँतिम यात्रामे दान्दीक अनाँरे आन कियो ल आँधन बहए। अणनाव-दूनाव भन्ने गेनापव चिता रँनि कइ तैयार भेली। हम माँक नहनि केँ चितापव चट्टा कइ अणना हारँ आँधि देनि। दूदा चितामे आँधि ल नली। एक तँ तीतले नकड़ि आ तैपवसँ रँवखा रँसित। दान्दी रँहूत प्रणाम केननि, दूदा रँवखा आ तेज हराक कावसँ चिताकेँ धारो धरि ल नाँधि सकली। अँधवतिया भन्ने गेन बँह आ हम दूनु गोष्ठी अँधि धरि शुशौन घाँपमे छेलौ। चिताकेँ आँधि नगेरौक प्रणाममे दान्दी थानि चूकन छना। जँधि कोला उँगाए ले चनननि तँ चूपाप काम करै रँना दान्दी किछ कानक ले ठाँठ बहना आ रँजना-

“रँड ! अहाँक हाँधे अहाँक माँक चिताकेँ आँधि ले नाँधि बहन अँधि ? आँ की उँगाए ? ”

“आँ कोला तवहँ ए नहनि केँ माँपमे गावए पड़त ! ” एते कहि ओ कोदविसँ माँप खोदरँ शुक कइ देननि।

हुनकव रँत सुनि हम मोचए नगलौ- “हँ, हम ठँहवलौ भागनीन पाखनो ! पाखनक रँशिज डी, ए जेन हमरा हारँ माँक चिताकेँ आँधि ले नाँधि बहन अँधि। हमरा पाखनो ले होगक चाली। हमर अँ पाखनपन हमरा मोनकेँ चेट पँटा बहन छन। आँग ए पाखनपनक एहसाम हमरासँ सहन ले भन्ने बहन छन। ”

एक आँदमीक नयती रँवरँधि एकठो खदहा खूनन गेन।

“माँप दगसँ पहिले अणन माँकेँ प्रणाम करिसु। ”

दान्दीक एते कहना पछाँति हम होशिये एलौ आ दूनु हाँधे जोडा माँकेँ प्रणाम केलौ।

किछए दिसमे हम पाखनोसँ खनासी रँनि गेलौ। जँग कार्वेपव गोरिन्दक दान्दी डाँगरव छना ओग कार्वेपव ओ हमरा खनासीक कगमे बाँधि जेननि। हमर काँज छन यात्री सरँहक मयाण उँपव चट्टाएँ आ उँतावरँ। रँजावक दिस तँ कार्वेवमे रँहूत तीड-ताड बँह छेली। कार्वेवक तीतव यात्री लोकिनि, तँ उँपव केवक घोव, कँहव, अणनास मग रँहूतो वाम टीज होग छन। कार्वेव रँनु हकमेत-हकमेत सडकपव चट्टे-उँतले छन। दूदा जाँधनि हम खनासी बहलौ ताँधनि कार्वेवकेँ किछ ले रिगडले आ ल तँ हम एकठो पँप चूकए देनि।

रँस माँकिकक भाय यात्री लोकिनिसँ पाँग ओसले छन। ओ रँहूत ठँसकमे घुँमे छन, दूदा बाँधि होगते ओकव सँकथी केकड़ि खतम भन्ने जाँग छन। घब पँहँचना पछाँति ओ पारनुक ओगठाम जाँए कइ भवि दय शिवारँ पीरि नग छन। एकदिस ओ हमरा शिवारँ आँलेन कहननि। हम हुनका शिवारँ तँ आँधि देनिनि दूदा दान्दी हमरा देख जेनथि आ रँहूत डँप-हँपकाव केनथि। “आँ हँव कहियो शिवारँ आँधन ले जाँएँ। ” एते कहैत ओ हमरा गामक केनरीय देरीक किरिया देनथि। एकठो आँधन एहल मग



सबका... एकरेव लोलेजक मैकेनिक नाडु आ हम कारेव धोखले बानीपव गेलौ। हमसभ गाडीक पीतबिया चदवाकेँ गनायाट्रसँ बगडा-बगडा साफ केलेौ। गाडी धुँकान हमसभ पासिसँ तीज गेन छेलौ। सौमे देह जाडसँ काँपव नागन छन, ए जेन नाडु एकठा रीडी स्रगगा अगना ठोवमे दरनक आ गाडी धुँखव नगन। ओ एकठा रीडी हमरो देनक। हमसँ रीडी स्रगगेलौ आ पीरए नगेलौ। एतरेमे दादी ओतए पहुँच गेना आ हमरा रीडी पीरैत देखि जेनथि। ओ हमरापव रँहूत गोष्मा भेना आ सँगे ओग गोष्मामे हमरापव कएक थापडु यावि रैसनथि। हम काषव नगेलौ। हम हूकव पएव पकडनिथि, माँथी माँगनिथि, दूद ए सभसँ दादीक गोष्मा कम ले भेनथि। “आरँ जँ हएव अहाँ कहियो रीडी पीरौ तँ अहाँकेँ अगन माएक किविया।” ओ हमरा किविया देनथि।

हम जहियामँ खनासी रँगन छेलौ तहिसँ दादीक ओगठाम बहे छेलौ। हम आ गोरिन्द दूनु गोष्टे भागक सदृमे भ२ गेन छेलौ। गोरिन्द हमरामँ रैसी रँगियाव आ चनाक छन, सँगे तन्नूतानी आ आसिक सेने। हमर माए जहियामँ हमरा छोडा क२ गेन बहथि तहिसँ हम प्रायः कालेत बहे छेलौ। एहेन स्थितिमे लणा बहियो गोरिन्द हमरा सममरैत-रूमरैत बहे छन। ओ कहे छन, “अहाँकेँ पता अछि! जखनि हमर तामु गाए रँचा देल छेली तँ ओहो चरिआ मामक भीतव मवि गेन छेली, तखन हूकवा रौडाकेँ के देखल बहे? ओग समेक छोठे रौडा आग रँडका रँवद रँगि गेन छे। पाथन्या! ...यो पाथन्या! कानु जूनि! अहाँकेँ देखि हमरो कण्ठी आरि जागव।”

हमर आजी सेने पछिले सान भगरानक घब गेन छेली। ओ कहे छेली, “सभ्ठा जन्म नगरैना प्राणीकेँ एकदिन मवग पड’ छे, एकवा जेन लोककेँ दुख ले करैक चली।”

ए सभ स्रनि हमर काषरँ रँग होग छन। हम ओकव भाषण सुनेत जा बहन छेलौ आ ओ कोला तन्नूतानी जकाँ रँजिते जाग छन...

“मखन जन्मक सँग मूँ सेने अगना सँगे आनल अछि। जन्मकानमे ओ लणा बहए, लणसँ ओ जूखन भ२ जागत अछि, जूखनसँ रूठ आ हएव जन्मक आथिरी आ अंतिम अरन्धामे मखनकेँ मूँ भेठे छे। अरन्धक ए चढसँ हनेक प्राणीकेँ गजबगव पड’ छे। जेतए-जेतए प्राणी छे ओतए-ओतए मूँ पसवन छे। चाहे धवती हूँख, जन हूँख आकि अकाम, सभठाम मूँ निश्चित अछि।”

जखनि हम हूकवासँ पुछिथनि, “अहाँ ए सभ केतए सीखेलौ? ए सभ अहाँ कितरँमे पढल छी की?” तखन ओ ज्वरारँ दिखव, “हमरा ए सभ रिणे आजी रँतरै छेली।”

एकरेव हएव माएक यादि अरिंते हमरा आँथिमे लोव आरि गेन आ हमरा समझहि हमरा छोडा क२ गेन हमर माएक मुति हमरा सोममे ठाठ भ२ गेन। बायाया, महाभावत आ आण-आण कथा-पिहानी स्रगारैरानी..., हमरा मवगिया थोआकेँ सैय करैरानी..., हम रँटि गेलौ ए खुशीमे हमरा अगन छतीसँ नगरैरानी हमर माए..., अगना आँथिक सोममे देखन गेन हूक मूँ, हूक नहनि, ए सभ्ठा हमरा यादि आरि गेन। आँथिमे आएन लोव पौछि हम हूकवा प्राय केनिथि।

•



छवि

गोरिनन्द जग रबथ पञ्जीमे लोकवीपव नागन, पाखलौ ओग रबथ लौह अयस्क खदमपव त्रैक ड्रागव रनि गेन । ओकव काज देधि क२ माजे भविक भौतव कम्पनी ओकव लोकवी पक्की क२ देनके । ओकवा छवि सौ पचास कपेआ दक्काहा भेटैत वहे आ एकव अनारेँ ओरकौगम सेहो । ओकव खेणाग-पीणाग होठनमे होग छेले आ ओ केतौ सुति जाग छन ।

पाखलौ आ आजेस दूनु अणन पएवक तरेँ दुतिकेँ मसारेत नदानक लौनेज नग जा बहन छन । काहि अणन गेन लौह अयस्क दुर्गक ठेव देधि क२ ओ रहुत अचबजमे पडि गेन । ओ दूनु लौनेज पहुँचन । त्रैक सृष्टि क२ धुवाक मेघकेँ पाछु छोटत ओ लोकनि त्रैक तेजस रँठनके ।

साममे पाखलौ आ आजेस अणन-अणन त्रैक आनि लौनेज नग नगा देनक । कक्का हिसारेँ आग एक खेप रेंसी नगेनक । आग दूनु रहुत रेंसी प्रसन्न देखेमे आरि बहन छन । पाखलौ अणना देहपव एक गजवि देनक । ओ धुवासँ माणन बुँमाग छन । ओकव कपड । पूर्ण कपसँ धुवामे माणन वहे । माथक केश, मोड आ सौसे देह धुवासँ माणन वहे । ओ हाथ-पएव धुँले आजेसक रंग नन दिन छनि देनक ।

मनपव जमा भेन सतठी मज्जूवणी पाखलोक मजाक उँडरँ नगनी । एकठी मज्जूवणी अणन एकठी छोट सन एना निकानि पाखलोक ओकव अणन कप देखेले देनके । ओ एना जेनक, ओगमे अणन अजरीर कप देखि हँसए नगन । ओकवा बुँमेले जे ओ ननका झूँह रँगा रँभवरी छै ।

“पाखला, रंगनरँगा मीनमे जेना धुवा जमे छै तहिना तौवो देहपव जमान छन ।” एकठी मज्जूवणी पाखलोक पएवसँ माथ धरि देखेत कहनके ।

“ओ तँ धुवेक मिनपव लोकवी करै छै ।”

एकठी दोसव मज्जूवणी ओकव मजाक केनके । अ सुनि सतठी मज्जूवणी हँसए नगनी । ओकवा रंग पाखलौ सेहो हँसए नगन ।

“ओ धुवासँ तवन अछि ए जेन अहँसत ओकवापव हँसि बहन छी ?” आजेस मज्जूवणीसँ प्रछनके...;

“महना पछाति ओकवा देखि जेरै, ओ मेरँ सन नान आ एकदम हिलवंगी सन भ२ जाएत, जे देखि कोला राँग ओकवा अणन रेंसी दगले तैयाव भ२ जेते ।”

“आजेस, पाखलोक जेन अहाँ अणन जातिमे कोला कथा तकि दिगु”, पहिन मज्जूवणी कहनके ।

“...से कियेक ? ओकवा तँ कोला पाखलिल छानि । पाखला ! अहाँ अणना जेन निर्रँसँ एकठी पाखलिल न२ क२ आरि जएरँ ।”

ए रातपव सत कियो हँसए नगन हँस पाखलोक भौह तनि गेन ।

“ओ... हो... एकव मामाक रेंसी छै न ?” रीछेमे सबा आरि गेनासँ दोसव मज्जूवणी पहिनसँ राजनि ।

“एकव मामा सोनु पवसुध शैलपेसँ गाम आएन छै । ओकव रेंसी रिखाहि जोग भ२ गेन छै ।”

“मी... अ तँ पाखलौ छै न ?”

“पाखलौसँ ओकव रिखाह... ? मी...” पहिन मज्जूवणीक अणन डाँडपव राँहन तौनिया सारैत कहनक ।

ओकव अ कहरँ सुनि सत कियो दुग भ२ गेन । पाखलोक रहुत खवाप नगले आ ओकव भौह तनि गेले ।

महा-गो क२ ओ लोकनि मिचाँ उँतव नगन । उँतरेत काज आजेस सीठी रँजा बहन छन आ पाखलौ दुपटाप छनि बहन छन । ओग मीनक स्थितिमे ओकवा अणन मामा, सोनुक पछिना राँत सत सबा आरि गेले ।

सोनुक रिखाहमे पाखलोक माए, ओकवा कोवामे न२ क२ गेन छेनी । रिखाहसँ ठीक दू दिन पहिल, सोनु अणन रिखाहक खरँवि अणन रँहिनकेँ देले छेले । ओ रिखाहमे कोला रिष-रँरहाव करेले तैयाव ले बहथि, हँदा सोनुक जिदक कावणै ओकवा मणए पडले ।

सोनुक दुनियाँ केरन दू रँवथ धरि छनि सकन । ओकवा एकठी रेंसी भेले हँदा तेसले रँवथ ओकव घवणी ओकवा सदाक जेन छोटि क२ छनि गेली ।



पाखलो एकठा सैय सँसि ज़ोडनक । उनासँ सिचाँ उतरोत ओकव पएव नडखड । ज़ेले ।

आजस आ पाखलो नदीक कडेव रैना होठन पहुँच गेल । आन दिन जकाँ ओ सब होठनक तीव्र जागले अपन-अपन माथ सिचाँ मुकौनक । पाखलो चाह पीरि लेनक दूदा ओकरा दिमागसँ अथनि धरि ओग रातक निशाँ ले उतवन छेले । आजस ओतए जमा भेल सिचि सभसँ गप कएव नगन ।

पाखलो होठनसँ राहव निकलन आ खेत दिस खूनन पेड । राँठे चलय नागन । ओ रँहूत दूधी अछि, एहेन ओकरा चेरवासँ रूमाग छेले । मज्जुवणी सभ द्वावा कएन गेल गपक नह ओकर कनेजके लोचल-हावल जा बहन छेले ।

“मी... ३ तँ पाखलो छे ल ? ”

“पाखलसँ ओकर रिखाह... ? मी...”

३ अरौज मंगुथी सवणाक पाणि क डून, ल कि कपड ।-नता थोरौ आ पाणि भरोले अरौरानी कथा आ म्नीगणक रँजराँक । आग पाखलो कणी देवीसँ आएन बहए । ओ किछ अचमक सभ नलो डून । ओ सवणासँ गाम दिस जागरैना लोकपेडा या दिस देखनक । ओग लोकपेडा याक राँठे अहकिया गाममे पएव बखल डून ।

ओ अपन देहसँ कपड । उतावनक आ मंगुथक गाडक जडाँ मे बाथि देनक । ओ सवणाक कडेवमे रँस गेल । रँहूत पाणिमे ओ अपन पएव खूनन जोडाँ देनक । ओकरा जाड नगले । ओ जाड ओकरा नसमे समा गेले । ओ अपन आँथिक पिपनी रँस कइ लेनक । दुपहवमे धुवापव छेले जे पएव डुक-डुक पाकिंत बहे ओग पएवकेँ अथनि जाड नागि बहन छेले । ३ सोचि पाखलो एकठा नमहव सँसि ज़ोडनक आ आँथि रँस कइ लेनक । ओ प्रायः आरि कइ पहिल अपन पएव ठँअ पाणिमे डुमरैत बहए । अथनि सभँ कथा आ म्नीगण पाणि भरि कइ छनि जाग, तखल ओ नहरेँ डून आ अपन कपड ।-नता धुँ डून ।

ओ पाणिमे डुमकी नगौनक । डुपाकक अरौज भेले ३ लेन ओ अपन माथ उठौनक तँ देखनक जे शीमा हँसि बहन छेनी । ओहो हँसन । शीमा सवणाक डुँपवका धावपव अपन सैन भवए नगनी ।

“आग पाणि भवरौमे देवी किएक भेल ? ” गूडरँसि, पाखलो सोचनक । दूदा ओ चूप बहन । शीमा सैन अपना डौँपव बखनक आ छेठकी सैन अपना हाथमे बाथि छनि देनी । नजरिसँ दूव होगत धरि पाखलो ओकरा देखते बहि गेल ।

ओ होसिमे आएन । की शीमा पाणिमे पाखव हफकल छेनी ? ओ सोचए नागन, हँ, ओकर एक मोष कह छेले जे “ओ आएन छेनी आ हमरा सचेत करैले ओ पाखव हफकल छेनी । ओकर दोसव मोष कह ले, ओ पाखव मावए एहेन काज ले कइ सकैए । भइ सकै छे डुँपवका मंगुथ सिचाँ गिवन होगक । ”

ओ ३ सोचते डून ताधरि एकठा मंगुथ पाणिमे गिवले । पाखलो ओ नान मंगुथ उठौनक । ओकरा हफडनक । हफडना गडाँति ओ ओग खँसिणी मंगुथकेँ अपना दूँहमे लेनक । खागत कान ओकरा एकठा हँसना यादि एले । ३ हँसनाक रँहूतो रँवख भइ गेल बहे । जंगनमे काजू आ कण खागत-खागत गोरिन्द आ ओ ३ सवणापव आएन डून । मंगुथी सवणाक मंगुथ रँहूत पाकि गेल छेले । पाखलो आ गोरिन्द ओग मंगुथपव पाखव मावए नगन । ओग समए शीमा सवणापव आरि बहन छेनी, ३ गोरिन्द देखनक आ देखते अपना हाथसँ पाखव हफकि देनक आ पाखलसँ कहनके-

“पाखला, हाथसँ पाखव हफकि दिओ, रिचा ममाक शीमा आरि बहन छथि । ”

“किएक ? ” पाखलो गूडनके ।

“सो, मंगुथी सवणाक जगह ओकरे छे ल, हमसभ जे मंगुथ मँसहि बहन छी ३ राँत जँ ओकरा राँवुकेँ पता नागि गेलनि तँ मे नीक गप ले होयत । ओ गारिओ देता आ मावरो कवता । गोरिन्दक कहना पडाँगतो पाखलो अपना हाथसँ पाखव ले हफनक । ओ नगाताव मँसहते बहन । गोरिन्दक लोकनाक पशते ओ ककन । तारैत शीमा ओतए आरि गेली । ओ नान वंगक पाकन मंगुथकेँ देखनक । ओकरा



मंग्रथ खेरौक मोष भेले । ओने पाखव मावि-मावि मंग्रथ सखाव नगनी । ओकव दु-तीन पाखवसँ एकठा पातो ले गिवले । पाखलो आ गोरिन्द दूनु हँसए नगन । ओ नज्जा गेली । ओकरे आषन पाखवसँ पाखलो मंग्रथ मर्यादा नागन । जल्दीए ओ पाखव ओते हेलिकि मंग्रथक गाढपव चट्टि गेन आ मंग्रथक गाढक डारिके हिनारैए नागन । मंग्रथ सभ ठरै-ठरै कइ गिवए नगले । छिष्टी आलैले शोमा घब चलि गेली । दूदा आषम अरैत कान ओकरा सँगे ओकरा रौरुजी सेहो आरि गेला । धवतीपव पसवन काट मंग्रथ देखि कइ ओ पाखलोकै ओकरा माए आ ओकरा ज्ञाति नगा कइ पारि देनके ।

तेकरा रौदसँ जखनि कहियो शोमा ओकरा रौठमे भेटैक ओ अपन माथ सूका कइ चलि जाग छेली ।

जग दिससँ पाखलो डागरव भेन छन तग दिससँ ओ मंग्रथी सवणापव नहागले अरै छन । पाखलोकै देखि शोमा कहिओ-कहिओ हँसि दग छेली । शोमाक यौरणक भाव देखि कइ ओकरा मोषमे उमंग आरि जाग छेले । एकदिस तँ शोमा ओकरा आ गोरिन्दक हान-सगाटाव सेहो प्छल छेली । तग दिस, ओ प्रायः पाखलोकै देखि कइ हँसि छेली आ पाखलोक मोषमे ओकरा प्रति नरै अरुव पनकी दइ बहन छेले ।

पाखलोकसँ ज खरैवि सुनि, गोरिन्द पाखलोक खुरै मज्जाक उड लोक ।

“पाखला, हुनकव सुतार रँहूत नीक छुनि । ओ कनी कावी अरुसुस छुनि दूदा देखेमे नीक छुनि । अहाँक जोड़ि खुरै जूँटत ।” ज रात पाखलोक मोषमे घुमेत बहे आ ओ नहरैत कान अषणा-आषमे ओ उषण महसुस करै छन ।

दोसव दिस बरि बहे । पाखलो घुमरौक नाथे राहव निकनन । रौठ चलेत-चलेत ओ मंग्रथ सवणा नग प्छूट गेन । सवणाक शीतन पानिसँ ओ एक आँजूव पानि पीरि जेनक आ नगीटक आषक गाढ दिस चलि देनक । ओग आष गाढक नमहव जर्डी उंगव धरि आरि गेन बहे आ कोला लना जकाँ अषण फला उंगव कइ धवतीपव पसरि गेन बहे । पाखलो एकठा जर्डी पव रैस गेन आ प्रपतिक सौंदर्य देखए नागन ।

आग टेत मासक पूर्णिमा छेले । गामक लोक सभ सातेवी मदिब नग रसत पूजा करैरना बहे दूदा तगसँ पहिल प्रपति फुन आ फन सरहक मर्यादा नगा कइ रसत मृतक स्वागत कइ टुकन छेले । आषक गाढक अजोह आष सभ गेष्टपगवा पाकए नागन छेले । काजूक गाढपव नान आ पीअव काजू नागन बहे । हरिअव अजोह काजू सभ पकरौक रौठ जोहि बहन छन आ अखनि धरि डारिपव ह्यी सभ जोहि बहन छेले ।

शैले: शैले: रँसात सिहकए नगले । पाखलोकै नगले आरि ज प्राणदागी रँसात ए प्रपतिके नरै जाष दइ देते । गाढ रिबीछके पागन रँसा देते । रँसातक सिहकरक सँगे पाखलोक मोषमे सिटावक नहरि हिनकोव माव नगले । ज रँसात पछिम दिसक पहाडके पाव करैत, खेतक रीटोरैट धवतीके टिलेत नदीके पाव करैत पुरैरिया पहाड दिस उडलेत रिषा ककल आगु रँटि जाएत । ओ केतएसँ आएन हेते ? कोष ठाससँ आएन हेते ? ज कहरै ओतेक सवन ले अछि । ओ सभ ठास ज्रगा करैरना प्ररामी अछि ।

रँसातके अरिते धवती ओग रँसातमे बग उडलि ओकरा स्वागत केनक । रँसात धवतीक माथक चूना जेनके । गाढ सरहक आरिगण केनके । नतीसभके रँहिसँ पकडी काहपव बखनके आ हेलि मिटाँ बाधि देनके । फुन, फन आ पात सरहक चूना जेनके आ पूवा रँलेटामे सभके हाथसँ गशिवा करैत ओ आषम चलि गेन ।

पाखलोकै मोषमे भेले, “जे हमासँ रँसाते जकाँ ए गनाकामे घुमि-हिरि बहन अछि । हम अषण जनमे कानसँ ए गनाकामे बहि बहन छी । दूदा हम रँसात जकाँ आरि कइ चलि ले जाग छी अशित्त एतका निरामी भइ गेन छी । ए आष गाढक सदुनी हमरो जर्डी रँहूत तीतव धरि गेन अछि । ए माष्टिक रँनपव हम पौष भेजे, फुजेलो-फुजेलो । ए माष्टिक सखावमे पनन-रँठन पाखलो धिको हम ।”



साँस खतम भ२ क२ गोधुलि भ२ बहन छेलै । मंगुशी सबलापव पाणि भवि क२ कथा आ मनीगण घब ज्ञा बहन छेली । पाखलोक मिगण ओम्हव लै छेलै, अणितु आग शोमा पाणि भवैले लै आएन छेली, ए जेन ओकवा ज़रिणकेँ फाँसी नागि गेन बहे । हाड-मांसुसँ रँगन पाखलोकैँ एकठाँ फमावि कथासँ मिलाह भ२ गेन बहे आ ओ ओकवासँ रिखाह करैले मोटि बहन छन । जेकवा एक नज्जवि देधि लेनासँ ओकवा नम-नममे उँगण आरि ज्ञाग छेलै रएह शोमा आग सबलापव लै आएन छेली, तँ ए ओ अणषाकेँ मँद मलसुस करै छन ।

गोधुलि खतम होगपव बहे आ अणषव अणष पएव पमावि बहन छन । साँतेवी मँदिव नग पाखलोकैँ पेशीमेकक जगमग करैत गजोत देखा गज्जले । ओकवा आग हुँअए रँगा रमंत पुजाक सवा आरि गेलै । रमंत पुजा दिन साँतेवी माँक पावकी रँड धुमवासँ रँहव निकलै छै । ओ अणुतिमे आएन रमंत मृतुसँ छैँ करै छथि । ओग वाति ओ मँदिव आपस लै ज्ञाग छथि अणितु रँहव अणुतिक मंग बहे छथि । रमंत मृतुक दिन गामा भविक लोक भवि वाति उँसरेँ मलरैए । पुजाक जेन तँ शोमा अरमसँ ओती, तखनहँ हम हुँकामँ छैँ करै क२ जेरँ । पाखलो मोचनक । शोमासँ छैँ करैक रँहव ओकवा पुवा देहमे जेगि आरि गेलै, आ गामा दिस ज्ञागने ओ तीव्र पतिवँ चनए नागन ।

मंगुशी सबलापव सभ दिन जकाँ पाखलो आगओ अणष कपड । धुँ छन । वरि नगा क२ आग तीण दिन भ२ गेन बहे । गोरिन्द वरिँकेँ किएक लै एना ? ओ एएह मोटि बहन छन । एतरेँमे दुवसँ

“पाखला ! सौ पाखला ! ” गोरिन्द सन अरँज सुनरँमे आएन । ओ पाडु घुमि क२ देखनक । गोरिन्दकेँ देखते पाखलो तुवसु उँठन आ ओकवा दिस दोग क२ गेन । दुनु एक देसवासँ हाथ मिलावक । गोरिन्दक कनवा अणष हाथसँ हिनरैत पाखलो पुछनकेँ-

“अहाँ वरिँ दिन किएक लै एलौ ? ”

“की कही, हमवा अँहिसक मित्र लोकनि हमवा निकनिकपव न२ क२ छनि गेन छन । हम ज्ञाग रँगा लै बही, दूदा की कविँतौँ ओ सभ हमवा ज़रँवदुती न२ गेना । हमर मोष करैत बहए जे आरिँ क२ अहसँ छैँ करी । ” गोरिन्द अणष मोष थोनि देनक ।

“ज्ञाए दिअ, अखल मिनलौँ एएह की कमा अछि ?

“दनु पहिल अहाँ नहा लिअ”

गोरिन्दक कहनापव पाखलो सबलामे नहारैए नागन । गोरिन्दकेँ किछ कहँक उँसुकता बहनि । ओ अणषा हाथसँ पाणि निकलि पाखलोक देहपव छिँगी मवए नगन, पाखलो नेहो हुँकापव पाणि हकनक । ओगसँ गोरिन्दक कपड । नीक जकाँ तीजि गेलै । पाखलोकैँ कनी खवाप नगलै । ओ गोरिन्दसँ माहली माँगनक । गोरिन्द एकवा सभकेँ मजाकमे उँड । देनथि ।

पाखलो नहा क२ अणष देह पौछनक । अणष कपड । सुखरैले जावि देनके । रँदमे दुनु जोठेँ आमक ज़ड पव आरिँ रँस गेन । पाखलो गोरिन्दक अँथिमे देखनक । गोरिन्द किछ कहए छै छन, अ हुँका अँथिसँ पाखलोकैँ पता नागि गेन ।

“कोला नरँ समाचाव ? ” पाखलो पुछनकेँ ।

“समाचाव ? एकठाँ नरँ समाचाव अछि । ”

“कोष समाचाव ? ”

“हमवा जेन एकठाँ सरँण आएन अछि । ”

“अहाँक जेन सरँण ? केतअसँ ? केकव ? ” पाखलो एकक पछाति एक प्रश्न केनक ।

“अ सभ हम अहाँकेँ रँदमे कहँ । पहिल रँताँ, जे शोमा आग पाणि भवैले आएन छेली ? ”

“हँ... लै... अखनि धवि तँ लै । ” पाखलो मोटि क२ ज़रारँ देनक ।

“लै लै ? तखन तँ हमर अणुमण ठीके जेन । हम अहाँकेँ आव लै उँनमाएरँ । हमवा जेन रिगा आपाक दिससँ शोमाक जेन सरँण आएन अछि । हम ओकवा साह मला क२ देनिअ । ”

पाखलोकैँ रँतरैले आणन गेन बहस गोरिन्द थोनि देनक ।

“दूदा सरँणक जेन अहाँ मला किएक कहलौँ ? ” पाखलो हक प्रश्न केनक ।



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“एकव ज़रारि तै रँडु सवन छै यो ।” गोरिन्द रौज्ज-

“शामाक जोड़ि क जेन अहाँक प्रयोजन अछि हमर ले । अहाँकेँ सवण अछि, हम एकरेव अहाँकेँ कहल बनी “शामा आ अहाँक जोड़ि केहेन बहत ?” किछ कानक जेन दुनु गोठेँ चूप भऽ गेन ।

रौदमे गोरिन्द रौज्जए नगना-

“हम दुगहवकेँ घब गेन बनी । अना पढाति माए हमरा एँ सँरुधक रौदमे रँतेनि । हम साह मना कऽ देनिनि, दूदा किएक ? से ले रँतेनिनि ।”

“ले गोरिन्द, एँ सँरुधकेँ नकारि अहाँ नीक ले केरौ । अहाँ हमरा जेन राग कऽ बहन छी । ङ हमरा नीक ले नागि बहन अछि ।”

पाखला कहनक ।

“एहेन ले छै पाखला, अहाँ रँतेत ले छी । अहाँकेँ कियो ल अछि । आ शामा अहाँकेँ पसिन्न सेहो अछि । ओ अहाँकेँ भेटेँ जेती तै हमरा खुशी हेत ।”

“दूदा हमरा रँग...”

पाखला किछ कहैना बहनि ।

“ओ मभ रौदमे देखन जेते ।”

एते कहि गोरिन्द चूप भऽ गेन । पाखलाक मोष रिचलित भऽ गेलै, दूदा शामाक मभ सवण अखला ओकरा मोषमे महकेत बहे । शामा द्वारा गोरिन्दक जेन कएन गेन गुँढावि..., ओकर मीठ-मीठ रौनी..., हुन-मण ओकर हँसी... मभै ।

ओकरा दुनुकेँ देखि शामा सवणसँ रिना पागि भवेल आपस छनि ज़ाग छेली ।

तेकर रौद ओ शामासँ भेटेँ केनक आ “हमवासँ रिखाह कवर ?” पृढनके । शामा ओकरा “हँ” कहते ओकरासँ यह अपेक्षा छेलै पाखलाकेँ, दूदा ओ रौज्जनि, “ले अहाँ पाखला थिकौ ! ” पाखला शामाकेँ किछ कहते दूह खोन ले छन आकि ओ ओतसँ छनि देनी । पाखलाक मोष तै रँनु जे नागहनीसँ भवन बेगिस्तानक सदुनी भऽ गेलै ।

•



पाँच

शैतलक हेष्ठेनमे बातिक भोजन कएना पढाति हम दीनाक घब दिस छनि देलौ। आंग रूत काज केल बनी तंगले सौंसे देहमे दबद छन। भुगसाँव पडि ते हमरा निल आरि जाएत, एहेन रूमांग छन।

बाँसक पण्डुराक देवी षड्-षड् रसात सिहक नागन। अहा!केलेन शीतन रसात छै। रसात नगि ते देहमे हविश्वी आरि गेन। बाँसक एक दिस खेत-पथाव आ दोसव दिस माँडरी नदी लौहि छेले। रंगनक नाविकेनक गाढसँ अरौज आरि बहन छेले। टाक दिस अहावे-अहाव छेले। ए अहवियामे जाण आरि गेन बहे। अहावमे ङुगव भगजोगणी त्रकत्रक करे छेले। नदीक कावी पानिमे माँड सभ उछलेत बहे आ ओकव नहवि भगजोगिनिई जकाँ दीप्यामण भ२ बहन छेले।

बाँसक रीचमे मुनप्रकय (त्रागदेवता)क मदिब बुकएन बहे। ओ मदिब एकदम धुँष्ट गेन बहे। मदिबक ङुगव चाव लै छेले। मदिबक टाक कातक देरान सभमेसँ आंगुक देरान तँ एकदम धुँष्ट गेन बहे। बाँकी तीनु देरानपव सिन्हाव, रँव, अशुँपी सन पौघ-पौघ गाँड सभ जगनि गेन छेले। गोरिन्दक रिचावसँ मुनप्रकयकेँ खुर पौघ खूनन मदिब भेष्ठेन छनहि। ओ कह छन-

“ए टाक गाँडपव आकासक डत छै आ ए मदिबमे मुनप्रकय बहे छथि।”

छलेत छलेत हम मुनप्रकयक मदिब नग पण्डु गेलौ। ए मदिबमे हम एकरेव साँप देखल बनी, ओ सवनी अरि ते हमर सौंसे देह सिहरि गेन।

लेनपनमे एकरेव हम आ गोरिन्द माँड मालेन नदीपव गेन छेलौ। रूत कान पढाति हमरा रसाते एकठा खर्चाणी (माँड) हँसन छन। ओकवा हम एकठा नाविकेनक सिक्कीमे पुथि जेलौ। बाँसमे मुनप्रकयक मदिब भेष्ठेन। रसाते निटाँ बाथि हम दुनु गोठे मुनप्रकयकेँ गोव नल्लेन गेलौ। मुनप्रकयक कावी मुति, मदिबक धुँष्टनाहा भागमे पाखवक ठेवीक रीचमे छेननि। हम अणन हाथक माँड मदिबक सीट्रीपव बाथि देलौ। हम दुनु गोठे मुति नग माथ थैकलौ। ल जगनि केतअसँ ओग मुति नगक पाखवपव एकठा साँप आरि अणन हल काठि ठाठ भ२ गेलै। हम दुनु गोठे रूत डवि गेलौ आ पाँडु हष्ट गेलौ। पढाति जाए क२ ओ साँप ससवि क२ ओग पाखवक ठेवीमे टुकि गेन। गोरिन्द तँ डवक कावसे रूमु जे पाखले रँनि गेना। हम सभ भगराणक सीट्रीपव माँड बखल छेलौ, ए जेन हूका खवाप नागननि की ? हमरा मोणमे एहेन भेन। हम आणन सीट्री नग गेलौ आ ओतए बाखन माँड उठा क२ नदीमे हेलि देलौ। हमसभ पुनः मुनप्रकयक पएवपव गिब क२ हूकसँ माहली माँगनिगनि। हम गोरिन्दसँ पुढनिगनि-

“हम माँड बाखल छेलौ ए जेन मुनप्रकयकेँ गोसा आरि गेननि की ? मदिब अशुँ भ२ गेलै की ?”

“लै यौ, एहेन केतो नोणक ? गामक लोकतँ हूका माँडो चठरै छनहि।” गोरिन्द जरावँ देनक।

“तखन साँप किएक देखेमे आएन ? हम माँड बाखल बनी, ए जेन मुनप्रकयक मदिब अशुँ भ२ गेलै की ?”

“अहाँक माँड बखनासँ मदिब केना अशुँ भ२ जेते ?”

“हम...।”

“दूप बद्ध, पाखला भेलौ तँ की भेन ? पडिना रेव तँ हम गमली आ अरिना बखल छेलौ, तखला मदिब अशुँ भेन छेलै की ? लै लै ! अहाँ दूप बद्ध आ केकरो किछु लै रतेरै।”

हम मुनप्रकयक मदिब नग पण्डु गेलौ। मदिबक टाक दिस पहाड छेले आ रीचमे मदिब। बातुक अहावमे पहाड कावी देखागत बहे। ङुगव तलेगनसँ सजन अकास। जेना घबक धनेन आ डुपाड, ए दुनुक रीचसँ गजोत अरै छै ओहल गजोत अकास आ पहाडक रीच पसवि बहन छेले।

हम अणन जुता खोनलौ आ मुनप्रकयकेँ गोव नगलौ। बातिक अहावमे मुनप्रकयक मुति लै नखा दैत बहे। हमरा भेन जे जेना मुनप्रकय एतए अहावक एकठा रँडकठा कप न२ क२ पुवा ससावपव पसवि गेन छथि।



मुनप्रकयक मन्दिब रँहूत प्राटन छै । माडरी नदीक कडुवपव एं गामकेँ रँसोनिहाव आदिप्रकय रएह छथि । पहिले जे गामा रँठरि मे दुमि जाग छेलै म्ददा माडरी नदीपव रँहू रँहि ओ एं गामक मृष्टि केल बहथि । हुनका मवनाक डुंगवानु एं गामक लोक मभ हुनकव सवणमे जे मन्दिब रँसोले छन । एं तवहँ जे मन्दिब आ मुनप्रकय द्वारा रँसोले गेल जे रँहू, दुसू रँहूत प्रवाण अछि ।

हम मुनप्रकय द्वारा रँसोले गेल ओग रँहू धल छनि बहन छेलौं । आ एं रँहूक कावसेँ रँसन गाममे हम, माल पाखलौ बहेत बनी ।

दीनाक रँसोकी घबमे मभ दिन जकाँ हम छैषा रिड्डा क२ रँसो गेलौं । दिनाक रँसो एकठे छिष्टी आनि हमवा हाथमे थमा देनक । ओ छिष्टी गोरिन्दक छेलै । रँहूत दिन पड्ढाति ओ हमवा छिष्टी निखल बहए, एं जेन हमवा रँहूत प्रमलता भेल । गोरिन्दक मंग घुमरँ-हिबरी, केगदी भूठक पौखरिमे नहापरँ, हेनरँ, जे मभ मोटेत-मोटेत हम छैषागव मुति गेलौं आ माथ धरि कनन ओठरि जेलौं ।

रँहूत बाति रँीति गेल, म्ददा हमवा निम लै आरि बहन छन । हमवा मोणमे केगदी भूठक पौखरि क छिष्ट रँरि-रँरि आरि जाग छन । नीन वंगक अकामक प्रतिरिरी पानिमे चमके छेलै । अकामक वंगीन मेघ पौखरि नहविपव हेनि बहन छन । अकाम अण छरि पौखरि पानिमे देखि मोले-मल खुरँ प्रमल होग छन आ “जे कग नीक लै अछि ।” जे मोटे ओ अण कणकेँ नर कणमे वँलौ छन आ मेघक रँसु पहिले छन ।

पौखरि नग केगदी (केरँड /) माड ओ केरँड एक गाडु सरँहक रँडकाठी जंगन बहे, ओ पौखरि महाव केरँड एक माडरिसँ भवन बहे । जखनि केरँड एक माडपव फुन फुनाग छै ओग मय हममभ नहागले गेल छेलौं । केरँड एक फुना गेल छेलै । पीखर-पीखर केरँड एक हरिखर-हरिखर पातसँ रँहव आरि, अण जे देखा-देखा क२ करँदा बहन छेलै । पुवा रातरकणी केरँड एक सुगन्सँ भवन बहे । हम आ गोरिन्द पौखरिमे कुदि गेलौं । दुसूगोठे हेलैत-हेलैत केरँड एक द्वीप नग पहुँचलौं । द्वीपगव केरँड एक रँहूत घनगव जंगन बहे । दुसू गोठे केरँड एक माडक अदव घुमि केरँड एक फुन तोडए नगलौं । फुन तोडरि पौखरि पाव केलौं । ओ मभठे पौखरि कडुवपव बाधि देखि एं । रँदमे रँग जकाँ हममभ पौखरिमे दुमकी नहोले । तबि दम सँ घीटि ओहिना पानिमे दुमि गेलौं, तँ ओग सँसक मंगे रँहव भेलौं । सौमे देह दुमन छन, म्ददा माथक केशि हेलैत नारिकेल सदृश रँमाग छन ।

हमवा गामक अखरफन आण गामक अपेक्षा कनी पौघ छै । गाममे खेतक मेदान, जंगन ओ पहाड हमवा मभकेँ घुमेले कम पडरि जाग छन । नहणव पतरावि चनारैत हममभ नदीमे मिमवरी खेलैत बनी । नदीमे नहणा पड्ढाति हेनि क२ नदी पाव करैत बनी । अतनातरासक कानमे पाडर लोकनि द्वारा रँसोले गेल पौखरिमे हममभ नहागले जागत बनी ।

ओ पौखरि रँहूत सुलव बहे । पौघ-पौघ पाखरव पौखरि क एक दिस नीक छिष्टकावी कएन गेल बहे । एक दिस सँ सौठे होगत लोक पौखरिमे टुकैक छन । पौखरि क एक दिस पाखरक मेहवार छेलै । हव एक मेहवारक भीतव दु-तीनठे कक गजोतसँ भवन । एं कक सरँहक देरानक खान्णव नती मभ आ आदिकारीन मान-जान, छिष्ट-छुनदुनीक आप्रति रँसन बहे । एहेन रँमागत बहे जेना एं मलाहव आप्रति रँना ककमे भगवान अमृत-कनरी बाधि देल होथि, ठीक ओहिना जेठेवागठे पाखरसँ निर्मित एं पौखरिमे कौआक आंथि-सन साफ पानि देखि क२ केकरो मोण म्दद भ२ जाग छेलै । एतेक सुड पानिमे हममभ नहाग छेलौं । नहणा पड्ढाति गोरिन्द मेहवारक ककमे जाए क२ कोला मयि-दुमि जकाँ धानसु भ२ रँसित बहथि । तखन रँमाग जे ओग जेठेवागठे पाखरसँ महाभावतक कान घुमि एले ।

पड्ढाति किड मानक सृति सँ हमव रोगसाँ ठाठ भ२ गेल । ओह... हमर माए ! हमवा एहेन नागन, जे हमर सँस कियो रँन क२ देनक, हमवा गवमे म्ददा रँहि देनक । एकरैव हम आ गोरिन्द जखनि



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ए पौखरिमे नहा बहन छेलौं तखन भई राँवु ओग राँठे जा बहन छला । हमरा पौखरिमे नहागत देखि ओ, “पाखला पौखरि झुठ्र केनक ! पाखला पौखरि झुठ्र केनक !” टिकवए नगला । हुनका टिकवई सुनि ओतए पाँट-ढर लोक जमा भइ गेल । भई राँवु हुनका लोकनिकेँ आदेशि देलथि, जे ओ सभ हमर काण घीटि कइ राँहब आनथि । ओ लोकनि हमर काण घीटेट हमरा राँहब आनथि । राँदमे भई राँवु अणन छुट्टीसँ हमरा खुई माबनथि । ओ हमरा मालेत-मालेत सातेवी मंदिर धरि नइ गेला । भवि गामक लोक हमरा देखेले ओतए जमा भइ गेल छन । ओ हमरा सातेवी मंदिरक सीढ़ीपव नाक बगड़ले राँध केनथि । हम अणन नाक बगड़लौं, माँही माँगलौं, दूदा ओ हमरा पौखरिमे नग रँना लोकनि सुँतसँ राँहि देलनि ।

काहिए हम ए सुँतपव नाबिकेन होडल छेलौं । सरँहक संग ठोम आ तमा राँजा कइ शिगयो (धार्मिक उँसर) खेनल छेलौं आ आंग हम सुँत गामरँनाक जेन एकठा तमाशा रँनन बनी । भई राँवु हमरा उँपव नाबिकेनक थँडा ताड़ि उँमनि देलथि । एतरे ले कियो हमरा उँपव योकाक छुता मारि देलक । योका काँटते हम जेब-जेबसँ टिकवए नगलौं । दूदा हमर अनहायतापव किनको कलिको झेला ले भेलनि ।

हमर अ हावति देखि गोरिन्द कालेत-कालेत दोगन हमरा माँकेँ रँजा आनक । ओ “हमर रँटा...”, “हमर रँटा...” कहत कानन-कानन, दोगन एनी दूदा हमरा सोम अरिंते ओ एकदमसँ गिब गेली । ओ रँहोशि भइ गेली आ रँहुत कान धरि उँटि ले सकली । हुनका उँठरेले हम दौलौ रँना बनी, दूदा जेतए राँहन बनी, ओतै बहि गेलौं । हुनका कियो ले उँठौनक, उँनठे लोक सभ अ तमाशा देखेत बहन । कनीकान पछाति ओ अणन ठेगुन ठेकेत उँठनी । हुनका नाकसँ शोषित रँहित बहन । हाथ आ पएवमे घार भइ गेल बहन । ओ उँटि कइ हमरा नग एनी आ “हमर रँटा...” कहत हमरा गब नगेली । हम दूनु गोठे काणए नगलौं । ओ हमर रँहन खेनराक प्रगाम कबए नगेली दूदा ओग समए टाबि-पाँट लोक हुनका पाडाँ घीटि लेनकनि । राँदमे हुनको घीटि कइ मंदिर नग नइ गेल । ओ हमरा छोडरेले भई राँवुक हाथ-पएव पकड़त बहन दूदा ओ हुनका ठोकव मारि धकेलि देलनि । एते देखते हमरा गोष्माक पावाराव ले बहन । हमरा देहक गवम खुन दोगन नागन । हम जेतए राँहन बनी ओतै टिकवि-टिकवि कइ बहि गेलौं । राँदमे हमर खुन ठँअ भइ गेल आ ओ शैलैः शैलैः हमरा शीबीसँ निकलि बहन अछि, रँमाए नगलौं..., हमरा रँमाएन जेना हमरा पुवा शीबीक सभठा खुन रँहि गेल हो ।

Illustration -02



हमर माए कानि बहन छेनी आ हुनका सरहक पएव पकड़ि बहन छेनी, दूदा हुनक गोहारि कियो ल सुनि बहन छन । ओ जहना हमरा छोड़ैए आगु आरैथि, लोक हुनका लोक लोक । बादमे जखनि ओ गोआसँ महाजनकेँ गारि पठरै शुभ कइ देननि तँ लोक सब हुनको घसीए नागन आ जग सुँतसँ हम राँहन बही ओग सुँतसँ हुनको राँहि देननि । आरँ हमर दूह पुरँ दिस तँ हुनक दूह पछिम दिस भइ गेल । हम दुनु गोठेँ एकर सुँतसँ राँहन छेलौं, दूदा एक दोसबाकेँ देखि लै पलै छेलौं । ओ “हमर रँटा...”, “हमर रँटा...” कहि कइ काले छेली, तँ हम माए..., माए..., टिकरि कइ कानि बहन छेलौं । किछु समय पछाति ओ कोना तबहँ अपन हाथ पाछु आनि हमरा छुननि । हम दुनु दिसभरि ओग स्थितिमे बहलौं ।

पोथरिबक शुद्धिकरि कबलौं ओ होम-जाप करौननि । चरिषा केवक थरु आनन गेल आ पुबहित लोकनि होम शुभ केननि । ओ लोकनि होमाणि जवौननि । मंत्राचारि करैत ओ लोकनि ओगमे मरिषा मोकए नगना । हमरा रूमाएन जे अ सब हमरा आ हमरा माए, दुनुकेँ एँ आगिमे मोकि देत । होम चरिषे कान एकठा पुबहित ओग होमसँ आगि आनि हमरा पएवपर बाधि देनक । हमरा रूमाएन, जेना हम कानि होमिका जवौल छेलौं तहिना अ सब आगि नगा हमरा दुनु माय-पुतकेँ जवा देत । दूदा ओ एना लै केनक । आगिक कारणेँ हमरा पएवमे हगका भइ गेल छन जे दर्द करैत बहए । होम-हरण चरि बहन छन आ हगसँपव चट-रँना अपवारी जकाँ हम जेतए राँहन बही, ओतैसँ हुनका सबकेँ देखि बहन छेलौं । गामक लोक सब एँ घंषाकेँ एकठा उँसर जकाँ देखि बहन छन ।

दादी ओग दिस गामसँ राँहव गेल बहथि । माँस खण घुमिमे गोरिन्द हुनका हमरा सरहक खरैरि देनक आ संगे नइ कइ पोथरिपव आरि गेल । हमरा आ हमरा माएकेँ सुँतसँ राँहन देखि कइ दादी रँहूत दुखी भेली । जग दादीक आँथिमे हम आगवनि लाव लै देखल बही, ओग दिस देखि जेलौं । ओ हमरा छोड़ि देनथि । ओग कान अ देखेले ओगठाम गामक कियो ल बहथि ।

एँ घंषा पछाति हमरा गामक लोकपव कल्लिको गोआ लै आएन, किएक तँ गाममे हमरा छोड़ि कइ आलै रँना आ गोरिन्द सन हितैसी आव कियो ल बहथि । नाबिकेनक हूँषेनका खोली जकाँ गवि जागरैना एँ घंषाक सृति आरँ शैव बहि गेल अछि । एँ घंषा सभसेँ एक, सुँतपव नाबिकेन तोड़रौक अछि, अ रँतरैरानी हमर माए..., हमरा प्रनादक होमिकाक आगिसँ रँचरैरानी हमर माए..., हमरा आँथिक मोम ठाठ बहली आ हमरा आँथिसँ अलामे लाव थनए नगन ।

•

हम गोरिन्दक माएकेँ शैव पावेलौं । ओ हमरा घबक तीतनेसँ अराँज देनथि । ओग समय ओ चाँडव रँडि छेली । ओ उँठि कइ राँहव एनी आ हमरा देखि कइ रँजनी-

“आँड रँड, रँनु ! ।”

हम घबक अँदर गेलौं । ओ हमर हानदान पुछए नगनी ।

“एतेक दिस धरि केतए छेलौं अहाँ ?”

“लै रँय...”

हम किछु कहए चाँहि छेलौं

“... आग-कानि काजमे रँनी रँनु बहै जी तगले एरौक अरुमव लै भेष्टैए की ?”

“...असनमे आगवहू तेहल काज छन, दूदा गोरिन्दसँ भेँष्ट करैक बहए एँ जेन ओरवठागम छोड़ि कइ आएन जी ।”

ओ अदहनमे चाँडव गिवाँरै गेली आ हम ओगठामक रँचपव रँन गेलौं । रँचक एक कोषमे रँचक आ ओगपव गोरिन्दक कितारि बाखन छेलै । हम एकठा उँपवना कितारि निकालौं, ओ अँधेजीमे छन, एँ जेन हम लै पठरि सकलौं आ ओ आगम बाधि देनि । बादमे सरसँ मिटाँ रँना कितारि निकालौं, दूदा ओ पुँतगानीमे छन एँ जेन ओना बाधि देलौं । रँचक नग कपड़ि । रँचरौक एकठा रँगव बहै जेपव दादीक दुष्टा कमीज आ गोरिन्दक एकठा पँषेष्ट रँगन बहै । अँथनि धरि तँ गोरिन्दकेँ पगजीसँ आगम



आरि जागक छी । ए जेन हम थिडकीसँ राहब देखौ । दूदा बस्ता सुन छन । मैदानसँ लोगत ओ बस्ता अगन देह ठैठ-मेठ केल सौधे गाम धरि आरि बहन छन । आगु पौघ-पौघ गाढ-रिबिडक कावणै शिब गेन गोरिन्दक डोह धरि लै बुमाग छेलै ।

दादी रँजाबसँ आरि गेन छन । ओ हमर हानछान पुछननि । हम कणी मोठगब-उठगब भ२ गेन बनी ए जेन ओ हमर प्रीसा केननि ।

ओग दिन दुगहब धरि दादी, ओकब माए, आ हम, गोरिन्दक बस्ता-पेड । देखेत बहौ । ओ लै आएन, ए जेन हमसभ कणी निबशि छेलौ । रँहूत कान पछाति हमसभ भोजन केलौ । दादी सुतेले गेना आ हम 'पुनः आएरैए ग्र कहि छनि देलौ ।

बस्तामे आलेससँ छैठ भेन । ओकवा देखि हमरा कणी आश्चर्य भेन, किएतत ओ कहियो अगन ओरबसांग लै छोड छन । एतए धरि जे बरियोक दिन ओ तारे-तार उठि कपेन गेना पछाति ओ काजगब जाग छन । हम पुछनिनि-

“आलेस ! रीछमे काज छोडि क२ आएन छी की ? ”

“आरैए पछन । बाविकेनक गाढसँ बस निकान२ रँना मजदुर पेदुक देहात भ२ गेलै । ”

आलेस रँतौनिनि ।

“की भेन छेलै ओकवा ? ” हम पुछौ ।

“पता लै, हमरा निकनिते ओ मरि गेन । ” आलेस कहनिनि । आलेसक संगे हमर ओकवा घब धरि गेलौ ।

दोसब दिन पेदुक अंतिम संस्कारमे हमरो जए पछन । छोठका गिबिजाघबक नगीच रँना शुशौल घाँठमे ओकब अंतिम संस्कार भेलै ।

पेदु एकठा हिन्दू मोगी बखल बहए, किन्तु ओ ओकवासँ रिखाह लै केल बहए । ओ जा धरि छेली ताधरि पेदुक संसार नीक जकाँ छनलै, दूदा जखनि ओ मरि गेली तँ ओकवा शुशौलक राहले पावन गेन छेलै । किएक तँ ओकब अंतिम संस्कार शुशौल घाँठमे लै कबए देन गेन बहँ ए जेन पेदु काशि बहन छन ।

ग्र घाँठ सावण अरिंते हम सूर्य उदयेसँमे पछि गेलौ । ए उदयेसँमे हमरा एकठा पछिना गण सावण आरि गेन । ए छोठका गिबिजाघबमे हमरा रँपतिजम (ग्रमाग्र धर्मिष्ठा) देन गेन छन । तग समए हम रँहूत छैठ छेलौ । तखन युनो लै जाग छेलौ । अगन माएकेँ रँता क२ हम आलेसक ओगठाम गेन बनी । ओकवा घबमे ओकब पिताजी हमसँ पुछनिनि-

“अहाँ तँ पाखलो छी ल ? ”

“हँ” हम जराँर देलौ ।

“किएक तँ अहाँ पाखलो छी ए जेन ग्रमाग्र भेलौ ल ? ”

हम छुप बहलौ ।

“अहाँ काहि आलेसक संग आएरै, काहि उमेर छै । ”

दोसब दिन हम आलेसक संग गेलौ । ओग समए हमरा ओतुका पादवी रँपतिजम देननि । ए रातक खरँरि हम केकरो लै नागए देनि ।

घब एना पछाति, आलेसक ओगठाम जे हमरा रिक्छुँ थांगले देन गेन छन, ओकवा हमर माए राहब हकि देननि । ओ हमरा धमकी देननि-

“रिठू ! एना जँ अहाँ केकरो-कहाँसँ किछु खेरीक टिज न२ जेरँ तँ हम अहाँक जल न२ जेरँ । ”

हमरा गाममे एसँ पहिले ग्रमाग्र आ हिन्दूक रीच कहियो नगड ।-फसाद लै भेन छन, दूदा 'ओपिनिगण पौन२क समए गामक रँजाबक राडिमे ग्रमाग्र आ हिन्दू, दुनु सद्गुणक लोकक रीचमे नगड । भ२ गेन । ओग दिन कियो एक देसवाकेँ ओकब धर्म नगाकेँ गारि देनके, आकि नगड । राँमि गेन । ओग राति एक दोसबाक घबक आगुक तुनसी टोवा आ एँस तोडि देन गेन । घब-दबरँझाक आगु तोडन गेन तुनसी टोवा आ एँसक गार्थक ठेब नागि गेन । दोसब दिन नगड । आब भयाणक कण



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

न२ जेनके । लोक सभ उडा, तनराव आ तान न२ क२ एक दोसवाकेँ मारि दगजे तैयाव छेलै । किछकेँ मारियो देन गेलै । हम एँ दुनु सद्ददायक रीट घुमि बहन छेलौं, आ की भ२ बहन छै देखि बहन छेलौं । हमरा मारिजे कियो ल अरै छन । “हम लेँ तँ ज्ञानां बली, आ ल हिन्दू, एँ जेन हमरा छोडि देन गेन की ? हमर सँरनर दुनुसँ अछि, एँ जेन हमरा ओ लोकनि लेँ मारनि की ? ” हमरा मोनमे एँ तबहक प्रश्न उठ्य नागन । दुनु सद्ददायमे हमर मीत लोकनि छना आ हम हूणका सभसँ मिलै छेलौं ।

जँ मगड । आब रँठि जेते तँ खूणक बानी रँठि जेते, एँ जेन दुनु सद्ददायक लोक डरि गेना । रँदमे हम दुनु सद्ददायक लोकसँ मिलि क२ हूणका सभकेँ समनौजौ-रूमौजौ, हूणका रीट समनौता कवरौजौ । ओग समए हम हूणका सभकेँ एकजूठ करै रँना आ एक दोसवाक समाद न२ ज्ञाग रँना दूत रँनि गेन छेलौं ।

एँ गाममे हमर परिचय फकत एते अछि जे हमर नाँउ पाखजो छी, हमर ज्ञाति पाखजो छी, आ हमर धर्म सेहो पाखजो छी ।

•



डर

केगदी भौठक सौतीस-टानीस बैगत, मूनप्रकयक मदिब नग जमा भ२ गेन डन । सुतलो आ सौषुक रीट रैसन दानी सभसँ नीक नछो डना । बैगत, किसान, फारी (गौरा बाजाक आदिगिरानी) सहित गामक सभ लोक ओत जमा डन ।

बैगत सभ अणन-अणन माँग ओत वखनक । जमीनब केकरो घब तोडा देल बहे तँ केकरो घब ले रैगरेण दैत बहे । किडु बैगतकेँ जमीनब रैदखन क२ देल बहे तँ किडुकेँ हथताक नारिकेन ले देल बहे । ए तबहक रैहूत वाम माँग बहे । सरहक चेवामँ गोप्सा आ नाराजगी सनकेत बहे ।

प्रसूत कउन गेन सभ माँगनब जखनि चर्चा हूअ नागन तँ किडु हला-गुला हूअ नागले । सुतलो गौरकब लोक सभकेँ टुप करैक प्रयाम केननि, दूदा हला आब रैदा ते गेन । तखन दानी उठि क२ अणन दगनब अराजमे रौजए नागन-

“हम सभ ए कादोले गामक गौरकब सदा जमीनबक केगदी भौठ बैगत थिको । ओना हमबहिमेसँ किडु ओकवा खेतक हिम्लदान सेहो छी । हम सभ ओकवा खेत-भौठमे काज करै छी, दूदा हमरा जतरौक आरथकता अछि ततरौ हमरा पेठकेँ ले भेटैए, अहित ओ सभ जमीनबक गोदानमे छनि जागत अछि । केगदी भौठमे हबएक नारिकेन तोडरौक दिन नाथो नारिकेनक ठेवी नागि जागत अछि, दूदा सदा जमीनबक मजीक रिना हमरा सभकेँ एकोठा नारिकेन थागले ले भेटैए । ए भौठमे नारिकेनक गाडु नगारी हमसभ, ओकवा पाणि पछी क२ नहब कवी हमसभ, भौठमे खाद छीपी हमसभ, ओकव ओगवरीहि कवी हमसभ, ओकव हता रैगारी हमसभ, सुबका कवी हमसभ आ दूषी नारिकेन थागले हमरा सभकेँ जमीनबक दूह देखए गड-ए । ए माँठक गुतकेँ ए भौठमे घब-मकाष ले रैगरेण देन जाग छै । तेपव जरबदती ओकवा सरहक घब तोडा देन जाग छै । आरि हमरा सभकेँ हमब ग्या भेटैरौक चाही । हमरा सभनब जे अवाचार भेन अछि से दूब होगक चाही, मल दूब होगक चाही ।”

“हँ, हँ”,
जमा भेन तीडसँ ए तबहक नारा सुलेमे आएन । रौदमे दानी आब जोवसँ रौजए नागन । ओकव अराज लोकक काणमे गुँजए नगले ।

पाखलोक पुवा देहमे रिजलौका चमकि गेले । ओ अणन गवम भेन काणनब गोरिनदकेँ हाथ बखरौक लोक कहनकेँ ।

भगवणनब अफत छीठना गड्ढाति हूकनब गोहारि केनासँ जे लोकक शीवीनब भा आरि जाग छै, तहिना दानीक भाषा सुनि लोक सभनब भा आरि गेले, एहल रूमाग ! दानीक रौजरेँ ज्ञावी बहे-

अणन सौगीक पवतापे ओकवा ङ केगदी भौठ भेटेन छै । यएह सदा, दता ज्ञानीकेँ जित्त मारि क२ ओकव खानन भौठ (फेरु रिशेयक खेत) शिबगीक महातासँ अणना नामे कवरा लेल अछि । ओकवा कल्लिको नाज-शेवम ले छै । ओदुपव ओ गाममे बाजा जकाँ घुमि बहन अछि । ङ गाम सदा जमीनबक ले थिके । गामक खेत-भौठ हमरा सरहक छी । ए खेतमे काज करै रैनाक खेत-भौठ थिके । कागतनब निखा लेल ङ ओकव ले भ२ जेते । जँ एहेन हेते तँ ओ ए देमकेँ सेहो कागतनब निखरकेँ बाधि जेत आ ओ ए देमकेँ कागतनब निधि केकरो हारेँ रैटि जेत । आरि हमसभ जमीनबकेँ देखा देरौ जे ङ खेत-भौठ हमरे सरहक छी । खेत-भौठमे काज करै रैनाक छी । हमरा सरहक असहयोगक कारणेँ केगदी भौठमे नारिकेन तोडरौ अखनि धवि रौकी बहि गेन अछि । ओग सगल जमीनबकेँ एहसास भ२ जागक चाही बहए ।

दूदा ओ तँ अकिलेक आहब अछि । सुनलौ अछि जे भौठमे नारिकेन तोड-ले ओ गामसँ रौहबक पाडेकव (पेगरेब नारिकेन तोड-रैना) केँ नारैरना अछि । ओकवा अवरसँ पहिल हम सभ सभछी नारिकेन तोडा क२ देखा देरौ जे ओ भौठ हमरा सरहक छी । छले चनु, आगए, एखल ओग भौठक सभछी नारिकेन तोडा देरौ, छले चनु, अन आ गड । स न२ क२ अरौत जाड ।

सभ कियो ओग जेसिक मग उठन आ ठान-गवसँ न२ क२ केगदी भौठ दिन छनि देनक । भौठमे हब एक नारिकेनक गाडुमे थुटा नारिकेन नागन बहे ।



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

एतेक सैघ केगदी भठै, जेकब नारिकेन तोड़ैले मामक माम नागि जाग छेले, एकरु दिसमे एक टोथाङ्गसँ रैसी नारिकेन तोड़ै देन गेले। गूढाक गूढा नारिकेन गिब बहन छन। भठैमे नारिकेनक रँडका-रँडका छेब नागि गेन छेले। साँम पडि गेन बहे दूदा अखनि धरि सभ कियो नारिकेन तोड़ैरामे रैसु बह। एतरोमे-

“पाखलौ गिब गेले, पाखलौ गिब गेले।”

एहेन हग्या मटि गेन। नारिकेन तोड़ैरौं छोरि सभ कियो पाखलौ नग जमा भ२ गेन।

पएबक छान छुष्टि गेनाक कावसौं पाखलौ नारिकेनक गाडसँ मिटाँ खसि पडन छन। नारिकेनक गाडसँ ओकब सैष्ट, जाँघ, हाथ-पएब आ छारि घसीठा गेन छेले जेकबा कावसौं ओकब टाम निकनि गेन छेले। नगठक घारसँ खुन रँहि बहन छेले। दादी आ सौनु ओकबा सहावा द२ उँठा क२ रैसनक आ पासि पियोनक। होशमे एना पछाति, की भेन छन? ङ जासि पाखलौ हँस्र नगन।

रैसन पाखलौकेँ गोविन्द हाथक सहावा द२ उँठोनक। चनु, घब चले छी! गोविन्द पाखलौसँ कहनक। सौनु राजन-

“ले, पाखलौकेँ हम अणघ घब न२ जाएरँ, ङ रँहुत जखी भ२ गेन छै आ एकबा रँहुत छेष्ट नागन छै। एकबा हम घब न२ जाए क२ जे किछु दराग-रियो करेक हेते से कबरी देरै।”

ओग दिसक नारिकेन तोड़ैरँ रँग भेन। पाखलौ अणघ मामक घबक बडुपब चलि बहन छन।

दोसब दिस छेब नारिकेन तोड़ैरँ शुक भेन। पाखलौ अणघा माथपब कमान राँहि ठाठ भ२ गेन। दोसबा जकाँ ओहो नारिकेन तोड़ैले सौटि बहन छन, दूदा ओकब मामा ओकबा गाडपब चठरौसँ ममा क२ दनके। एकब रौरँजुदो ओ नारिकेन तोड़ै मिताए, दूदा सौसे देहमे भ२ बहन दबदक कावसौं ओ एहेन ले क२ सकन। बजनी जीवा पीसि क२ ओकबा पीठ आ कहापब नगोल छेनी। घारसँ जीवा ले निकनि ज२ ए जेन ओ नारिकेनक गाडपब ले चठन।

काहि बजनी पाखलौक शीवीपब भेन घारकेँ थो-सौछि क२ दराग नगोल छेनी। नगठपब जे घार भेन बहे, ओगपब दराग नगा क२ पछी राँहल छेनी। फुला आ पीठपब जीवा पीसि क२ नगोल छेनी। बजनीक ङ कप देखि क२ पाखलौकेँ अणघ साएक सुकप यदि आरि बहन छेले। बजनी केनरौगक मुति-सण सुन्नरि नागि बहन छेनी।

बजनी ओकब मामक एकलौती रैसी छेनी। ओ रँहुत शीत आ रिषय सुतारक छेनी। बजनी जखनि दुध आसि क२ पाखलौकेँ पीरैले देल छेनी, ओ पीरैत कान पाखलौकेँ बजनीक रासेन्य तारक एहसास भेन छेले। छल भबिले ओकबा मोणमे भेले जे एं ममातामयी देरीक चष छुरि नी। काहिसँ पाखलौ एकठा अणघो दुनियाँमे रिचष क२ बहन छन। ओकबा मोणमे केतो कोला मदिबक बचनो भ२ बहन छेले।

जखनि जीगक हार्न सुलेमे एले तखन पाखलौ होशमे आएन। देखनक तँ केगदी भठैमे पुनिसक एकठा गाड ी आएन छन, जेकबा सगे सदा जमीदाब सेहो छन।

पुनिस जहिसा केगदी भठैमे आएन तहिसा हरामे दु-तीन फासविग केनक। सभ कियो डवि गेन आ नारिकेन तोड़ैरँ रँग क२ देनक। दादीकेँ रँहुत गोम्सा एले आ ओ गोम्समे सभसँ कहनक- “अहाँ सभ केकरोसँ डवरँ ले। नारिकेन तोड़ैरँ जारी बाखु।”

Illustration -03



गल्पकार्ठव अणन कन हाथमे लल आगु आएन । ओ दादीकेँ अणन हाथेँ पकड़नक आ ओकरा जीपमे रैसलैले घाँट नागत । पाखला ओकरा बोकनकेँ । सब कियो पुनिसक टाक दिस जमा भ२ गेन । दु-तीन गोठेँ जीपमे रैसन जमीनबकेँ मिटाँ उँतारि देनक । गल्पकार्ठव टिकड़न, आ गोम्साँ रोजन-

“अहाँ सब जँ रैसी रकरक केनोँ तँ अहाँ सबकेँ मारि नागत ।”

“जाँ, जाँ, चुप बह ! जँ अहाँ एतए रैसी रंगराजी केनोँ तँ एतए जमा भेन सब गोठेँ अहाँ सहित अहाँक पुनिसकेँ पीठत । हमसभ पुँतगानी पुनिसक हाथ तँ ठेव एनोँ तँ अहाँ सरहक हाथ केतएँ आएँ ।”

दादी टिकवन । ताथि पुनिसगव कियो दु-तीन चगत धवा देनकेँ ।

ओ सँतरतः पाखला छेले । गल्पकार्ठव पाखलाकेँ पकड़ि लेनक, दूदा दादी ओकरा छोड़ि लेनकेँ । गल्पकार्ठव दादी दिस ‘टिँराँ जाँग आकि गिब जाँग रैना नजरिसँ देखनक ।

“अहाँ सब एतए लोकक बफा कवए आएन छी रा गोलीसँ उँडरैए ?” दादी गल्पकार्ठवसँ पुँढनकेँ ।

“अहाँकेँ तँ सरसँ पहिले ओग लोककेँ अँदर करिक टाली छन, जे अहाँकेँ एतए आनल अछि । रएन अमली ट्रेव छी, बुरेवा छी, आ दोसबाक दमपन अणन श्रेष्ठ भवेँ रैना छी, आ ओकरे कनगापन अहाँ हमरा सबकेँ चनास कवए आएन छी ?” दादी उँच सुलेँ गल्पकार्ठवसँ पुँछि बहन छन आ जमीनब गोम्साँ दादी दिस देखि बहन छन ।

“अहाँ हमरा थाना न२ जाँगने आएन छी ल ! त हमरा सबकेँ न२ चनु । सब कियो जीपक अँदर आरि जाँ ।” एते कहत पाखला जीपमे रैस गेन । ओकरा सँगे आब पन्द्रह-सोनह लोक जीपमे रैस गेन । रौंकी लोकक लेन जीपमे रैसक जगह ले छेले । गल्पकार्ठव आँठ-नअ लोककेँ जीपसँ मिटाँ उँतारि देनकेँ आ रौंकेन मात गोष्ठी क२ न२ क२ चलि देनक । रौंकी लोकनि ओहिना झूँह ताकेँत बहि गेन । मातो लोककेँ ओगदिस पुनिस-सृशेलेमे बहए पड़ले । दोसब दिस सोनु आ सुभना गौरकवक सँग पाँच लोककेँ छोड़ि देन गेले दूदा दादी आ पाखलाकेँ ले छोड़नकेँ । जेना शीफक घबमे छुतकाह बहे छै तहिना केगदी भठमे नाविकेन यत्र-तत्र पड़न बहे दूदा कियो ओकरा हाथ ले नगालेँ ।

गाममे एकठाँ आब पेघ घष्टना भ२ गेले । दादी सहित गामक आला-आन लोकगव जमीनब मोकदमा क२ देनकेँ । गामरैना सब सेहो मोकदमा नडन । मोकदमा रँहूत थमिछ भ२ गेले दूदा रैसना जमीनबक पफमे भ२ गेले आ दादी आ पाखलाकेँ एक मासक केँद भ२ गेले । ओग दिस गामरानीकेँ रँहूत दुख भेन बहे । दोसले दिस जमीनबकेँ सेहो केँद भ२ गेले, किएक तँ ओ सबकाव नग जमीनक नकली कागजात पेशी केल बहे । दोसब दिस मजदुर आ रैगत लोकनिकेँ सेहो ओ रिंगा कावशेँ हँसोले छेले, ए गुनाहक खातिर जमीनबकेँ सजा भेठेन छेले । ‘जेकब जोत तेकब जमीन’, ए नियमक तहत कार्यागार आ उँरलेदाडो गाम रैगत सबकेँ भेठेले आ केगदी भठ, खाजन भठ मजदुर लोकनिकेँ । ए गामरैना सबकेँ रूमाँग छेले जे आँ ओ रासुरमे सुँतव भ२ गेन अछि ।

पुवा मास धरि जहनक सजा कष्टना पछाति दादी आ पाखला छुँट क२ आएन । भठसँ नाविकेन ट्रेवि करि आ लोक सबकेँ तडकलैक जूममे पाखला आ दादीकेँ एक मासक सजा भेन छेले । ओ दू गोठेँ रँड स्वाभिमानक सँग एना । गामक हितमे नडँ रैना एकठाँ सन्धाननीय गामरानीक नजरिसँ गामक लोक सब हुँका लोकनिकेँ फुनक माना पहिवा क२ सुँगत कएन । लोक सब दादीकेँ सन्धान द२ गाममे सुँतवतताक उँसरक मलोननि । एँसँ पहिले एतेक बास खुँशी गामक लोक कहियो ले मलुसुस केल बहए ।

दादीक घब मिलेले गाम ओ रौंकेनसँ लोक सब आरि बहन छन । एँ समए पाखला दादीएक ओगठाम रैसन बहए, दूदा पाखलाकेँ कियो पुँढनकेँ धरि ले, एँ लेन ओकरा कनी खवाप नगले । “लोकक नजरिमे हुँका हमर पाखलण नजरि एनि । हुँका सरहक रीट हम एकठाँ पाखला थिकोँ”



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ओकवा नगले । ओ तखल ओतएसँ निकलि गेल । घबसँ रौहव एना पछाति ओ सोनु मामाक घबक बस्तु पकड़ि लेलक ।

ओकवा मोषमे रिटाव आरि बहन छेले-

“बज्जनी हमवा देखि क२ रँहूत प्रसन्न हेती । ओ हमवासँ पछुती तँ हम हूषका केदक सभठा थिसा सुलरँनि । हमवा पीठपव जे कनसँ मानल गेल अछि तेकव दाग देखेरँनि, अ देखि ओ अगल दुख प्रकट कवती, आ हएव तेन गवम क२ हमवा पीठपव नगौती.... ।”

सोटेत-सोटेत पाखलो सोनु मामाक घब पछूट गेल । बज्जनी ओकवा दूलेसँ अरैत देखि लेलक । ओकवा टिहते ओ ‘रिठू’ कहि दौलौत ओकवा सोमहा आरि गेली ।

•



सात

केदरसँ छठनाक पन्द्रहे दिसक अदब दानीक देहासु भऽ गेलै । हमरा बन्दा देखोनिहार चलि गेली । खानी हमले किएक ? अशित्तु सौसे गामेकेँ सन्हावेमे ओकब पुवा हाथ डेलै । सौसे गामे काणि बहन छन ।

ओग दिस केगदी भऽमे णविकेन त्रोटत काज दानी आ हमरा सभकेँ पुनिस पकडा कऽ नऽ गेल छन आ हमरा सभकेँ खुँ मावन-पीठन गेल छन । पुनिसक माविसँ दानीक एकठा पधवसे घार भऽ गेल बहे जे अशु धवि ठीक ले भऽ सकन बहे । केदरसँ छठना पढाति ओ घार आरि रित्तार भऽ गेलै आ जेतए घार बहे ओकब टाक भाग लोहा सदृश कऽ । भऽ गेल बहे । घारसँ खुँ रँहैत बहे । गमैया डागडव आ रैण लोकरिसँ रँहते दरांग-रियो कएन गेल दूदा तेकब कोला अमर ले डेलै ।

ओग राति हम, गोरिन्द, गोरिन्दक माए, सुभलो गौरकब आ गामक किछु लोग दानीक नग रैसन बनी । दानीकेँ रौखाव बहनि आ हुनक आँधि रँन भेल जा बहन डेननि । अथवतियामे दानीक गनामे एकठा हिट्टकी भेलनि आ ओग हिट्टकीक संगे दानी अण अतिम सँ लेननि । रूमाएन जेना ब्रॉन्डसँ गवम श्रामक तंतु छुँट गेल हो । रीना हिनन-डोनन हुनक शरीर शीत भऽ गेलनि ।

ओग दिस हमरा नागन जे हमरापव रँडका रिपति आरि गेल । सौसे गाम दानीक अतिम सँकारमे आएन बहे । गामक हितमे अण जरीनमे कष्ट उठोनिहार दानीक अ आमेरनिदान दिस बहे । अण पिताजीकेँ दूखानि दैत गोरिन्दपव की रीतन हेतनि ? अ अशुमाण कवर ओतेक महज ले अछि । हमरा दूहसँ शैल ले निकलि बहन छन । ए तबहक दूखक मागन कोला मागक सँसँ सँभर डै की ?

टिता धधकेत बहे । गोरिन्दक आँधिसँ रँवखक रूँन जकाँ अशुप्रराह भऽ बहन छन । हमरा आँधिक तँ रूँनु जे लाले सुधि गेल हो । अ दृष्ट हम अण आँधिक सोमामे देखि बहन डेलौ ।

गोरिन्द ओग दिससँ गुमसुया बहए नागन । ओना तँ पहिला ओ रँहते किछु सोटैत आ गञ्जीव बहे छन, दूदा आरि तँ ओ ओरो गञ्जीव बहए नागन । हम ओकवा सममेलाँ-रूमेलाँ, आ ओ रूँमिओ गेल, दूदा ओ अणना आगकेँ रँदनि ले बहन छन । लोकवीपव जागले ओकवा पन्द्रहे दिस पहिल छिपी आरि गेल बहे, किछु ओ घरेपव रैसन बहन ।

छिपी एनाक एक मास पढागते ओ लोकवीपव जा सकन । ओकब माए एतए घबपव असगले बहि जेतै, ए रीतक दुःशिक्षा ओकब खेल जा बहन डेलै ।

ओ अण माएओकेँ अणना संगे पञ्जी नऽ जागले सोचनक । गोरिन्दक माए अण रैठोक संग पञ्जी जा बहन डेली, ए लेन हुनका रिद करीले आम-पडामक कएकठा मरीगण आएन डेली । गोरिन्द अण सभठा समाण रीति लेल छन । अतमे ओ देरानपव नष्टकन दानीक होठे आ महादेरक होठे उतावि पञ्जी नऽ जाग रँना समाणक रीट बाधि लेनक ।

भगवान जानधि ए रीतक खरिबि गामक रूँजुआ सुभलो गौरकबकेँ केना नागि गेलनि ? ओ गोरिन्दक घब दिस आरि बहन छन । हाथमे एकठा रँसक नाठी लेल ओकवा जमीनपव पकडैत ओ आगु रँति बहन छन । ओ तेलिया आ कमीज पहिबल छन । “ओ आरि बहन छथि”, अ गण हमरी सोनुकेँ कहल बनी । ओ घब धवि पहुँच गेली । गोरिन्द हुनका रँजा कऽ रैसनथि ।

“रैठो गोरिन्द ! अहाँ अणना माएओकेँ पञ्जी नऽ जा बहन डी की ?” सुभलो गौरकब पुडननि ।

“हँ” गोरिन्द नहुँ रँजन ।

“तखन हम जखनि कखला ए रँष्ट दल जाएँ तँ हमरा के रँजात ?”

ए प्रमक जरार गोरिन्द नग ले बहे । ओ चुप बहन ।

“अ गण हम रूँमि सकेँ डी जे लोकविकेँ चनेते अहाँकेँ पञ्जी जाए पडा बहन अछि, आ हमसभ अहाँकेँ रिद कबए आएन डी, अ कणी नीक ले नागि बहन अछि ।”

“आथिब हम की करी ? लोकवीक कारणेँ जाए पडा बहन अछि ।” गोरिन्द रँजन ।

“आरि गामक समाण रँटरो कहँ केले ? लोकवेद अण समाणकेँ नाँधि सौसे दूनीयाँ दिस अण कथ कऽ बहन अछि ।”



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जग मोट-रिटावसँ गोरिन्द शेरुव जागक निर्णय केल बहए, ओ ओग रिययमे कहि बहन बना ।

कशीकान धरि सभ कियो चुप बहन ।

“शेव ! अहाँ जेतए केतो जाडु नीके बद्ध ! ” अणन ओ गडा रेंड करैत स्वतन्त्रो गोरिकव राहव निकलि गेला ।

पणजी नऽ जागरना सभ्ठा समान ओ राहि लल बहए । हम कहलियनि-

“गोरिन्द, गाडु ई दुष्टैमे आरि कय समए अछि । ”

हम कहलै ओ सँभरतः लै सुननि । हूकव आथि भरि एननि आ हूकका आथिसँ ठप-ठप लाव खसए नगनि ।

समान सभकेँ कन्हापव नादि हम गाडु ई नग गेलौँ ओकरा उँगव चट्ट । देलै । गाडु ई दुष्टैक समए भऽ गेल बहै । गोरिन्द अणना माएक सँगे ओगपव रेंस गेल । हम पुढलियनि-

“आरि कहिया आरै ? ”

“देखा पव चली । ”

“एँ पन्द्रह दिन पछाति खासिणी आ सातेवी देरीक सेना छै, आरै की लै ? आ अणना तीन मसमे गामक केनरौङक शिगमो सेना छै । आरै की लै ? ” हम जल्दीसँ पुढलियै ।

“केनरौङक शिगमोसे आरै । ”

“आ खासिणी सातेवी ? ” हम पुढलियनि ।

“लै । ”

“हम असगरे केना आरि सके छी ? ”

गाडु ई चलि पडन । हम आव जे किछ पुढलौँ से सभ्ठा ओग गाडु ई अरौजमे दखि गेल । गोरिन्द अणन हाथ हिना कऽ हमवासँ रीदा जेनि । गाडु ई आगु रँठि गेल आ अणना मोड पछाति ओ आथिसँ ओमन भऽ गेल ।

•

गोरिन्दक पणजी चलि गेला पछाति हम अणना आगकेँ असगकआ रूमए नगलौँ । हम दिनभरि पीपवक गाडुक निचाँ चरुँतवापव रेंस गोरिन्दक सँभरमे सौटेत बली । ओग समए मोनु मामा ओग बन्ता दल जा बहन बना । ओ अणना डाँडमे तेलिया नपेठल बहथि आ उँगव उँकर कमीज पहिबल बहथि । हमवा मोम अरिते ओ पुढनि-

“अहाँ एतए रेंस की मोटि बहन छी ? ”

“किछुओ तँ लै । ” हम कहलियनि ।

“किछु केना लै, अहाँक मीत पणजी चलि गेला, अही जेन अहाँ उँदस छी ल ? ”

हम चुप बहलौँ ।

“चनु, हमवा घब चनु । ”

हम हूकका सँग चलि देलौँ । पछिना किछु दिनसँ हम मोनु मामाक ओगठाम आन-जान करै छेलौँ ।

दुपहबिक बोदमे चलेत-चलेत हमसभ घब पहुँचलौँ । घबक तीतव गेला पछाति कशी ठँटा महसूस भेल । नान आ काबी बँगक हवाक पहिबल बजनी दु जोठी पानि भरि रँवडाक रेंसकमे बाथि घब चलि गेली । हम दुनुगोठे हाथ-पएव षोङ तेलियासँ हाथ पोढलौँ । भोजनक जेन पीठुी बथरीक अरौज अदवसँ आएन । तारैत बजनी राहव एनी आ हमवा सभकेँ भोजनपव रँजा कऽ नऽ गेली । हमवारहुँत जोवसँ भूख नागन बहए ।

भोजन कएना पछाति हम रँवडाक मोपो (कर्सिबुसा रेंसकी) पव रेंस गेलौँ । कोला आन काजसँ हम घबसँ राहव निकनहि रँना बली तारत हमवा कियो अरौज देनक ।

“रिठु । ”

हम उँगठ कऽ देखलौँ ।



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अ वज्रणी छेनी जे हमरा अरौज द२ बहन छेनी ।

“है ।”

हम ओकरा कहनिअ ।

ओ हमरा माए सग मधुव अरौजमे रौजा बहन छेनी । ओग समग्र हमरा आगन जेना हम अतीतमे पहुँच गेल छी । हमरा सर्रणमे हमर सभ्ठा थिम्मा सोनु माया ओकरा रौता देल बहनि संगे हमर माए द्वारा बाखन हमर नाँउ सेहो ।

वज्रणी हमरा किछ कहए चाहि बहन छेनी, ह्रदा रूत देव धरि हूणका ह्रदसँ कोणा शिष्ट, ले निकनननि । ओ उते ठाँठ बहनी ।

“रिठु, अहाँ एते बहन कर । अहाँ अगन सभ्ठा कपड 1-नता एते न२ आँ ।”

अ स्वनेते हम ओकरा दिस आश्चर्यसँ देखौ । रौदमे हम अगन माथ मुका अगन पएव दिस देखए नगलौ ।

ओ हमरासँ रौव-रौव आग्रह केल ज्ञा बहन छेनी आ हम अगन पएव निहाबल ज्ञा बहन छेनी ।

“किछ ले सोचु, अहाँ एते बह ।”

“ओ रौव-रौव हमरासँ आग्रह केल ज्ञा बहन छेनी । हूणकव आग्रह तोड़रौक हिनत हमरामे ले बह ।”

हम “है” कहि देखिअ ।

सात-आठ मास धरि वज्रणी हमर सहोदर रौहिन सदृश सेरा करैत बहनी । हमरा कपड 1-नता, ओजौन सभ्ठा रएह साफ करैत बहनी । गहरोक पाणि गवस कवएसँ न२ क२ सभ्ठा काज रएह करै छेनी, ए जेन हम कहियो कान गोम्मा क२ क२ ओकरा डाँटियो दिअ, ह्रदा ओ टूप बह छेनी ।

एकदिस हम हूणका कहनिगि-

“हम की अहाँक सहोदर भाय थिकौ जे अहाँ हमर एतेक विवाह बाये छी ?” एते स्वनेते हूणका आँथिमे लाव आरि गेल छन । ओ अगन रौहिसँ तकरो पौछननि ।

“सहोदर ले छी तगसँ की ? से जे हो, छी तँ अहाँ हमर भागए ले ? आ हम तँ अहाँकेँ अगन सहोदर ले भाय माले छी ।”

एते कहत ओ कपसि-कपसि क२ कास्य नगनी । हम हूणकासँ माँही माँगनिगि । हमरो आँथिमे जूथनि लाव आरि गेल तखन ओ टूप भ२ सकनी । हम जूथिना हँसलौ, ओहो हँसए नगनी आ कपड 1 धूअ गनावगव चनि गेली ।

हम चिन्तामे डुमि गेलौ । पाखलोक जनमन केतो वज्रणीक भाय रनि सकैए ? खुनक सर्रण गहिओ बहन ओ हमर रौहिन सदृश हमर सेरा करैत बहनी, तँए की ओ हमर रौहिन ले भेनी ? ए तबह एकक पछाति एक प्रश्नमे हम उनवेत गेलौ । हेव हम गोरिन्दक प्रश्नक तंतुकेँ सोमवारैण नगलौ ।

ओग दिस रौव-रौव यादि आरि बहन छन । नारिकेनक गाडसँ गिबना पछाति वज्रणीक दरौग नगेलसँ जे जनन भ२ बहन छन तेकरा कम करैजे ओ घारगव नहू-नहू फुक मारि बहन छेनी । तखन हमर सर्रण ओकरासँ की छन ? हमरा ओ ओकरा रौच कोणा सर्रण ले बहनाक रौरौजुदो ओ हमरा दरौग नगेलक । हम कष्टमे बनी आ ओ हमरा घारगव दरौग नगरैरानी मयातमयी छेनी ।

सभ्ठा घारक संग-संग लौ आ पिपलीक घार ठीक भ२ गेल बहए, ह्रदा ओतए करिया दाग बहि जागक कारषेँ वज्रणीकेँ रूत खवाप नालेक । ओ हमरा रौव-रौव कह छेनी-

“लौगव कारी दाग ले बहरौक चली । एतेक स्वन्दर गोव-नाव देहगव आमक कोनपति जकाँ रूमागत अछि । आरि ओकर की करै ?”

लौहेक कारषेँ नहसुनियाँ आँथि रौँटि गेल ।

“हम टूपटाप ओकर गप सुनल ज्ञा बहन छेलौ । कारी दाग बहि गेल छन, एकव हमरा एकोवती धू ले छन । हमरा रूमाग छन जे हमर नहसुनियाँ आँथि रौँटि जागसँ नीक होगतए, ओकरा फुँटि जागक चाहि बहए आ संगे दागसँ सौँसे देह कारी भ२ जागक चली बहए । हमरासँ हमर गोवाग सहन ले



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

भ२ बहन छन । झुदा भगवान हमरा गोब रँलल बहयि, एकवा जेन बजनी भगवानक उंगकाव मल्लि
छेनी । ”

“हमरा भगवान भाय तेजल छयि, हमरा ओकरा ठीक करैक अछि । ”
बजनी रँव-रँव रँजल जा बहन छेनी आ हमरो भगवान सदृश रँव-रँव हमर मेरा क२ बहन छेनी ।
तखन हम हुनका कहियनि-

“हमरो भगवान देरी सदृश रँहल तेजल छयि । ”
एते कहिते हमरा कानमे मदिबमे राजेरँना यँक सदृश आभास हूअ लागल ।

•



आठ

बज्जीक रिखाह भेन एक मास भ२ गेन बहे । ओ दुवागममे अणन लेहव आरैरना बहथि, तँ सौनु मामा खेतक काज जल्दी निरैठी क२ आरि गेन छन । बज्जीके गीक खेती-रौबी रौना घब-रँव गिनन बहे तँ सौनु मामा रँहूत खुशि छन । दूदा दोसब दिस हूणका एँ रौतक दुखो बहथि जे रँहूत कन्या उमेवमे ओ बज्जीक रिखाह क२ देल बहथि । ओकवा लणणमे ओकवा माथपव सान्सारिक रौम आरि गेन बहे । ओकवा एहेन रूमाग । ओ पाखजोपव रौकावक शिका करैत बहथि, एँ रौतक हूणका ग्लानि भ२ बहन छैनथि ।

पाखजो आ बज्जी, एक दोसबके गीक जकाँ रूमेत बहथि, एँ जेन सौनु मामाकेँ एँमे किछ खवाप ले रूमा बहन छन । दूदा जँ यह सँरंध कहियो कोना दोसब मोछ न२ निखए तखण ? तखण तँ गाममे जगहँसागए भ२ जाएत । एँ गामे ओकवा छोछए पर्जा जागते । एँ जेन ओकव मोष सनिकित बहे छन । एँ खातिर जेतेक जल्दी भ२ सकए, बज्जीक रिखाह भ२ जागक चाही, यह गीक बहत । सौनु मामा मोचल बहथि ।

बज्जीक रिखाह कवणे गामक भायबक सग रँड उँधर-रौधरमे भेन बहे । रिखाहक तैयारीमे पाखजो पद्दत-रौम दिस धरि रँहूत कष्ट उँठौल बहए । रियाहक दिस ओ खर मेहनति लेल बहए ।

रिखाहक दोसबे दिसक गप बहे । बज्जीकेँ घबमे ले बहनाक कारणे पाखजो कणमूँ सन बहए । ओ अलिा घबसँ रँहवाग छन, तखण दररँकापव ओकवा सौनु मामासँ छेँठ भेलै । ओ पाखजोसँ पृढनथि-

“की भेन ? ” “किछ ले ।”, कहत पाखजो घबसँ निकलि गेन ।

ओग दिस पञ्जातिसँ पाखजोक पहिले जकाँ हेँनमे खेलाग-पीलाग आ केतो स्रुति गेलाग आरँत भ२ गेन । ओकवा रूमाग छेले जेना ओ एँ गाममे एकठाँ अज्जरी सदृश छै आ ओकवासँ मिलन बखेरना एतए कियो ल छै । ओ रँहूत उँदास बहे छन । ओकवा माथपव किछ लेखाक अनारै किछ ले देखागक । रौच-रौचमे ओ खेलागओ-पीलाग छोछाँ दग । ओ पूर्ण कणे कमजोब हाथी सन भ२ गेन बहए । ओकव हाड सभ सनकए नागन बहे, गान पिचकि गेन बहे आ आँथि धसि गेन बहे ।

पाखजो काजपव ले गेन छन । ओ दुपहबकेँ पीपवक गाछक चरुतवापव रौसन बहए । आनेस आ ओकव मीत सभ काजपवसँ आपस आरि गेन बहथि ।

“पाखजो आग काजपव ले गेन आ भवि दिस चरुतवापव रौसन बहन” एँ कहि ओ सभ पाखजोकेँ किचकिचरँ नागन । “पाखजो ! आग अहाँ काजपव किएक ले एरौ ? ”

“ओहिया । ”

“ओहिया कियो अणन काज छोछाँ छै की ? किएक यो ! अहाँ पाखजोक जन्मन छी एँ जेन अहाँ मामा अणन रँष्टी ले देनथि की ? ”

आनेसक एते कहँ स्रुति पाखजोकेँ रँहूत गोम्सा आरि गेलै । ओ गोम्ससँ आनेस दिस देखनक ।

“अहाँ ओहिया हमवापव भावाज ले होँ । मामाक रँष्टीक रिखाह भेना पञ्जातिसँ अहाँ किछ रँदथि सन गेन छी । अहाँक पागनपनक हानति देखि क२... । ”

“दुप बद्ध आनेस ! हमवा रँकावक गोम्सा ले दिखाँ । ”

एते कहि पाखजो ओतएसँ चलि देनक । ओकवा आग आनेसपव रँहूत गोम्सा एले, दूदा कवरौ की कवितए ? यह रौत भवि गामक लोक-रँद रौजि बहन छन । तखण हूणका सँरँहक दूहपव के ताना नगरँए ? हिनका सँरँहक मोचे एहेन छणथि तखण केन की जाय ? पाखजो एहेन मोचनक । ओकवा माथमे रँहूत दरद भ२ बहन छेलै ।

“जँ हम अलिा मोटेत बहनौ तँ एक दिस निश्चिते हम पागन भ२ जाएँ । हमवा मोणकेँ चिन्ता करैक आदति सन भ२ गेन अछि, हम एकवासँ ले निकलि सकँ । ”

मोटेत-मोटेत ओ वस्तापव चलि बहन छन । जुरार ओकवा अरौज देनके ।



जखनि कि जूरारकेँ देखते ओकरा गोम्मा आरि जाग छेलै, दूदा आग ल जागि की भ२ गेलै ? पाखजो ओकरा जूरार देनकेँ आ दाकखाषामे सैसि गेल । जूरार हँसन आ ओकरा रैसिले एकठा मडिना देनकेँ । पाखजो रैसन ले । ओ एकठा पाँचैकही निकाननक आ ओकरा दिस रैठेनक । जूरार नाबिकेनक हेली (शेवारँ) ओकरा गिनासमे अरि देनकेँ । छल भविजे ओकरा मोषमे भेलै जे ए गिनाससँ जूरारक माथ ह्वाडा दी । जूरार गिनास उठा क२ पाखजोक हाथमे थमा देनकेँ । नर लैहिकीक खुशीमे ओ हँसि बहन छन । पाखजो एकरेव गिनासकेँ दूहसँ नगोनक आ फ्फरिमे हँसि जेनक । ओकरा गवामे जलन भ२ बहन छेलै तैयहूँ ओ गिनासकेँ दूहसँ नगोनक आ गठागठ पीरि गेल । ओकर गवा डिना गेलै । खानी गिनास जूरार हेलसँ भवि देनकेँ । दोसव गिनास पाखजोक गवामे एकठा हिट्टकीक संग अठकि गेलै । गवा आ नाक जवए नगलै । ओकरा नगलै जे ओकर गिरावण रिगडा बहन छै, ओ ओते रैस बहन ।

बजनी घब आएन छेली, एहेन ओकरा कियो रँतेल छेलै । एते स्वभते ओ सोनु मामाक घब दिस अणष पएव रँठेनक ।

घबमे सोनु मामा खेत जागक हडरँडिमे बहथि । हुषका कारूपव हव छेलनि । पाखजो प्छनक-

“बजनी आएन छेली की ? ”

“आएन छेली । दू दिस बहि क२ चलि गेली । ”

बजनी आएन छेली, सोनु मामा हमवा किएक ले रँठेननि ? ओ सोनु मामासँ प्छिले मोटि बहन छन, दूदा छुप बहन ।

रौहव जागक हडरँडिमे सोनु मामा अणष घबक केराड रँल केननि आ पाखजो ओतएसँ दूह नठका क२ आणस भ२ गेल ।

•

एक दिस आजेस पाखजोकेँ गोरिन्दक सँरषमे खरि देनक । गोरिन्द अणष अँफिसमे काज करैरानी एकठा ज़माज़ा हरतीसँ रिआह क२ लेल छन । ज़ गण स्वनि पाखजोकेँ रँहूत आशर्च भेल बहे ।

गोरिन्दकेँ गाम एना एकठा अबसा रीति गेल बहे । ओ मेना आ शिगमोमे सेहो ले आएन छन । गोरिन्दक सँरषमे ज़ खरि स्वनि ओ ओकरासँ छैठ कवर मोचनक ।

पगजी मेहबक एकठा रँडका तरणमे गोरिन्दक अँफिस छेलै । “हम ओग अँफिस केना ज़ाँ ? ” पाखजो यएह मोटि बहन छन । हेल ओ हिनात केनक । पगजी मेहबक ‘जुन्ना हाँसक सीत्री चठेत ओ ओकरा अँफिस पँचन । अँफिसक सभठा कर्चावी ओ म्नीगण ओकरा देखए नागन । ज़ कोष नर प्राणी आरि गेल ? सभ कियो आशर्चक दृष्टिसँ पाखजोकेँ देखए नागन । किछ म्नी आ हरती सभ ओकरा देखि क२ हँस्य नगनी । पाखजोकेँ अणष-आगमे केना दन नागननि । एतरैमे अणष रँसक केरिण गेल गोरिन्द रँहवाएन । ओ पाखजोक नग आएन । गोरिन्दसँ गिनना पढाति, अँफिसक मागारी सँसावमे आएन पाखजोकेँ कनी बाहत भैठननि ।

“स्यो गोरिन्द ! ”

पाखजो सौव पावनक ।

गोरिन्द हुषका जूरार ले द२ क२ हुषकव हाथ थामि कैठीण दिस न२ गेल । दूनु एक दोसवाक हाँ-समाचाव प्छनक । रँहूतो दिससँ गोरिन्द गाम ले गेल छन ए जेन पाखजो ओकरा उँनल देनकेँ । दूनु गोठेँ चाह पीरि नागन ।

“हम यएह एलौ । ”

एते कहत गोरिन्द रीच्छेमे चाह पीरि जोडा रँहवा गेल आ ज़न्दिए एकठा हरतीक संगे घुमि आएन ।

ओ साँडी पहिबल छेली । हुषका माथपव एकठा छिफनी सेहो बहनि आ ओ रँहूत धनिक घबक रूमाग छेली ।



“अ हमार मीता छी, हमसभ एकवा पाखलौ कहैत छिअक ।”

गोरिन्द ओकवा पाखलौक मल्ल रूमेलके । पाखलौ ओकवा दिस देखनक । ओ हँसनी । किछ कान पहिले यएह हारती पाखलौके देखि कइ हँसि छेली । गोरिन्द पाखलौसँ आगु कहलके-

“भरिसमे यएह हमार घबणी हेती । हिनक नाँउ मारिया छियनि ।”

पाखलौ जखनि आशचर्यसँ गोरिन्द दिस देखनक तँ गोरिन्द अपन माथ मिटाँ दिस मूका जेनक ।

“जँ गोरिन्द एकठाँ अमाँ हारतीसँ रिखाह कइ जेत तँ गामक लोक एकवा सँस्रमे की सोचत ? ओ सभ की चुप रैसते ?”

पाखलौके एहेन रूमेली । झुदा ओ चुप बहन । रौदमे ओ अपन ए रैगतनरक रिटावकेँ एकदिस बाधि हँसए नगन ।

पाखलौके हँसत देखि रूमू जे गोरिन्दक माथक भाव कम भइ गेली ।

“आरि जाति-पाति आ धरम केतए बहि गेन छै ? दरिखनी आ उतवी धुर आरि सँष्टि गेन छै ।”

गोरिन्द एहेन सन किछ रौत कवता । पाखलौके नगली । झुदा गोरिन्द चुप बहन । पाखलौके गोरिन्दसँ रहुत बान गण करैक छेली, झुदा गोरिन्द नग ओतेक समय ली बहे । रौदमे पाखलौ दुनुकेँ “अडा, हेब तँ छै हेते !”

कहनक आ रँहवा गेन ।

पाखलौ निश्चयमे चठन । ओग कान ओकवा एकठाँ रौतक स्रवण भइ गेली-

“आजमे दुरँअ जागरना छुथि ए जेन ओ गामपेष्ट रँलरौक जोगाडमे बहथि । किछए दिनमे ओहो रिदेशे चलि जेतो आ ए तबहेँ गाममे हमार एकोठाँ मीत ली बहि जाएत । हम एकदम असगब भइ जअरँ ।” अ गपतँ गोरिन्दकेँ कहरँ रिसबिए गेली । आरि तँ गोरिन्दा कहियो गाम एता, एहेना सँभारणा नहिअक रँवरँवि छन । रूमूगत अछि जे गोरिन्दा आरि गामरँनाक जेन रौहबिए लोक भइ गेना ।

पाखलौ निश्चयसँ मिटाँ उतवए नगन तँ ओकव माथ घुमए नगली । ओकवा रूमेली, जेना-जेना निश्चय मिटाँ दिस जा बहन अछि तेना-तेना ओहो मिटाँ गिवन जा बहन अछि । निश्चय ककना पछाति ओ असगब भइ गेन, ओकवा एहेन रूमेली । ओ निश्चयसँ रौहब निकनन ।

पणजीसँ गाम अएरी कान रँसमे ओकवा कझिणी सौंसैसँ तँ छै भेली । “बजनीकेँ रँष्टी भेन छै ।”

अ समाचार पाखलौकेँ रएह देल छेली । अ सुनि पाखलौक खुशीक कोला ठेकाण ली बहली । रँससँ उतवि पाखलौ एकपेष्टि या हएत हानी-हानी गाम जाए नागन । सँस पछा गेन बहे । पुर्णियाक टाँद आसमणमे साह मनेकेत बहे । पाखलौक मोणमे बजनीक रँष्टीक छुरि आरि बहन छेली । ओ देखेमे केहेन हेती ? ओ अपन माए-सभ हेती आकि केकबो आन सभ ? ए तबहक कएकठाँ प्रम ओकवा मोणमे उँठए नगली । बजनीकेँ गोर वंग पमिल छै । ओकवा चन्द्रमाक ए ज्ञासना-सभ रँष्टी होमक चाली । काजब नगएना पछाति कावी आँधि रानी ओकवे सभ सुन्नवि रँष्टी होमक चाली । पुर्णियाक ज्ञासना टाकदिस पसबन बहे आ जेना नहबक पाणि रँहे छै तहिना ओकवा बस्तामे चन्द्रमा अपन ज्ञासना पसावल छेली ।

•

बजनी पाँट गामक अपन रँष्टीकेँ सँग नए कादोले गाम अपन रौरुजीक घब आएन छेली । पन्द्रह-रौस दिन रीति गेन छेली, झुदा अखनि धरि ओ अपन पतिक घब ली गेन छेली । ओ अपन रँष्टीक नाँउ सुनु बाखल छेली । ओ देखेमे रहुत गोर आ सुन्नवि छेली । ओकव केशे गनारी छेली आ आँधि नहसुनिसाँ । ओ कोला हिरंगीक रँष्टी सभ रूमूगत छेली ।

बजनीकेँ ओकव घबरना घबसँ निकालि देल छुथि, अ अहराह सौंसै गाममे पसरि गेन बहे, आ साँटो बहे । ओकव घबरना ओकवा मारि-पीष्टि कइ सुनुक सँग ओकवा रौपक ओतए पठा देल बहे ।

“बजनीकेँ पाखलौसँ अ रँष्टी भेन छै ।” अ आवोप ओकव घबरना ओकवापव नहोले बहे, आ सविगहू देखेमे हिरंगी सभ नहोरानी सुनुकेँ देखि लोकौ सभ एकवा साँट मारि लल बहे ।



बजनी अचानक अगना रैठीके न२ क२ घब आरि गेन छथि । ओग दिन ए सुनि सोनुके रूत धका नागन बहे । ओ एना किअक एनी ? सोनुक मोनमे एहेन प्रम उठए नगले । अगना रागेके देखि बजनीक सबक राह ठुठ गेले आ ओ काणए नगली । आथिब भेले की ? ओ बुमिअ ले पाणि बहन छन । रादमे बजनीक देहपव दग सभ देखि क२ ओकरा सभरुद्ध समामे आरि गेले । ओ बजनीके सनिगा देनके । रूत देव धरि तँ ओ टुा बहनी दूदा पढाति जअ क२ सभ्ठी घटना हुका रता देनी । सुनुके न२ क२ ओकरा घबरना ओकरागव शका करे छेले । ओकरा ए आरोप बहे जे, “पाखलामे बजनीके ए रैठी भेन छे ।” ए आरोप साँदे भ२ सकैए । सोनुके अहिा बुमेले आ ओकरा रूत गोसा आरि गेले । ओकरा आथि नान भ२ गेले आ ओ गोसासँ पाखलामे गियाँरए नगले । “पहिले हमर रैहिन पाखलामे जातिमे हमर नाक कठी टुकन अछि । आ आरि ओकरे रीया हमरा रैठीक भरिस खराप करैपव तुनन अछि” सोनु राजए नागन । रादमे ओकरा गोसा आब रँडिते गेले आ एँसँ आगु ओ किछु राजि ले सकन ।

“एँमे पाखलामे कोना दोष ले छन्हि । हमर घबरना हमरागव मुठ आरोप नगा बहन छथि ।” बजनी सोनुके कहनके । दूदा ओ ए सभ सुनैले तैयारे ले छेले । रूत कान पढाति ओ सभ किछु सुननक आ कहनक-

“हमर तँ भागे मुठन अछि ।”

दोसव दिन ओ बजनीक घबरनासँ भैठे क२ सभ किछु समना क२ कहनके-

“सुनु सग रँटा रूतमे लोकके भ२ जाग छे, ए सभ तँ भगराणक हाथमे छन्हि ।”

ओ रूत समामेरीक प्रयास कएनक, दूदा बजनीक घबरना किछुओ ले मागनके ।

सुनुक पावना आरि नाक घबमे सुनए नगले आ बजनी अगन रैठीक संग अगन समए रिताँरए नगली ।

पाखलामे ए रीट प्रायः भोरे-भोरे काजपव निकलि जाग छन आ बातिअक पहव काजसँ घुमेत बहए । बजनीके ओकरा घबरना घबसँ निकलि देल छे आ आरि ओ अगन रागेक संग बहि बहन छेनी, ए गग ओकरा पता ले बहे । सभ क्रिया पाखलामे एकठे अगने दृष्टिसँ देखए नागन छन, दूदा लोक सरहक ए दृष्टि पाखलामे आल समए जकाँ बुना बहन छेले ।

पाखलामे दुपहरके हेठन जाग छन । हेठनमे आब पाँट-छह लोक रैसन बहे आ गग क२ बहन छेले । हव ओकरा सरहक हँसिक अराज एले । पाखलामे तीव्र घुमिमे अराज रँग भ२ गेले । रादमे ओ सभ पाखलामे देखि हुसहुसा क२ राजरँ शुक केनक ।

“हमरामे कोना परिवर्तन भेन अछि की ?”

एहेन प्रम पाखलामे द्यागमे एले । ओ अगन सोसे देहके निहावनक । ओगमे कोना परिवर्तन ले भेन छेले । पौष्ट-सर्ष्ट जेते छेले ओते तँ बहे । आ दाढी तँ ओ काखि लीआसँ कपौल छन । एहेन स्थितिमे हम हिनका सभके कोखा केना नजरि आरि बहन छी । पाखलामे मोनमे ए उषेडरुँ हूअ नगले ।

बजनी गाम अएन छेनी, ए गग पाखलामे रीस दिन पढाति पता नागि सकले । ओ दोसव दिन भोरे-भोरे उठि क२ सोनु मामाक घब दिन चलि देनक । रिखाह पढाति ओ बजनीसँ भैठे ले केले छन । रीटमे ओ बजनीसँ भैठे करैले दु-तीन रँव सोनु मामाक घब गेलो बहे, दूदा बजनीसँ भैठे ले भ२ सकले । दूदा आग ओकरा बजनीसँ निश्चिते भैठे हेते, ए जानि ओ जल्दी-जल्दी मामाक ओगठाम पहुँच गेन । केराडसँ तीव्र जागकान ओकरा माथ टोकठिसँ ठकरा गेले, जेकरा अराज सुनि बजनी रँहलेनी । देखननि तँ पाखलामे अएन छना । पाखलामे देखि बजनी रूत खुँ भेनी ।

“अहाँक माथमे छेठ नागि गेन अछि ल !”

बजनी पाखलामे गुडनक ।

“हँ ! दूदा भेन किछु ले ।”

“किछु ले भेन ! चनु देखए दिअ ।”

बजनी देखननि, हुका माथपव एकठे भैठेव भ२ गेन छेननि । बजनी ओकरा दरारँ नगली ।



“ओह ! हमरा किछु ले भेल अछि, आ ले दबदे क२ बहन अछि ।”

एते कहत पाखलौ अणन माथसँ ओकब हाथ हठी देनके । बजनी सुनुकेँ रौहव न२ एनी का रँजनी-
“देखु दास ! मामा आएन छथि ।”

पाखलौकेँ देखि सुनु हँसि पडनी । सुनवि सुनुकेँ देखि पाखलौ बजनीसँ कहनकेँ-

“बजनी, सुनुकेँ कारी काजब नगा देन कबिओक, ले तँ एकवा केकबो नजवि नागि ज्ञात ।” एते कहि
पाखलौ हँसए नगन । तारत घबसँ निकनन मोनु मामा सेहो आरि गेन । मोहो (हूसीयुगा रँसकी)
पब रँसन पाखलौकेँ देखि ओ ठाठे बहना आ दवरँसा दिस अँगुबक गशिवा कबेत रँजनी, “निकन
जाँड एतएसँ । आजुक रौद हेव कहियो हमरा ओतए ले आएँ ।”

पाखलौकेँ किछुओ रूमेमे ले एले । ओ अरक भ२ ओते ठाठ बहन आ मोनु मामा दिस तक्रिते बहि
गेन । मोनु मामा पुनः गोस्रसँ रँजनी नगना-

“अहीक कावसेँ ज्ञ सत भेल छै । जँ अहाँ एतए ले बहिनो तँ एतेक सतकिछु ले होगते । अहीक
कावसेँ बजनीक घबरना ओकरा घबसँ निकनि देल छै । अहाँ एतए कहिओ ले आरि सके छी ।”
पाखलौ अरक भ२ देखते बहि गेन ।

“बजनीक घबरना बजनीपब आरोप नगोल छै जे एकब रँठी अहीक ज्ञमन छी । अहीक कावसेँ ज्ञ
सत भेल छै, ज्ञ खरवि अहाँ ले सुनल छी की ? एतए अँरामे अहाँकेँ कहिको शर्म ले भेल ?
दोसबक रँगळती कबारए एतए आएन छी ?”

बजनी रीछेमे ठैकनक-

“एमे हिनकब कोला दोष ले छुनहि, अहाँ अलेव हिनकापब शिका क२ बहन छी ।”

बजनीक ज्ञ कहरँ मोनु मामा ले सुनयि । ओ रँजिते जा बहन छना...

“अहीक कावसेँ बजनीक भाग फुटि गेलै । जँ अहाँ एतए आएँ तँ लोकरेद एँ आरोपकेँ साँट मागि
लेत, एँ लेन अहाँ एतए कहियो ले आएन कक । पाखलौएक जाति हमब नाक कथौल अछि, ओकरे खुन
थिकोँ अहाँ । पाखलौक रँशज छी अहाँ । अही हमब रँरँदीक कावण थिकोँ ।”

पाखलौक पएव थवथवरँ नगलै । ओकरा किछुओ समयमे ले आरि बहन छेलै, दूदा धीरे-धीरे
सत किछु समयमे आरि गेलै । ओकर रँठी हिवंगी-सग नली छेली एँ लेन ओकर घबरना ओकरापब ज्ञ
आरोप नगोल छन । पाखलौ एँ संरँधमे किछु रँजैरँना बहयि दूदा मोनु मामा ओकरा निकनि जागले
कहल बहयि एँ लेन ओ रँहव आरि गेन बहए । ओकरा माथमे चक्रव भ२ बहन छेलै आ रूमागत बह
जेना ओ फाँटि जेते । ओकरा दियागमे मोनु मामा शिँ, कोला मर्जा या जकाँ छेष्ट क२ बहन छेलै ।
“...बजनीक घबरना घबसँ रँहव क२ देनकेँ ...बजनीकेँ अहीसँ रँठी भेल छै... पाखलौएक जाति हमब
नाक कथौल अछि... पाखलौक रँशज छी अहाँ...अहाँ एतएसँ चलि जाँड ।”

“रौवह टोरीस त्रैकक दृष्टिना भ२ गेलै ।”

“केकर ? त्रैक ज्ञागरव के छेलै ?”

“पाखलौ !”

एकठा खनासि मिठाँ आरि लोक सतकेँ ज्ञ खरवि देनके । सत कियो डुपब दिस दोगन । किछु
गोष्टए त्रैकसँ गेन तँ किछु ओहिना दोग पडन । बन्दा नदीक कडेव होगत एकठा घाँटीक रीचसँ जागत
बहै । बन्दाक एक दिस घाँटी बहै आ दोसब दिस खदना ।

डुपबका बन्दासँ जागरना एकठा त्रैक मिठाँ खदनामे खसि पडन छेलै । त्रैकक पबखटा डुडा
गेन बहै ज्ञगमे पाखलौ मावन गेन । एहेन सतकेँ रूमागत छेलै । किछु लोक मिठाँ गेन । देखनसि
तँ ऋतिग्रस्त त्रैकक रँगनमे पाखलौ पडन छन । ओकरा देहक कपड । फाँटि गेन बहै आ सौँसे देह
लाटा गेन बहै ।



पाखलौ अगल अतिशय त्रैकलै देखलक । त्रैकक अगिला शीशा टूँट गेल बहे । लोहाक चदवा पुर्ण कपस त्रैकसँ पिचकि गेल बहे । ओकरा देखि पाखलोक आँखिमे लाव आरि गेलै । पाखलौ उठन । त्रैकक सामल गेल आ ओगपव अगल हाथ फेबलक । आरि ओग त्रैकपव भगवानक कोला फेगै लै बहे, दूदा त्रैकमे नगौल गेल चालक माना अखला धरि बहे जे कि पाखलौ नगौल बहे ।

पाखलौ जखनि ठाठ भ२ बहन डन तखन ओकरा काशमे रूत बस प्रम सत उठ्ठ नगलै । दूर्युष्ठा केना भेलै ? हम रूँटि केना गेलौ ? ए तबहक केतेको प्रथमे ओ उनमि-मग गेल ।

पाखलौ नीचेसँ बस्ताक एक दिस माड १ दिस आँखुव देखेलाक । ओकरा कमीजक एकठा रूँडकठा टूँकड १ ओग माड १ रीट कटकन बहे । दूर्युष्ठाक समथ त्रैकक दवरञ्जा अचलक खूजलै आ ओ राँहव खमि पडल डन । ओतएसँ ओ सीधा माड १पव गिब अछि गेल, जगसँ ओकर कमीज फाँटि गेलै आ देह लोटा गेलै । ओतएसँ ओ धीरे-धीरे पिटाँ गिबन, जखनि कि ओकर साथी त्रैक गँहीवगव खदनामे गिब गेलै ।

एतेक पैघ त्रैक आँछाक लाग्या रूँटि गेल बहे आ एकठा हाड-मांसक लोक रूँटि गेलै । “पाखलोक भाग नीक बहे तँ ओ रूँटि गेल ।”

लोक सत एहल कहैत बहे । कावण ताकना उतव जखनि लोकलै जरारि लै भेगै छै तँ ओ ओकरा अगल भागपव जोडाँ दग छै ।

पाखलोकै डागदवक ओगठामसँ एना पढाति कम्पनीक प्ररंजक दूर्युष्ठाक जाँट करब शुक केनक । प्ररंजक ओकरासँ रूत बस प्रम केनके, दूदा ओ एकठा प्रमक जरारि लै देनके । ओकरा दिमागमे दूर्युष्ठाक रिषयमे किछु ओ लै बहे । आँग भोले जे किछु भेल छेलै, ओकरा दिमागमे रैव-रैव रएह प्रम आरि बहन छेलै । अमनमे रएह प्रमग दूर्युष्ठाक कावण छेलै । ओ भोले मोनु मामाक ओगठामसँ आँएन आ ओग तगारमे त्रैकपव चटि गेल । त्रैक चनरैत कान रएह घँषा ओकरा दिमागमे चलि बहन छेलै । बजनीक संग भए-रहिनक सरंख बहिनो ओकरापव ग आरोग नागन छेलै । मोनु मामा ओकरा कहल बहनि, “एतएसँ निकलि जाँड, आ कहिओ लै आँएरि !” “चलि जाँड” ग कहि ओकरा निकलि देन गेल छेलै । तखन मोनु मामाक बिशतमे ओ कियो ल बहे ? पाखलौ मोटि बहन डन । रएह रिचाव ओकरा दिमागमे ठीस मारि बहन छेलै आ ओ अचेतन अरुनामे चलि गेल छेलै । ठीक ओग कान अगिला मोडपव त्रैकक दूर्युष्ठा भ२ गेल बहे । अखनि धरि रएह रिचाव, रएह प्रम ओकरा दिमागकेँ सकनोबि बहन छेलै ।

कम्पनीक प्ररंजक द्वारा पढन गेल सरानक जरारि हम लै द२ बहन छेलिँ एँ जेल ओ गोष्ठा भ२ गेल आ ओग गोष्ठाकेँ ओ हमरा गानपव फाँटफाँट दु-तीन थापड मारि रैसन ।

पाखलोक गानपव थापडक निशान भ२ गेलै । ओ अगल गानकेँ हँसोतए नागन । तखापि ओकरा सोसे देहमे भ२ बहन दर्द ओकरा ओतेक कष्ट लै द२ बहन छेलै, दूदा भोवक घँषासँ जे ओकरा कलेजमे घार भेल बहे ओ अखनि धरि हबिखब बहे ।

•

सात-आठ माससँ पाखलोक रैरहाव देखि लोकलै रूमाँग जे पाखलौ पागन भ२ गेल छै ।

ओकर केस, दाढ़ी आ मोड रूँटि गेल छेलै आ ओग दाँत्रेमे ओकर दूँह बूका गेल बहे । ओकर माथ तँ सनकेते लै बहे । गान पिचकि गेल बहे आ आँखि धँसि गेल बहे । देखेमे ओ रूत रिचिब नापि बहन छेलै । जँ कोला अणजान लोक ओकरा देखि लोक तँ डरि जाँग ।

जग दिस त्रैकक दूर्युष्ठा भेल छेलै ओग दिस पाखलौ जगन चलि गेल बहे । ओ ओउँ चरि-पाँट दिस रिचोलेक आ राँदमे गाम घुमन । ओग दिससँ ओ गाममे अजरीरोगवीर तबहँ रोजए नागन आ संगे अगल हाथ सेहो हिनरैत बहे डन । रीच-रीचमे अगल आँखिकेँ सेहो रिचिब कपसँ छेँ-पैघ करैत बहे डन । ओ दिसभरि घुमिते बहे डन । जगन, भाँट, मल ाव, दोँडरे आदि ठाम घुमिते बहे डन आ



केतो रैस जाग छन । शारिकेन, कष्टहव, आमक गाड सरंगव चठैत बहे छन आ केतो दुब अणन
नजबि गडोल बहे छन । लोक सरहक करर बहे जे, “ओ रहुत डबि गेल छै ।”

ओकरा कार्याक देरटाव (एकरी आमो) गडम लल छै ।

नगाताव काजसँ अणुगहित बहरीक कारवै कसणी ओकरा लोकरीसँ निकालि देल बहे । यद्यपि
ओकर जेतेको हिसारि निकलेत बहे से कसणी ओकरा दइ देल बहे । ओ पांग पाखलो ओग दिन गामक
रूठ-रूजुआ आ लषा लोकनिमे रौंष्टि देल छन । दोसब दिन धरि ओकरा नग खएरी धरि पांग ले
बहले । ओ अणन शैष्टिक जेरी उणशैठिक आ ओग हितिये गाममे घुमए नागन । ओ मात्र घुमिबे बहे
छन । घुमेत कान ओकरा दिन-वातिक कोला पवराहि ले बहे छेले । एतेक धरि जे ओ रौद आ
रैबखामे सेहो घुमिबे बहे छन । ओकरा घुमरीक कोला सीमा ले बहे ।

ओकर किछु मीत लोकनि ओकरा कहियो कान टाह-पाणि दइ दैत बहे । कहियो कान खोखा-
पीआ सेहो दैत बहे, ले तँ ओ बुखले बहे छन । ए सरहक रौरजूद ओकर घुमर-हिमर रँग ले भेन
बहे । ओ कथला केगदी भएमे देखागक तँ कथला खेतक रौरूपव ।

ओ कहिओ केकरो भएसँ शारिकेनकेँ हाथ धरि ले नगोनक । केकरो कोला कष्ट ले देनक, एकरा
सरहक रौरजूद लोक ओकरासँ डबए नगन छन । एतए धरि जे छेष्ट-छेष्ट लषासभकेँ ओकर माए,
पाखलोक नाँउ नइ कइ डवारए नागन छेले ।

ओग दिन रैबखा भइ बहन छेले । पाखलो सोनु मामाक घब नगक पीपवक गाडक मिटाँ ठाठ
छन । ओकरा देखि बजनी दोग कइ ओकरा नगीच गेली ओकरा अणन घब रैजा अणनी ।

“सुनु दांग! एतए आँउ, देखु अहाँक मामा आँएन छथि ।”

बजनीक एते कहिते सुनु घबसँ दोगन एनी, ह्रदा पाखलोकें देखते डबि गेली ।

“अँ अहाँक मामा छथि ! हृणका नग जाँउ !”

बजनी सुनुकेँ कहनथि । तखन पाखलोक रैजएनापव सुनु ओकरा नग गेली । पाखलो ओकरा कोबामे
उँठोनक आ हएव मिटाँ बाधि देनके । सुनु हँसली । पाखलो सेहो हँसए नगन । दुनुक हँसी देखि
बजनीकेँ नीक नगले । पाखलो अणन हष्टनका शैष्टिक जेरीमे किछु तकराक प्रयास केनक ह्रदा ओकरा
किछु ओ ले भेष्टेले । तखन ओ अणन दोसब शैष्टिक जेरीमे हाथ देनक आ ओगसँ दुष्टी आमना निकालि
सुनुक हाथपव बाधि देनक । रौदमे ओ सुनुक माथपव अणन हाथ हएवनक, ओकरा गानपव दुना केनक
आ दुनाव-गनाव कबए नगन-

“रिठु ! अहाँ ए तबहक पगनपन ले कवन कव, ए तबहें पगनपन कइ अहाँ अणन की हानति रैना
लल छी से कहिओ देखल छी ? अहाँक गान पिचकि गेल अछि आ आँधि धँसि गेल अछि ।”

एते कहैत बजनीक आँधिये लोव आँरि गेले । अँ देखि पाखलोक मोन सेहो पसीज गेले आ ओ
रौजन-

“अहाँ कानि किएक बहन छी ?”

“ले तँ ! हम कानि कहाँ बहन छी ? ओहो ! अँधिये धरि अहाँ ठाठे छी ? आँउ रौचपव रैसु, हम
तीतव जा बहन छी, पहिले अहाँकेँ किछु खूआएर तखन हमसभ गप-सप कवर ।”

बजनी भोजन पवसए तीतव चलि गेली । पाखलो सुनुकेँ दुनाव कबए नगन । बजनी पाखलोक
जेन भोजन पवसि रौहव आँरि कहनी, “दनु भोजन नागि गेल अछि ।”

एते कहि ओ ओकर हाथ धूआरए नगनी ।

एतरैमे दवरँल्लापव किनको दुँही देखा पडले । दवरँल्लोक रौहव सोनु मामा अणन पएवक
जुता निकालि बहन छन । सोनु मामाकेँ देखि पाखलो घबसँ भागन आ रैहुत दुब धरि भागिते बहन ।

सोनु मामा, बजनी आ सुनु ओकरा देखिते बहि गेल ।

पाखलो आँरि गाममे छेष्ट-शैष्टिक जेन हँसीक पात्र रँगि गेल छन । लषा सरहक रंग आँरि शैष्टिक
लोक सभ सेहो पाखलोक मज्जाक उँडरए नागन छन । लषा सभतँ ओकरा पाँडुए नागि जाग छेले ।



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ओकवागव पाखव हेलै, ओकवा 'पागव पाखलौ कहि कहैठारै । अथनि पाखलौकेँ रँहूत गोप्पा आरि जाग
तँ ओ लणा सत दिस आँधि तबेव कइ देखैक जगसँ लणा सत डरि कइ भागि जाग ।

पाखलौ कनसाक दुर्रुतवागव रँसत डन । तखल लणा सरँहक एकठौ दन आरि धाकलै । सतठौ
लणा ओकवा नग जमा भइ गेल आ 'पागव पाखलौ, 'पागव पाखलौ' कहि ओकवा करँदरँए नागव ।

एतरेँमे ओ अगव माथ लाटवँ शुक कइ देनक आ हएव जेव-जेवसँ हँसैत रँजए नागव-

“हम पागव पाखलौ ! हा, हा, हा, हा... हम पाखलौ लै डी ! हम पागव डी ! पागव ! हा, हा, हा,
हा... ।”

“अहाँ पागलौ डी ओ पाखलौ सेहो डी ।”

लणा सत रँजए नागव । एकठौ लणातँ ओकवागव पाखव हेलै देनकै आ गढाति जाए कइ सतठौ लणा
सत हँसा-गँसा कवए नगव ।

Illustration-04



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“अहाँ पागन पाखजो, पाखजो, पाखजो ।”

पाखजो ओकवा सँरहक दिस आँधि तबेव क२ देखनक आ

“हम पाखजो ले, हम पाखजो ले”

कहेत अगन माथ ओगठाम चरुतवागव पष्ठकए नागन किछुए ऋषा पढाति ओ रौहेशे भए ओतए गिन पडन । तेकव रौद ओतए जमा भेन लषा सभकेँ कियो भगा देनके ।

दोसर दिससँ पाखजो बस्तुगव रौदमे बहए नागन । अगन गोव देह, गुनारी केशेमे काविथ पोतए नागन । अगन कावी देहकेँ देखि ओ हँसए नगन आ बस्तुसँ आरौ-जागरना केँ कहए नागन-
“देखू ! हमसँ अही सन रँनि गेलौ ल ?”

अगना आगकेँ कावी कबेले भवि-भवि दिस रौदमे ठाठ बहए नागन । काविथ नगा क२ कावी कएन गेन ओकव देह किछुए दिसमे रौवंग भ२ गेलौ ओ हएव पहिल-सन देखारँए नागन । ओ अगन सभठौ गुनारी केशे काष्ट जेनक आ गुवा ठकना भ२ गेन । मोछ आ दात्रिक सँग ओ अगन आँधिक पिपनी सेहो काष्ट जेनक । ओकव जेतेको गुनारी केशे छेलौ ओ सभठौ काष्ट जेनक जेकवा कावणेँ ओ ओवो रौदवंग नागए नागन । ओग दिस सँमकेँ ओ एकठौ आमक गाडक निटाँ जेतेको सुखनका पात छेलौ से सभठौ जमा जेनक आ ओगमे आगि नगा देनक । “हमर गोव टाम जवि जागक टाली आ हमरा कावी भ२ जागक टाली ।” एते सोचि ओ अगन फाँटन कपड । सहित आगिमे ठाठ भ२ गेन । ओकवा कपडामे आगि लागि गेलौ । ओग समय कियो आरौ ओकवा आगिसँ रौहव धकेन देनकेँ आ आगि मिना देनके । ओग आगिमे पाखजोक देहक किछु रोगसाँ मूनसि गेलौ । हाथ-गएव आ मुँहक टाम जवि गेलौ । देहमे लषाका निकनि गेलौ आ सौंसे देह नान भ२ गेलौ ।

Illustration-05



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अस्पतालमे जेतए ओकरा बाखन गेन बहे, ओतए ओ दू दिन रीतौनक। जहिना ओकर मोन कवी नीक भेलै ओहिना ओ दोसरै दिन अस्पतालक ड्रेसमे लागि गेन आ गाम आरि गेन। गामक लोककेँ अस्पतालक ड्रेसमे पाखलोक पागनपनक एकठा नर कप देखबैये एलै। ओ पहिले जकाँ गाममे एम्हब-ओम्हब घुमए लागन।

पातोलै जंगनमे किछु स्त्रीगण आ किछु हरती सब तकड़ि रीठै छेली। ओकरा सबकेँ देखि पाखलौ ओतए गेन। ओगमे शोभा सेहो छेली। ओकरा देखि ओ शोब पावनक आ ओकरा नग गेन। शोभा डरि गेली आ पाछु हठए नगली। पाखलौ ओकरा ककैले कहलकै दूदाँ ओ ककली ले भागए नगली। “ठहक, ठहक।” कहत पाखलौ ओकरा पाछु दौगए लागन।

दौलौत-दौलौत ओ ककन। जेबसँ टिकबैत शोभा गाम दिस भागली।

“पागन पाखलौ हरती सरहक पाछु पाछन छै।” जे गप सौंसे शेरबसे पसरि गेन।

•



बन्ध

तेसब दिन धरि हम उग घण्टाक संरक्षणमे मोटि बहन छेलौं। हम की केलौं? किएक केलौं? हमरा किछु ले बुनैमे आरि बहन छन। हम शोमारकेँ देखि ओकरा नग गेन छेलौं। ओकरा अराज नगेलौं। ठहक! एमे हमरा किछु रैसी खवाप ले देखा बहन छन, दूदा आरि यएह गप हमरा मारि बहन छन। हम किएक ओकरा ककए कहनिधं आ ओकरा पाछु किएक दोगनिधं? ए तबहक प्रथम हमरा दियागमे रैबि-रैबि घुमि बहन छन।

दूदा हँ... उग दिन खुरै मोष नागन बहए। उग दिन शोमारक उतए जएरै रार्य भ२ गेन बहनि। ओ हमरासँ रीखाह करैले तैयाव ले छेली आ हमरा पाखजो कह छेली, उग दूहेँ हम हूणका टिकरैले रीखा केलौं। हमरा पागन कह छेली ले। शी! शी! ज सभ ठीक ले। उग दिन ओकरा पएवमे कष्ट गवि गेन हेते। हम ज नीक ले केलौं।

बजनीक घबरना बजनीकेँ खेब अणषा घब न२ गेन छन। एहेन लोक सभ रँजे छन। हमरुँ एहेन किछु सुनल बहनि। ज गप साँट छे की? यएह जलैले आ बजनीक संरक्षणमे पुँडैले हम शोमारकेँ ककैले कहल बहिधं। शोमा हमर जाण-पहिटाणक छेली, दूदा हमरा द्वारा ठहक! ठहक! कहराक माले ओ किछु आव निकारि लेनथि की? आकि हम ओहिना हूणका ककए कहनिथि? हमरा कोणा जुरारि ले भेष्ट बहन छन।

गोरा जखनि सुतत्र भेन बह उग समए पाखजो लोकनि जंगनमे यत्र-तत्र घुका गेन बहए। बुखक कारणेँ ओ सभ जहवरना हन था-था क२ मवि गेन छन। हमरुँ ओहिना मवर की? ज मोटि हम डवि गेलौं। हम दुखदुखमे पर्छि गेलौं आ हमरा मोषमे डब समा गेन।

गाम जएरैसँ हम डवि बहन छेलौं। गाम जएरैमे हमरा नाज नाशि बहन छन। पाखजो हुरती सरहक पाछु भाषि बहन छेली। ओहो रापे जकाँ भ२ गेली। लोक सभ एहेन कहैत बहै। ओ सभ हमरा मारि देता, हमरा मावता आ जित्त गारि देता। हमरा छोड । क२ आलेरना आरि उग गाममे कियो बहरौ ले केली। दादीत नहि बहना आ गोरिन्द तँ गामे ले अरै छन। ओ तँ गामक लेन रीहवा लोक भ२ क२ बहि गेना अछि, आ हम, एकठाँ एसगव पाखजो।

गाम गेलौं तँ गामक लेना सभ हमरा पाखजो, पाखजो, पागन पाखजो कहि क२ कठौता। सभ कियो हमरा पाखजोएक नजबिसँ देखैत बहए। हम ओकरा सभ जकाँ देखैले की ले केलौं। कारी होगले लौदमे ठाठ बहलौं आ गुनारी दाढी-मोछ काँटि जेलौं। अतमे ह्योका होग धवि, यार होग धवि हम अणष देह जवरैत बहलौं। देहक चाम जवि गेन आ यारसँ खुण रँहि गेन। रासणाक कारणेँ जन्म नगरना पाखजण तँ आरि हमरा देहसँ टनिओ गेन हएत। ककानपव ठाठ भेन ए देहकेँ ज धवती मन्धवि लल अछि।

हमर पहिबुक कप रँदनि गेन अछि। सौमे देह कारी भ२ गेन अछि। लोकक कप बंग आ हमर कप बंगमे आरि कोणा हवक ले बहि गेन अछि। हम एतहि जन्मलौं, पैघ भेलौं आ हिनके सरहक रीच बहलौं। हम एतुके लोक सभमेसँ एक छी। ए माँक सन्कावमे पनलौं, रँडलौं, तखन हम पाखजो केना?

हमर माए हमर नाँउ 'रिठु' बखल छेली। ओ हमरा रिठुए कहि रँजलै छेली। हमर नाँउ रिठु छी। ए नाँसँ किनको तँ रँजागक चाली ले? आ जँ हमरा कियो रिठु कहि ले रँजलै तँ की हम रिठु ले भेलौं? हम रिठु छी! हम रिठु छी!

बजनीक शोव पावरि हम अखनि सुनि बहन छेलौं। हमर काण, मोष आ हमर सौमे सरदलारकेँ हम रिठु छी, ज बुनैमे आरि बहन छन।

जंगनक बन्ता पाव करैत हम पहाडिपव छटा गेलौं। उग पहाडिसँ मिटाँ बजनीक मान्धव देखागत बहै।

हम जखनि पहाडिसँ मिटाँ उतवि बहन छेलौं तखन हमरा सन्का आएन। बजनीक घबरना ओकरापव आरोप नगा ओकरा घबसँ रीहव निकारि देल बहै आ एक रँवख पछाति घब न२ गेन बहै।



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अथनि जँ हम बजनीसँ छैँ केजौँ तँ ओकरा घबरौँना हएव ओकरा घबसँ निकालि देते । हमरा एहेन नागन आ मंगे एकठा नष्टका सेहो । हम ओते ठाठ बहजौँ ।

हमर एक मोष कहै छन, जे हम ओतए गेलौँ तँ नीक लै हएत, आ दोसर मोष हमरा आगु दिस घीटि बहन छन । बजनीक घबरौँना ओकरा घब नइ जाए कइ नीक केल बहए । हमरा उँगव नगौँन गेन दोयारोपण आरि लै बहन । लोकक नजरिमे आरि हम पाक-साफ़ छेलौँ । ओहो ! नीके भेलै । हमरा दिमागसँ द्रुम्ब हष्टि गेन । तनार चलि गेन । आरि हमरा आजादी महसूस भइ बहन छन । आरि हम बजनी आ सुनुसँ छैँँ कबर । बजनी हमरा भाग मालै छथि आ हम ओकरा रँहिन । जँ गप हम ओकरा घबरौँनासँ कहरौँ । रौदमे हम निर्णय केलौँ आ पहाड़ी दल निटाँ उतब नगेलौँ ।

हम पहाड़ीसँ उतरि हानी-हानी जा बहन छेलौँ । ओतए फहराडाक चबौँह लषा मभ हमरा देखनक ।

“यएह देखु पाखलो ! यएह देखु पाखलो ! पाखला !”

ओकरा सरँहक जँ शौर सुनि हम डरि गेलौँ आ काँपए नगेलौँ ओ पहाड़ीक तनासँ दोगए नगेलौँ । पाखलो, पाखलो, एँ तबह अरौँज पाडूसँ आरि बहन छन । हम दौलौँत-दौलौँत पहाड़क सुनमान घाँटीमे पहुँच गेलौँ ।

साँसुक पहव ओग घाँटीक समुटा खेर रँडु मलोकम बुँमागत बहै । दूदा हम ओग दिस लेसी प्रियाण लै देलौँ । घाँटी पाव कइ हम कावणे गामक सीमानपर पहुँचलौँ । सीमानक नग एकठा रँडकाठा सीन बहै आ ओग सीन नग एकठा पोखरि सेहो बहै । बस्ता चलैत कान ओग पोखरिमे किछ गिलैक अरौँज एलै । हम पोखरि नग गेलौँ । एक ठाम पानिमे घुबसी होगत बहै आ पानिक बुँनरुना आरि बहन छेलै । चबौँह आकि आष कियो ओग पोखरिमे किछ खँकल हेते यएह मानि हम आगु-पाडु देख नगेलौँ, दूदा ओतए कियो ल छन । हम पोखरि कातसँ फसवीक फुनक एकठा कोट्टी तौडलौँ आ बजनीक घब दिस ओकरासँ छैँँ करैले हानी-हानी चनए नगेलौँ ।

Illustration-06



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

झुनहारी सौमकेँ हम बज्जनीक गाममे पएव बखलौं । ओतुका लोक सब घबसँ रौहव आरि हमरा देखै लागल । हम बज्जनीक घब नग पहुँच गेलौं । ओतए देहवीएसँ अरौज देनिँ झुन घबसँ कोनो उँतव लेँ अएन । हम ओतएसँ रँहलौं, देखलौं घबसँ रौहव स्रनु कानि बहन छेली । हम ओकवा अरौज नगेलिँ आ कोवामे उँठा जेलिँ । ओ हिट्टकी-हिट्टकी कानि बहन छेली । हम ओकवा टुंग कलैक प्रयास केलौं । अगल हाथक कमबीक फुनक कोठरी ओकवा हाथमे दऽ देनिँ । हम ओकवासँ पृछलिँ-

“माए केतए जेन छथि ? ”

“हम लेँ जलेँ छी । ”

“हुनका रँहूत माबल छथि । ”

“के, कथन ? ”

“रौरी । ”

Illustration-07



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सुनुक कहरे सुनि हमरा कनी अजगत-सग नागन । वाति भ२ गेन बहे । पड सक दु-तीन गोठे हमरा नग एना । पहिले तँ ओ लोकनि हमरासँ पृथताछ केननि आ ह्येव बजनीक खरिबि देननि । “जग दिससँ बजनीक घबरना ओकवा रागक ओगठामसँ आगल छन, ओग दिससँ शिवाँरी पीरि-पीरि क२ ओकवा मावए-पीठए नागन छन । तेकवा राँद तँ मित वाति ओकव घबरना बजनीसँ मगड । करे आ मारे । दु दिस पहिले ओ ओकवा घबसँ निकारि देल बहे आ तग दिससँ ओ घबक राँहले देहबीपव बहि बहन छेली ।”

सुनु हमरा कोनमे सुति गेन छेली । रँहूत वाति भ२ गेन बहे आ बजनी अखनि धरि आपस ले आएन छेली ।

•

बजनी पोखरिमे कुदि अगण जाण द२ देल छथि, अ गग जँ हमरा बसुसँ अरैत कान पता नागि जएते तँ हम निश्चये हुनका रँचा जेतियँ । कियो पोखरिमे पाखव ह्येकल हेते ए जेन पागिमे बुनबुना आरि बहन छेली, हम यएह बुनल छेली । ओग समय ओग पोखरिमे एहेन छन्दैरिदावक मू हुनकाएन बहे, अ हमरा पता ले छन ।

बजनीक घबरना ओकवा काँदोळते गामसँ आपस अगल बहे, ह्रदा किछुए दिस पछाति ओ ह्येव ओकवापव रएह आरोप नगेल बहे । बजनीकेँ मावए-पीठए नागन छेली आ एकदिस ओकवा दागि देल बहे । ओ ओकवा जरीते मारि देरए चाहत बहे । ओगदिस,

“पाखला हारती सरँहक पाडु नागन छे ।” हमरा सरँधमे ओकवा अ खरिबि भेटेन बहे । ओग दिससँ ओ बजनीकेँ देहबीक राँहले बाखए नागन बहे ।

बजनी तँग आरि गेन छेली आ ओग समय ओ मोहोरतीक त्रिगाव केनक आ आमेलव कवए छनि गेली ।

ओग पोखरिसँ हम जे ह्मबीक हुन निकालल छेली से रासुरमे ओ ह्मबीक हुनक कोठरी ले अहित बजनीक खोपामे नगेल गेन घबक रँछोटा मे हुनन योगवाक कनी बहे ! यादिक जेन सह्यद, सुगच्छित !



दम

बज्जीक यादिये हमरा आँखिये लोव आरि गेन छन आ हम ओग सम्य रएह पौछि बहन छेलौं, ए सभ यादिसँ हमरा मोनमे ओ सभ छि उँतवि कइ आरि बहन छन। हम पाखजो, ए माँषिक मर्यावमे पनन-रँठन रिठुँ छेलौं। ए माँषिक सरूत छेलौं।

रँठुत कानसँ अकाममे कावी-कावी मेघ घुमाछि बहन बहे। रिज्जलोकक मंग गबज्ज भइ बहन छेलै आ रँवखा सेहो भेन बहे, जेकवा कारषेँ नान माँषिक स्वर्ग चक दिस पमवि बहन बहे।

मिबगिसवा शुक होगमे अखनि पन्ध्र दिन राँकी बहे। मिबगिसवाक रँवखा शुक भेना पछाति गाममे खेती-रावीक काज आवँत भइ जागत बहे। ए मान सोनु मामाक खेत पवती बहि जेते, हमरा ए राँतक डव बहए। दु मास पहिल सोनु मामाकेँ नकरा मारि देल बहे। ओकव दहिना हाथ रँकाम भइ गेन बहे, जगसँ हाथ ले हिन मकेँ छन। अणष नातिनसँ मिलेने आ ओकवा देखेने ओ ओछु हितिये गोरिन्दक घब अएन छन। हूक माथक केशे उँरुव भइ गेन बहनि आ देह रँठुत कमजोव। एतए आरि ओ सुनुसँ भँष्ट केननि। सुनुसँ गप केननि, हूदा हमरासँ रँना गप केले ओ आगम चलि गेन। जँ ओ रँवखामे तीजि के काज कवता तँ निश्चिते हूक वोग आव रँठि जेतनि आ ओहू आरि हूकसँ कोला काज कर्न होगत छेननि। ओकवा एहेन रँमेले। आ तखन ओ खेतमे हाथ रँष्टरेले कम्पिणी मोसिक माथामे खरवि भेजेनक। हमरा रँमाएन जे सोनु मामाक खेत पवती बहि जेते, हूदा जाधरि हमरा देहमे जाण अछि ताधरि कोला डव ले।

भोवसँ दुपहर भइ गेन बहे। हम घबमे जेतए रँसन बनि ओते एकक पछाति एक यादि दोहवा बहन छेलौं। आरि सभ्ठा यादि खतम भइ गेन, हमरा एहेन नागन आ ओग सुन देरौन जेपव टिकुनि माँषिसँ टोवन गेन बहे ओकवा एकठक देखेत बनि। हम घबक टाक दिस नज्जवि दोगेलौं, तखन हमरा कम्पिणी मोसिक ओगठाम गेन सुनुक यादि आरि गेन। आँखिक सोमना ओकव निष्पाप, अणजान आ रँठुत सुनव मुति ठाठ भइ गेन। ओकव नहसुनियाँ आँखिसँ सुखद भार थकठ भइ बहन छेलै। तखन ओकव एतए ले होगक राँरज्जुदो हमरा ओकवा माथपव हाथ हेलैक आ ओकव टुन्ना नगक गछा भेन। एतरँमे केरौड खुजेक अरौज भेन। देखेलौं तँ सुनु घब आरि गेन छेलौं। हमरा देखि ओकव खूशी दुगुणा भइ गेलै। ओ दोग कइ एनी आ जाधरि हम ओकवा कोवा जेतिँ ताधरि ओ “मामा” कहि कइ हमरा मोव पावनक आ हमरा पएवसँ निगष्टि गेलौं।

Illustration-08

•

हव एक लोक आ माँषिक कथा

‘पाखजो’ उँपग्यासकेँ दुँगए तीष रँवखामे ख्याति भँष्ट गेन बहे। ‘वाह्रमठ’ द्वारा एकवा उँपग्यासिक प्रतिस्पर्धामे प्रवफार भँष्टेलै। कना अकादमीक प्रवफार सेहो भँष्टेलै। ‘पाखजो’ उँपग्यास पञ्जी अकामराणीसँ मवाठी भाषामे नरोणाठ सुकपमे प्रसारित भेन। ए तवहेँ मवाठी साहित्यमे सेहो पाखजो अणष उँपहिति दर्ज कनेनक।

लोकणी साहित्यमे ‘पाखजो’ अणष विशिष्ट शैलीक कारषेँ ठाठ बहन। तुकावाम शैष्टक ‘पाखजो’ क जर्डा आमक गाढ सदृश गोरक माँषिक गहवाङ्ग धरि पहुँच गेन। ए माँषिक स्वर्ग ‘पाखजो’क सोसे ज्जीरणमे सुवभित भइ बहन अछि। हूदा ‘पाखजो’सँ शीलकेँ जन्मन ए रँचकेँ अणषासँ दुव बखे। ओ अणषा-आपसँ सेहो साझाकोव ले कइ सकेए। यएह तनार, यएह रँखा पाखजोक हूदेमे घब रँना बहन अछि आ ए रँखसँ ‘पाखजो’ उँपग्यासक जन्म भेन।

लोकणी साहित्यमे ‘पाखजो’क कथा एकठै नर आ सुननु रिषय नइ के अएन अछि। ए उँपग्यास रिषय जेतके नर अछि ततरेँ मोनिक। पाखजोक रीजसँ गोरक एक सामान्य स्त्रीक गर्भसँ पलि कइ गोरक माँषिक मर्यावकेँ अणषरेले तडपि बहन अछि। पाखजोक कप, गुनारी केशे, नहसुनियाँ आँखि,



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

नाली गौराग अछि, दूदा ओकबापव जे संसार पाउन छन ओ गौराक माँक, हिन्दुक, शीलीक, रिठुक छन ।

बाँकी गौराबासी जकाँ ओहो पाखलो माँकएक रिठु छी, दूदा समाज एकटा पाखलोक बज्जबिसँ देखैए । ओ शीलीक रिठु छी । ओ रिठु छी, ओकवा एहेन रूमाग छै । दूदा समाज ओकवा रिठु ले रूमा दग छै । जेखक श्री तुकावामक बज्जबिसे ओ विरोधाभास देखबामे अएन । पाखलोक जीरणकेँ एक विरोध रूमा क२ एकपक्षीय आधावक बचना कएन अछि । पाखलोक कथा घुनि-मिनि वंगीन भ२ गेन अछि । पाखलो रूमा क२, रिठु रूमा क२...

ओहो एँ माँकक सपुत रूमा जाए, एँ गछाकेँ पाणि पाखलो पाँकक मोनमे एकठाँ रिमिष्ठ छाप छोडि दैत अछि । पाखलो उग्याम पठौत कान पाँकक सेहो सुन पाखलो रूमा जागत अछि । यएह एँ उग्यामक रिशेषता छी ।

उग्यामक निरेदन दु प्रकारसँ कएन गेन अछि- अध्याय 1,3,5,7,9 आ 10 मे पाखलो सुन निरेदन करैए आ 2,4,6,8मे जेखक सुन निरेदन करै छथि । निरेदनक ओ शीली केशे जकाँ गुथन अछि, यएह एकव सौंदर्य अछि । मात्र जेखकक निरेदनक कावणेँ एँ उग्यामक सौंदर्य ले रूमि जागत अछि । एँ तबहक शीली आमेनिरेदनामेक उग्यामक दोष, रूमन मेठरैक कावण रूमा गेन अछि । रिमनकेँ शीक जकाँ रूमा देरैक निरेदन शीलीक रूत शीक जकाँ चित्रा भेन अछि । ओ दुनु निरेदन शीली एक दोसबाक पुवक छी ।

तुकावाम मेठ उग्यामक सभ्ठा प्रसंगकेँ रूड सारवाणीक संग वंगल छथि । केतो अतिरेकक कावणेँ उग्याममे रूमा ले अएन अछि । उदहवण सुकण जखनि शीलीक रूमाकेव होग छै तखन ये प्रसंग नए ओ एँ तबहै निथे छथि ।

“ओग अहाव गुगुण जंगनमे ओ अजगव सविगहँ ओकवा अगणा कारुमे क२ जेनके । नाव-संथाव आ पात सभसँ अजरी तबहै अराज आरैए नगले । ”

शीलीक सुनक प्रसंग सेहो किछ अहिना अछि । पाखलो चितारकेँ आनि नगेरैक प्रयास करैए दूदा जखनि चितारकेँ आनि ले नलीए तँ दाने कहैए-

“राँडे ! अहाँक हावे अहाँक माएक चितारकेँ आनि ले नाणि बहन अछि ? आरँ की उगाए ? ”

पाखलोक दुँदेर किछ मेठमे जेखक एतए देखोले छथि । एकरेव पाखलो पोखरिमे नहरेए, ओ देखि रूमा भूँ “पाखलो पोखरि भूँ, केनक ! पाखलो पोखरि भूँ, केनक ! ” टिकवए नलीए । पाखलोकै यीचि क२ ओकवा सुँभसँ रूहि ओकव हान-रैहान क२ दैत अछि । जखनि शीली ओकवा छोडरैए जागत छथि, ओ ओकवा रूहि क२ बाथे । ओकवा देखि पाखलोकै नली छै-

“हमवा देहक गवम खुन दोगए नागन... रूदमे हमव खुन ठँटा भ२ गेन आ ओ गेलै: गेलै: हमवा शीवीसँ निकनि बहन अछि, रूमाए नागन..., हमवा रूमाएन जेगा हमवा गुवा शीवीक सभ्ठा खुन रूहि गेन हो ! ”

पाखलोक असहायता संगसँ खुजेए । एँ सभ्ठा प्रसंगकेँ जीरित बखरैक हेतु भायाशिली सेहो ओतरेँ प्रभारी अछि । प्रसंगक जेन उग्याम अछि । जेगा नालीसँ शीत पाणि रूहैए तखन रूत कोमन अराज अरैए, ओहिना एकव भाया अछि । सुनरि हरतीक पएवक पौजनीक अराजमे हेवा जाएरँ-सन, जग तबहै आँथि रूमा क२ क२ मात्र अराज सुनि जेत छी ओहिना ओग भायाक मन्द अराज ताकर, आ नय-तानकेँ ओ पाँककव रिजय प्राप्ति करैए । दुँदेमे घब रूमा जेत अछि ।

एँ तबहक राकामे भायाशिली रूत सुन्दर भ२ गेन अछि । जेखकक ओ भाया शीली प्रसंगक अणुसारेँ मोड जेरैक कावणेँ प्रसंगक सौंदर्य रूढि गेन अछि ।

पाखलो एँ उग्यामक नायक अछि । एँ रूडिबुक टाक दिस अणु पात्र सभ अछि, सोषु, दाने, शीली, बज्जनी, आलेस, गोरिन्द, सुनु ओ सभ्ठा द्वितीयक पात्र छथि । उग्याममे नायकक चित्र-चित्रा रूत शीक ठगे कएन गेन अछि । अणु दुँदेसँ निकनन रूखा, रेदनाक सहावे ओ जीरि बहन अछि । ओकवा मेठएरँन जेन ओ संघर्ष करैए । यएह पाखलोक जीरण छी । जँ अणु रूखामे नायक जडौतो



बहन अछि तथापि ओ ओग पबिसिमे ले बहै। केगदी भाँसे बरिबेन तोड़ले रहै आगु रँडे। हिन्दू आ ङमाङ्क रीच भेन नगड ले रहै नननरै, दूदा ओ अपन दर्द ले रिसबि सकन। ओकरा बुँमाग छै-

“हम ले तँ ङमाङ्क बनी, आ ले हिन्दू, एँ जेन हमरा छोडा देन गेन की? हमर सर्वेण दूनुसँ अछि, एँ जेन हमरा ओ लोकनि ले मावनी की?” अपन अस्तिरु ताके रँना ङ पाखजो सोनु मामाक रँठीकेँ अपन रँहिन बुँमि मिलाह करै, दूदा ओग मिलाहकेँ बजनीक अनारा कियो ले बुँमि सकन अछि। जगसँ ओकर रँथा ओरो तीरु भँ जगत् अछि। पाखजोक मलादनी देखेजे पाखजोक मनी भारणा रँड करैजे एतए लेखकेँ खुर अरसब जेठेन छन।

दादी एतए समाजक एकठी रँशिष्ठ रँकती छथि। पाखजोकेँ ङ गाम ले अपलोचक, एकवा रँरँजुद दादी ओकरा अपन रँठी गोरिन्दक सदुनी मिलाह देनक। ओकरा लोकवीपव नगोनक। रँगत लोकनीपव भेन अवाचारकेँ मेठरँजे ओ गाम भरिक केँद कठनक।

सोनु मामा मेहो पाखजोसँ मिलाह करै छथि दूदा अपन रँठीक खातिर ओ पाखजोकेँ भगा दग छथि। आन लोक जकाँ आ बजनीक पति जकाँ ओहो पाखजोपव आरोप नगरँजे। सोनु मामाक छिपेण ङगन्यासमे एना पछाति ओकर रँडिष्ठरु स्पष्ट ले भँ सकले। ओहिना शीलीक रँडिष्ठरु छिपेण जग ठगे होगक चाली से ले भँ सकन। ओकरा तुनणामे बजनीक रँडिष्ठरु नीक जकाँ उँतबि कँ आएन अछि। गोरिन्द बुँछिमान, होशियाव, आ तल्लबानी अछि, जे पाखजो सुग कहे-

“मल्लथ जनमक संगे मूँ सेहो अणवा संगे आनले अछि... धवती हो, जन हूँए रा अकाम, सभरँय मूँ निश्चित अछि।” एहेन तल्लबानीक शै, कहँरना गोरिन्द पाँठकेँ ले पँटे। हमरा ङ तल्लबानी हमर आजी देल बहनि, एहेन स्पष्टीकरण जँ गोरिन्दक दूहसँ भेजो अछि तथापि लणणमे गोरिन्द एतेक तल्लबानीक गण कँ सकैए से कनी अजगत नले, आ गोरिन्द एकठी बुँजुआ मण बुँमागत अछि। ओ तल्लबानी आ बुँछिमान होगतो एकठी ङमाङ्क हरतीसँ रँखाह कँ लेत अछि, आ अपन गाम छोडा दैत अछि। भावतमे बहि कँ पाग ले कमा सकैए एँ जेन आलेस दूरँग चलि जगत् अछि, दूदा पाखजो एँ गामक रँकृति, माँसँ छिपकन बहै। ङगन्यासक एकठी गाम एँ ङगन्यासक रँडिष्ठरु भँ गेन अछि। गोरिक माँसक रँशेयता एँ गाममे देखागत अछि। प्रप्रति सौंदर्यक छिपेण रँहूत नीक जकाँ दर्शाँउन गेन अछि।

बजनीकेँ “पाखजोमण नडकी होग छै। गुरारी केँ, नहनुनियाँ आँधि, गोब चाम। रासुरमे तँ ङ नडकी बजनीकेँ ओकरा अपन पतिसँ होग छै तथापि ओ नडकी देखेमे पाखजो-मण बुँमागत अछि एँ जेन ङ पाखजोक गैदागशि छै, ङ आरोप ओकर पति ओकरापव नगरँजे छै। बजनीकेँ पाखजोसँ नडकी होगक कावा ओकरा मोषमे पाखजोक प्रति शीघ्रित प्रेम भँ सकैए। एँ मलादनीक कावणेँ बजनीकेँ पाखजो मण नडकी होगक रँभारणा देखेमे आरि बहन अछि।

पाखजो गोरिक माँसक अछि। दूदा एकवा पति मोषमे एहेन शीका होगत अछि जे “पाखजोक सर्वेण केतो मवाठी साहित्यमे छिपेण, खालानकवक ‘चाली’ ङगन्याससँ तँ ले अछि? दूदा ‘पाखजोक रँशिष्ठता’ चालीमे ले अछि।

भूतकान आ रँतमान कानक स्पर्स एँ ङगन्यासमे अछि। कथाकक पबिसि पुवा करैमे दूनुक भूमिका अछि। एकठी बरिबि दिन सभठी पुवाण सवाँ एकठी गवज आ चामकक रँग खतम भँ जगत् अछि। ओगमे पाखजो अपन पहिचान ताकँ नले। हेव पाखजो अपन जनमसँ नए आगधरिक कथा अपन मोषमे सवाँ करै। दूपहव भँ जगत् अछि। सुनु पाखजोकेँ ‘मामा’ कहि ओकर पएव पकडाँ लेत अछि। कथाकक पबिसि पुवा भँ जगत् अछि। रँतमान कानसँ भूतकानमे जाँ कँ ‘पाखजो’ हेव रँतमानमे आरि जगत् अछि। ङगन्यासक प्राकप प्रशियाक योग्य अछि।

ङगन्यासक हलेक अध्यायक अपन महरु छै। हलेक अध्यायक शुक्रात आ रँशेय कणेँ अँ कनामेक अछि। निचाँक उँदाहण देखु-



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“ले अहाँ पाखला थिकौं ! पाखला मोमकेँ किछ कहल जे दूँत खोलल जेन आकि ओ ओतमँ टलि देली । पाखलाक मोम तँ रून् जे नागफनीसँ भवन बेगिस्तानक सदृश भऽ गेलै । ”

अध्याय छवि

“एँ गाममे हमर परिचय फकत एते अछि जे हमर नाँउ पाखला छी, हमर जाति पाखला छी, आ हमर धर्म सेहो पाखला छी । ”

अध्याय

पाँच

“बजरीकेँ गोबर बँग पसिल छै । ओकरा चन्द्रमाक एँ जामेना-सग रैठी होमक चली... काजब नगएना पछाति काबी आँखि रानी ओकरे सग सुनवि रैठी होमक चली । पूर्णियाक जामेना टाकदिस पसवत बहे आ जेना नहबक पानि रँहे छै तहिना ओकरा बडामे चन्द्रमा अपन जामेना पसावले छेलै । ”

अध्याय आठ

“पाखलाक गावपव थापड़क निशान भऽ गेलै । ओ अपन गावकेँ हँसोतए मागल । तथापि ओकरा सौंसे देहमे भऽ बहन दर्द ओकरा ओतेक कष्ट ले दऽ बहन छेलै, दूदा भोवक घँनासँ जे ओकरा कवेजमे यार भेन बहे ओ अखनि धवि हबिखब बहे । ”

अध्याय आठ

“ओ ग पौखिसँ हम जे फसवीक फुन निकालले छेलौं से रातुरमे ओ फसवीक फुनक कोठरी ले अगित्त बजरीक थोषामे नखीन गेल घबक रँहोटा से फुनन योगवाक कनी बहे । यादिक जेन सहैद, सुगर्हित । ”

अध्याय नउ

“ओ दोग कऽ एनी आ जाधरि हम ओकरा कोवा लेतिँ ताधरि ओ “गामा” कहि कऽ हमरा मोव पावक आ हमरा पएकसँ लिपटि गेली । ”

अध्याय दस

हलेक अध्यायक एँ तबहक कनामेक अत छै । हलेक अध्यायक अतमे उपन्यासक अत भऽ सकैए । जे उपन्यास एतेक कनामेक अछि । गोराक सरतव्रताक पार्श्वसँ जे कथा बँग आलेए । सरतव्रता भेटैसँ पुरिहि शुक भेन जे कथा सरतव्रता पछागतो चलेत बहेए । दूदा उपन्यासमे सरतव्रताक विषय जेतेक एराक चली, से ले आरि सकन अछि । दूदा एँ कावसेँ एँ उपन्यासमे रौधा आरि गेल छै, से ले छै । ओ ग समेक तीव्र सरतव्रता आन्दानक पदछि जे उपन्यासमे अरिंते तँ एकव पृथुभूमि आँखिकेँ जँचते ।

कार्यो टिफ जंगममे शानीक रँनाकोब करैए, रौदमे रँहूत दिस पछाति, पाखलाक जलमक रौदो ओ शानीसँ भेटै करैए । रिना रँतौल ओकरा मोनमे शानीक प्रति मिलह जागि जाग छै आ रँनाकोबक



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

तीव्रता कम भऽ जाग छै । कार्मो टिहक ज्ञ श्रुति पाठककेँ उंथेडूँसमे डालि दग छै । ...कार्मो टिहकेँ रेंव-रेंव शौलीक ओत देथि लोकसभ, “शौलीक भऽ आ ।” कहै छै आ शौलीक संरक्षमे- “ओ पाखलोककेँ अपन घबमे बाथि रंधा शुक कऽ देल छै रा अपन नर दुनियाँ रेंसा लेल अछि ?” कहै छै । रेंवाकोवक तीव्रता कम कऽ लेखक पाठककेँ की कहए छै छथि ? ज्ञ रूंममे ले अरैए । पाखलोक ‘रिठु’ एकरैव कहै छै-

“ओ एकठाँ पतिव्रता नावी छेनी” ह्दना एकरो कोला माल ले निकलैए ।

एँ तबहक किछु दोष एँ उंपन्यासमे अछि, ह्दना ज्ञ सूझा दृष्टिँ देखल रिना नजबिमे ले अरैए ।

पाखलो उंपन्यास मात्र पाखलोक कथा ले छी । एकठाँ मष्टिक कथा छी । हलक लोकक, हलक मष्टिक कथा छी । एहेन कथा गतिहास रंतलैए । हलक लोककेँ गंघाणक कपमे जरीण सितेरै कान ओकरा अपन घब, अपन लोक, अपन समाजक आरंभकता होग छै । अपन संकृतियोक आरंभकता होग छै । जँ ग सभ ओकरा ले भेटै छै आकि ओकरा एँ सभसँ दूब बाथि देल जाग छै तखन ‘पाखलोक उंदा भऽ जाग छै ।

मोषक ज्ञ भारणा, रेदना आ रेंथा मात्र गोरक संकृतिमे उंपजन एकठाँ पाखलो लोकक ले छी, अपिभू सभ लोकक कथा छी । केरन रातरका ओ संदर्भ रेंदनि जाग छै । मुन भारणा वई छै ‘रिठु’ रेंनि कऽ जरीक । सुन, कान आ मर्यादा एँ उंपन्यासमे ले अछि । एंमे रेंड कएन गेल भारणा, हलक लोकक अर्नत कथा छी, रेदना छी । लोक सभमेसँ हलक ‘पाखलो ‘रिठु’ रेंनि कऽ जरीलै संघर्ष करैए ।

(लोकेश ठाँगस, दिरानी अंक, 1981 मे प्रकाशित आलेखक अंश, अंशिक मसुठकव)

विदेह श्रुत अंक भाषापाक बचनलेखन-

गंघाणिकोय-मैथिली- / मैथिलीकोय-गंघाणिकोय- प्राजेकठकेँ आंगु रेंड डि, अपन सुमार आ योगदान ज्ञ-मेन द्वारा ggajendra@videha.com पब पठाडु ।

१.भावत आ लपावक मैथिली भाषा-ऐतानिक लोकनि द्वारा रेंगाओन मणक गेवी आ २.मैथिलीमे भाषा संपादन पाठक्य

१.लपाव आ भावतक मैथिली भाषा-ऐतानिक लोकनि द्वारा रेंगाओन मणक गेवी

१.१. लपावक मैथिली भाषा ऐतानिक लोकनि द्वारा रेंगाओन मणक उंटाका आ लेखन गेवी

(भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादरक धाकाकेँ पूर्ण कपसँ सभ नऽ निर्धारित)

मैथिलीमे उंटाका तखा लेखन

१. पंथमासक आ अंगुनाक: पंथमासकवास्तुगत ७, एं, ण, एं एं म अरैत अछि । संकृत भाषाक अंगुनाक शैलक अंगुमे जाहि रसक अंशक वईत अछि ओही रसक पंथमासक अरैत अछि । जेना-



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अक्षर (क रक्षक बहुरीक कावशे अक्षुमे ७ आएन अक्षि ।)

पञ्च (च रक्षक बहुरीक कावशे अक्षुमे ९ आएन अक्षि ।)

खण्ड (छ रक्षक बहुरीक कावशे अक्षुमे १ आएन अक्षि ।)

सङ्घि (त रक्षक बहुरीक कावशे अक्षुमे १ आएन अक्षि ।)

खञ्ज (प रक्षक बहुरीक कावशे अक्षुमे १ आएन अक्षि ।)

उपगर्भित रात मैथिलीमे कम देखन जागत अक्षि । पञ्चमाक्षरक रैदनामे अक्षिकामि जगहपव अक्षुमावक प्रयोग देखन जागु । जेना- अक, पट, खड, सधि, खंत आदि । राकवणरिद पण्डित गोरिन्द नाक कहरी छनि जे करञ्ज, चरञ्ज आ ठरञ्जसँ पूर्ण अक्षुमाव निखन जाए तथा तरञ्ज आ परञ्जसँ पूर्ण पञ्चमाक्षर निखन जाए । जेना- अक, टटन, अडा, अक्षु तथा कम्पण । हुदा हिन्दीक निकट बहन आधुनिक लेखक एहि रातकेँ नहि मालेत छथि । ओ लोकनि अक्षु आ कम्पणक जगहपव सेहो अत आ कम्पण निखेत देखन जागत छथि ।

नरीण पक्षति किछु स्वरिवाञ्जक अरुष्ट छैक । किएक तँ एहिमे समय आ स्वाणक रैचत होगत छैक । हुदा कतोक रैव हनुलेखन वा हुदनामे अक्षुमावक छोट सन रैन्दु स्पष्ट नहि भेनासँ अर्थक अर्थ होगत सेहो देखन जागत अक्षि । अक्षुमावक प्रयोगमे उँटाका-दोषक सन्धारणा सेहो ततरै देखन जागत अक्षि । एतदर्थ कसँ न२ क२ परञ्ज धरि पञ्चमाक्षरक प्रयोग कवरि उँटित अक्षि । यसँ न२ क२ त्र धरिक अक्षरक सञ्ज अक्षुमावक प्रयोग कवरिमे कतहु कोणा बिराद नहि देखन जागु ।

२.४ अ त : ठक उँटाका “व ह”जकाँ होगत अक्षि । अतः जतः “व ह”क उँटाका हो ओतः मात्र ठ निखन जाए । आष ठाम खाली ठ निखन जाएरौक छली । जेना-

ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेउँआ, ठसँ, ठेरी, ठाकनि, ठाँठ आदि ।

ठ = गढाँग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रँठरौ, साँठ, गाठ, बीठ, दाँठ, सीठ, पीठ आदि ।

उपगर्भित शिष्ट, सबकेँ देखनासँ अ स्पष्ट होगत अक्षि जे साधाकातया शिष्टक शुक्रमे ठ आ मर्या तथा अक्षुमे ठ अरैत अक्षि । एह निगम ड आ डक सम्बन्ध सेहो नागु होगत अक्षि ।

२.५ अ रँ : मैथिलीमे “र”क उँटाका रँ कएन जागत अक्षि, हुदा ओकवा रँ कपमे नहि निखन जाएरौक छली । जेना- उँटाका : रँगुनाथ, रँद्या, नरँ, देरँता, रँष्टु, रँशि, रँदना आदि । एहि सबक स्वाणपव फ्रान्शि: रँगुनाथ, रँद्या, नर, देरता, रँष्टु, रँशि, रँदना निखरौक छली । सामान्यतया र उँटाकाक लेन ओ प्रयोग कएन जागत अक्षि । जेना- ओकीन, ओहन आदि ।

४.५ अ ज : कतहु-कतहु “ज”क उँटाका “ज”जकाँ करैत देखन जागत अक्षि, हुदा ओकवा ज नहि निखरौक छली । उँटाकामे यरु, जदि, जहुना, जुग, जारत, जोगी, जदु, जम आदि कहन जाएरौना शिष्ट, सबकेँ फ्रान्शि: यरु, यदि, यहुना, यग, यारत, योगी, यदु, यम निखरौक छली ।



मनुषिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३.ए आ य : मैथिलीक रतनीमे ए आ य दुनु लिखन जागत अछि ।

प्राचीन रतनी- कएन, ज्ञाए, हेएत, माए, भाए, गाए आदि ।

नवीन रतनी- कयन, ज्ञाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।

सामान्यतया शिष्टक मुकमे ए मात्र अरैत अछि । जेना एहि, एना, एकव, एहन आदि । एहि शिष्ट, सभक स्त्राणपव यहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि कवरौक छी । यद्यपि मैथिलीभाषी थारु सहित किछु जातिमे शिष्टक आवस्थामे “ए”केँ य कहि उँटावण कएन जागत अछि ।

ए आ “ग”क प्रयोगक सम्दर्भमे प्राचीन पद्यतिक अङ्गसवण कवरौ उँगहाउ मणि एहि पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएन गेल अछि । किएक तँ दुनुक लेखनमे कोना सहजता आ दुकहताक रीत नहि अछि । आ मैथिलीक सरसाधारणक उँटावण-शैली यक अपेक्षा एमँ रैसी निकट छैक । थारु क२ कएन, हएँ आदि कतिपय शिष्टकेँ केँन, हेँ आदि कएमे कतहु-कतहु लिखन जाधरँ सेहो “ए”क प्रयोगकेँ रैसी समीप प्रमाणीत करैत अछि ।

३.हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पदसवामे कोना रीतपव रँन दैत कान शिष्टक पाछाँ हि, हू नगाउन जागत छैक । जेना- हुनकहि, अणनहु, ओकवहु, तकोनहि, टोष्टहि, आणहु आदि । रूदा आधुनिक लेखनमे हिक स्त्राणपव एकाव एरँ हूक स्त्राणपव ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत अछि । जेना- हुनके, अणना, तकाने, टोष्ट, आना आदि ।

१.य तथा थ : मैथिली भाषामे अदिकशितः यक उँटावण थ होगत अछि । जेना- यडल (थडल), योडनी (थोडनी), यष्टकोण (थष्टकोण), वृषेण (वृथेण), सन्नाय (सन्नाथ) आदि ।

+.धुनि-जोप : निम्नलिखित अवस्थामे शिष्टसँ धुनि-जोप भ२ जागत अछि:

(क) फिनाङ्गु प्रत्य अगमे य रा ए वृत्त भ२ जागत अछि । ओहिमे सँ पहिले अक उँटावण दीर्घ भ२ जागत अछि । ओकव आगाँ जोप-सूचक छिन् रा रिकारी (/ २) नगाउन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) जेन, उँठए (उँठय) पडतोक ।

अपूर्ण कप : पठ गेनाह, क जेन, उँठ पडतोक ।

पठ२ गेनाह, क२ जेन, उँठ२ पडतोक ।

(ख) पुरिकानिक प्रत्य आस (आए) प्रत्यमे य (ए) वृत्त भ२ जागछ, रूदा जोप-सूचक रिकारी नहि नगाउन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : थाए (य) गेन, पठाय (ए) देरँ, नहाए (य) अनाह ।

अपूर्ण कप : था गेन, पठा देरँ, नहा अनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्य अक उँटावण फिनापद, सङ्गा, ओ विशेषा तीसुमे वृत्त भ२ जागत अछि । जेना-



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पूर्ण कप : दोसबि मागिनि छल गेलि ।

अपूर्ण कप : दोसब मागिनि छल गेल ।

(घ) रतमान प्रदन्तुक अन्तिम त बृष्टु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : पठैत अछि, रँजैत अछि, गरैत अछि ।

अपूर्ण कप : पठै अछि, रँजै अछि, गरै अछि ।

(ङ) फ्रियापदक अरसाण गक, उँक, एँक तथा हीकमे बृष्टु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप: छियोक, छियेक, छलीक, छोक, छैक, अरिठैक, होगक ।

अपूर्ण कप : छियौ, छिये, छली, छौ, छै, अरिठै, होग ।

(च) फ्रियापदीय प्रत्यय ह्, ह् तथा हकावक लोप भ२ जागछ । जेना-

पूर्ण कप : छहि, कहनहि, कहनहूँ, गोनह, बहि ।

अपूर्ण कप : छनि, कहनि, कहनौँ, गोनह, बग, बघि, लै ।

९. ध्रुमि आनासुका : कोला-कोला सुब-ध्रुमि अपना जगहसँ हष्टि क२ दोसब ठाम छनि जागत अछि । खाम क२ ज्ञान ग आ उँक सङ्क्रममे अ रात नागु होगत अछि । मैथिलीकवा भ२ गेल शिष्टक मया रा अन्तमे जँ दानु ग रा उँ आरैए तँ ओकव ध्रुमि आनासुकित भ२ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना- मेनि (मेगल), पाणि (पागल), दानि (दागल), माष्टि (मागष्टि), काडु (काडुड), मासु (माडुस) आदि । द्वाद तसेम शिष्ट, सभमे अ निखम नागु बहि होगत अछि । जेना- बघिकेँ बगम आ सुवागुकेँ सुवाडुस बहि कहन जा सकैत अछि ।

१०. हन्तु ()क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हन्तु ()क आरंभकता बहि होगत अछि । कावण जे शिष्टक अन्तमे अ उँटावण बहि होगत अछि । द्वाद संस्कृत भाषासँ जहिनक तहिना मैथिलीमे आएन (तसेम) शिष्ट, सभमे हन्तु प्रयोग कएन जागत अछि । एहि पौथीमे सामान्यतया संपूर्ण शिष्टकेँ मैथिली भाषा सङ्ग्रही निखम अनुसव हन्तुबिनीष बाखन गेल अछि । द्वाद आकवण सङ्ग्रही प्रयोजक लेन अवारंभक आनपव कतहू-कतहू हन्तु देन गेल अछि । प्रसूत पौथीमे मैथिली लेखक प्राटल आ नरीन दनु शैलीक सवण आ समीटल पक्ष सभकेँ समेटि क२ रर्षि-रिगाम कएन गेल अछि । श्रुष आ समयमे रँचतक सङ्ग्रहि हन्तु-लेखण तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सवण होरँरना हिमरँसँ रर्षि-रिगाम गिनाउन गेल अछि । रतमान समयमे मैथिली माह्रभाषी पर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक लेख लेरँ पडि बहन परिश्रेष्ठमे लेखणमे सहजता तथा एककपतापव धाण देन गेल अछि । तखन मैथिली भाषाक मुन विशेषता सभ कृष्टि बहि होगक, तादु दिस लेखक-मन्डन सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. बाजारताव यादरक कहँ छनि जे सवणताक अनुसङ्गणमे एहन अनुस्रु किमहू ल आरँ देरँक चाली जे भाषाक विशेषता छहिये पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. बाजारताव यादरक धाकाकेँ पूर्ण कपसँ सङ्ग न२ निर्धारित)



१.२. मैथिली अकादमी, षटना द्वारा निर्यावित मैथिली लेखन-गेव

१. जे शेट्ट, मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आग धरि जाहि र्भनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः तहि र्भनीमे निखन जाय- उदरहवणार्थ-

ग्राह

एखल

ठाग

जकव, तकव

तनिकव

अछि

अग्राह

अखल, अखलि, एखल, अखली

ठिमा, ठिना, ठाग

जेकव, तेकव

तिनकव । (रैकपिक कर्षे ग्राह)

अँड, अहि, ए ।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कर्षे रैकपिकतया अर्षणाउठे जायः भ२ गेठ, भ३ गेठ रा भॣ गेठ । जा बहन अछि, जाय बहन अछि, जाँ बहन अछि । कव गेठानह, रा कवय गेठानह रा कवय गेठानह ।

३. प्राचीन मैथिलीक 'ह' ध्वनिक स्थानमे 'ष' निखन जाय सकैत अछि यथा कहलनि रा कहलहि ।

४. 'अ' तथा 'उ' ततय निखन जाय जत सप्रुतः 'अग' तथा 'अँ' सदृश उँचाका गप्रु हो । यथा- देथेत, डलोक, लौखा, लौक गलदि ।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शेट्ट, एहि कर्षे प्रयाउ होयतः जेठ, सैठ, गँठ, उँठ, लैठ तथा दैठ ।

६. ह्रस्व गकावात शेट्टमे 'ग' के अर्षु कवरँ सामान्यतः अग्राह धिक । यथा- ग्राह देधि आरँह, गानिनि गेनि (संनय यात्रमे) ।

७. स्रुतँव अर्षु 'ए' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उँह्वण आदिमे तँ सखारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकपिक कर्षे 'ए' रा 'य' निखन जाय । यथा:- कयन रा कएन, अयनानह रा अएनानह, जाय रा जाँ गलदि ।

८. उँचावणमे दु स्रवक रीट जे 'य' ध्वनि स्रतः आरि जागत अछि तकवा लेखमे स्थान रैकपिक कर्षे देन जाय । यथा- धीखा, अँठेखा, रिखाह, रा धीया, अँठेया, रियाह ।

९. सांन्यामिक स्रुतँव स्रवक स्थान यथार्मँभर 'ए' निखन जाय रा सांन्यामिक स्रव । यथा:- मैएग, कमिएग, किवतमिएग रा मैअँ, कमिअँ, किवतमिअँ ।

१०. कावकक रिभक्तिक निम्नलिखित कर्षे ग्राह:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे । मे मे अर्षुनाव



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सर्वाथा लज्जा थिक । 'क' क रैकल्पिक रूप 'केव' बाखन जा सकैत अछि ।

११. पुरिकातिक फियापदक रौद 'कय' रा 'कए' अरग रैकल्पिक रूपेँ नगाउन जा सकैत अछि । यथा:-
देथि कय रा देथि कए ।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ गवादि लिखन जाय ।

१३. अर्छ 'ष' ओ अर्छ 'श' क रँदना अश्रमाव बहि लिखन जाय, किंतु भागाक सुरिधार्य अर्छ 'उ', 'ए', तथा 'ण' क रँदना अश्रमावो लिखन जा सकैत अछि । यथा:- अर्छ, रा अर्क, अश्रन रा अचन, कर्ष रा कर्ठ ।

१४. ठनत छिन निश्रयतः नगाउन जाय, किंतु रिभञ्जिक संग अकारांत प्रयोग कएन जाय । यथा:-
श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।

१५. सब एकन कावक छिन शिष्टमे सँ क लिखन जाय, हँ क बहि, संश्रु रिभञ्जिक हेतु हवाक लिखन जाय, यथा घब पबक ।

१६. अश्रमाविकरै चन्द्ररिन्दू द्वावा रञ्ज कयन जाय । पर्वतु रूदनाक सुरिधार्य हि समाण जष्टन मात्राणव अश्रमावक प्रयोग चन्द्ररिन्दूक रँदना कयन जा सकैत अछि । यथा- हि केव रँदना हि ।

१७. पूर्ण रिवाग पामीसँ (।) सृष्टि कयन जाय ।

१८. समासु पद सँ क लिखन जाय, रा हाँगेणसँ जोडि क , हँ क बहि ।

१९. लिख तथा दिख शिष्टमे रीकावी (२) बहि नगाउन जाय ।

२०. अक देरणागवी रूपमे बाखन जाय ।

२१. किछ ध्रुनिक सेव नरीन छि रँनरौउव जाय । जा अ बहि रँनव अछि तँरत एहि दुनु ध्रुनिक रँदना पुरिरत् अया/ आया/ अय/ आय/ आउ/ अउ लिखन जाय । आकि ए रा अँ सँ रञ्ज कएव जाय ।

ह.।- लोारिन्दू माँ ११/१३ लीकासु अरुव ११/१३ सुरेन्द्र माँ सुम ११/०१/१३

२. मैथिलीमे भाषा ससादन पाठकेय

२.१. उँचावा निर्दिने: (रौले कएव रूप ज्ञाह):-

दनु न क उँचावामे दौतमे जीह सँत- जेना रौजू नाम , रूदा ण क उँचावामे जीह मुर्धामे सँत (ले सँतैए तँ उँचावा दोय अछि)- जेना रौजू गणेशे । तावरा शैमे जीह तावसँ , शये मुर्धसँ आ दनु समे दौतसँ सँत । निमाँ, सब आ शोषा रौजि कइ देखु । मैथिलीमे श केँ रैदिक संयुत जकाँ अ सेहो उँचवित कएन जागत अछि, जेना बर्या, दोय । य अलको स्थानणव ज जकाँ उँचवित होगत अछि आ ण ड जकाँ (यथा संयोग आ गणेशे संज्ञोग आ

पडसे उँचवित होगत अछि) । मैथिलीमे र क उँचावा रँ ने क उँचावा स आ य क उँचावा ज सेहो होगत अछि ।



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ओहिना क्रय ग रौमीकान मैथिलीमे पहिल रौजन जागत अछि काका देरनागवीमे आ मिथिलाक्षरमे क्रय ग अक्षरक पहिल मिथिली जागत आ रौजलो जखरीक टाली । काका जे हिन्दीमे एकव दोषपूर्ण उँटाका होगत अछि (मिथिल ठँ पहिल जागत अछि द्वाद रौजन रौदमे जागत अछि), से शिक्षा पछतिक दोषक काका ह्य सभ ओकव उँटाका दोषपूर्ण ठगसँ क२ बहन छी ।

अछि- अ ग ड अँठ (उँटाका)

छथि- छ ग थ छैथ (उँटाका)

गहूँटि- ग हूँ ग ट (उँटाका)

आरौ अ आ ग ज ए ई ओ उ अ अः म ई सभ जन मात्रा सेहो अछि, द्वाद एमे ज ए ई ओ उ अ अः म केँ सहायक कगमे गनत कगमे प्रयुज आ उँटाका कएन जागत अछि । जेना म केँ वी कगमे उँटाका कवरौ । आ देखियौ- ई जन देखिओ क प्रयोग अछि । द्वाद देखिई जन देखियौ अछि । कू सँ हूँ धरि अ समितित तेनासँ कू सँ हूँ रौलीत अछि, द्वाद उँटाका कान हनुप्र यउ मीदक अक्षरक उँटाकाक प्रवृत्ति रौठन अछि, द्वाद ह्य जखन मलाजमे जू अक्षरमे रौजेत छी, तखना प्रकाका लोककेँ रौजेत स्वररहि- मलाज२, रासुरमे ओ अ यउ जू = ज रौजे छथि ।

ह्यव ऊ अछि जू आ ए३ क सहायक द्वाद गनत उँटाका होगत अछि- गा । ओहिना अ अछि कू आ य क सहायक द्वाद उँटाका होगत अछि छ । ह्यव म् आ व क सहायक अछि श्री (जेना श्रीमिक) आ स आ व क सहायक अछि स (जेना मिस) । ए तेन त+व ।

उँटाकाक अँटियो हागत विदेह आर्कागर <http://www.videha.co.in/> गव उँगाहँ अछि । ह्यव केँ / सँ / गव पूरि अक्षरसँ सँ क२ लिखु द्वाद ठँ / क२ छै क२ । एमे सँ ये पहिल सँ क२ लिखु आ रौदरौना छै क२ । अकक रौद ठँ लिखु सँ क२ द्वाद अथ ठग ठँ लिखु छै क२ जेना

छसँ द्वाद सभ ठँ । ह्यव उअ म सतम मिथु- छठम सतम लै । घवरौमे रौवा द्वाद घवरौमे रौवा प्रयुज कक ।

बहए-

बह द्वाद सकेए (उँटाका सकेए-ए) ।

द्वाद कखला कान बहए आ बहै ये अर्थ तिम्रता सेहो, जेना से कया जगहमे पाकिंग कवरौक अग्रस बहै ओकवा । पछुनागव गता नागन जे तुण्डुण नामा जे डागरव कगठ हसक पाकिंगमे काज करौत बहए ।

छलौ, छनए ये सेहो ई तबहक तेन । छनए क उँटाका छन-ए सेहो ।

सयोगल- (उँटाका सयोगल)

केँ/ क२

केव- क (

केव क प्रयोग प्रथमे लै कक , प्रथमे क२ सके छी ।)

क (जेना बायक)

बायक आ सँग (उँटाका बाय क / बाय क२ सेहो)



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सँ- स२ (उँचाव)

चन्द्रबिन्दु आ अक्षराव- अक्षरावमे कठ धरि प्रयोग होगत अछि रूदा चन्द्रबिन्दुमे ले । चन्द्रबिन्दुमे कलक एकावक सेहो उँचाव होगत अछि- जेना वामसँ- (उँचाव वाम स२) वामकेँ- (उँचाव वाम क२/ वाम के सेहो) ।

केँ जेना वामकेँ भेन हिन्दीक को (वाम को)- वाम को= वामकेँ

क जेना वामक भेन हिन्दीक का (वाम का) वाम का= वामक

क२ जेना जा क२ भेन हिन्दीक कव (जा कव) जा कव= जा क२

सँ भेन हिन्दीक से (वाम से) वाम से= वामसँ

स२ , त२ , त , केव (गद्यमे) एते टाक शब्द सरहक प्रयोग अराछित ।

के दोसर अर्थे प्रयाग भ२ सकैए- जेना, के कहनक ? रिभक्ति “क”क रँदना एकव प्रयोग अराछित ।

बघि, बहि, ले, बग, बँग, बग, बग ए सतक उँचाव आ लेखन - ले

ओर क रँदनामे ब्र जेना महर्गुर्ण (महओरगुर्ण ले) जतए अर्थ रँदनि जाए ओतहि मात्र तीस अक्षरक सहायक प्रयोग उचित । सप्तति- उँचाव स स ग त (सप्तति ले- कावा सही उँचाव आसानीसँ सञ्चर ले) । रूदा सर्रोतम (सर्रोतम ले) ।

बाह्रिय (बाह्रिय ले)

सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन)

पोडिये/ पोडि लेन/ पोडि लेन

पोडिये/ पोडि (अर्थ परिवर्तन) पोडि/ पोडि

ओ लोकनि (हठा क२, ओ से रिकारी ले)

ओर ओरि

ओरि/

ओरि लेन/ ओरि व२

जवरोँ बैसरोँ

गँचओर्याँ

देखियोक/ (देखिओक ले- तहिना अ से द्रव्य आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अराछित)

जकाँ / जेकाँ



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

तँग/ तँ

हेत / हत

नमि/ नहि/ नँग/ नगँ/ ले

सौंस/ सौसे

रँच /

रँचि (सोबोव)

गाए (गाँग नहि), ऋदा गाँगक दूध (गाँगक दूध ले।)

बहलौ/ गहिलौ

हमलि/ थलि

सरँ - सभ

सरँहक - सभहक

धवि - तक

गग- रौत

रूसरँ - समसरँ

रूसलौ/ समसलौ/ रूसलहँ - समसलहँ

हमरँ थार - हम सभ

थारि- थारि कि

सकैड/ कबैड (गद्यमे प्रयोगक आरंभकता ले)

होअल/ होलि

जाअल (जानि ले, जेना देन जाअल) ऋदा जाअि-रूसि (अर्थ परिवर्तन)

गअरँ/ जाअरँ

थारु/ जाउ/ थारु/ जाउ

ये, कै, सँ, गव (शेदिसँ सँ क२) तँ क२ ध२ द२ (शेदिसँ सँ क२) ऋदा दूरी रा रँसी रिभञ्जि संग
बहनागव गहिल रिभञ्जि ठाकै सँ उँ। जेना एमे सँ ।

एकरी, दूरी (ऋदा क२ ठी)

रिंकारीक प्रयोग शेदिक अन्तमे, रीटमे अन्तरेक कएँ ले। आकारावु आ अन्तमे अ क रौद रिंकारीक
प्रयोग ले (जेना दिअ)



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

. आ/ दिय , आ, आ ले)

अपेन्द्रार्थीयक प्रयोग रिक्कारिक रँदनामे कवरँ अशुचित आ मात्र हर्षक तकनीकी न्यूनताक परिचायक)-
उना रिक्कारिक संस्कृत रूप २ अरग्रह कहन जागत अछि आ रतनी आ उँचावा दूनु ठाम एकव जाग बहेत
अछि/ बहि सकैत अछि (उँचावणमे जाग बहिले अछि) । रूदा अपेन्द्रार्थीयक सेहो अंग्रेजीमे पनेसिब
कसमे लागत अछि आ ह्येचमे शैल्ये जतए एकव प्रयोग लागत अछि जेना *raison d'etre*
एतए सेहो एकव उँचावण बेजोस डेठव लागत अछि, माल अपेन्द्रार्थीयक अरकामे ले दैत अछि रवण
जोडेते अछि, से एकव प्रयोग रिक्कारिक रँदना देनाग तकनीकी कर्पे सेहो अशुचित) ।

अगमे, एहिमे/ एँमे

जगमे, जाहिमे

एथन/ अथन/ अगथन

कँ (कँ नहि) मे (असुनाव बहिले)

भ२

मे

द२

तँ (त२, त ले)

सँ (स२ स ले)

गाछ तब

गाछ वग

साँस थन

जो (जो go, करे जो do)

ते/तथ जेना- ते दुखारे/ तगमे/ तगले

जे/जथ जेना- जे कावण/ जगसँ/ जगले

ए/अथ जेना- ए कावा/ एँसँ/ अगले/ रूदा एकव एकठी थान प्रयोग- नानति कतेक दिनसँ कहैत
बहेत अग

ले/वथ जेना लेसँ/ वगले/ ले दुखारे

नहँ/ लो

लोलो/ ललो/ ललँ/ लनहँ/ लनहँ/ लन



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अअ/ जाहि/ जे

जहिग/ जाहिग/ अगग/ जेग

एहि/ अहि

अग (बालक अतमे बाल) / अ

अगड/ अडि अड

तग/ तहि/ ते/ तहि

उहि/ उग

ओहि/ ओ

ओरि/ ओरी/ ओर

उरि/ उरि

ते/ तग/ त

अअर/ अअर

नग/ न

उग/ उ

नहि/ न/ नग

गग/ ग

उहि/ उरि ...

सअ शेरदक संग अखन कोला रिभक्ति जूठे ते तखन समे जना समेगव गत्यादि । असगवसे **अअ** आ रिभक्ति जूठेन अदे जना अदेस, अदेसे गत्यादि ।

अअ/ जाहि/ जे

जे

जहिग/ जाहिग/ अगग/ जेग

एहि/ अहि/ अग/ अ

अगड/ अडि अड

तग/ तहि/ ते/ तहि

उहि/ उग



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी

जीरै

भले/ भलेही

भवहि

ते/ तँग/ तँ

जायरे/ जायरे

नग/ नै

ढग/ ढै

बहि/ नै/ नग

गग/

लौ

डभि/ डभि

टुकन अछि/ लोव गछि

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

गीटाँक सुटीमे देन रिक्वैमेसँ लैंग्ज एडीटव द्वावा कोष कए टुकन जेरौक चाली:

लौलेड कएन कए ग्राह:

१. होयरीना/ होरीयरीना/ होमयरीना/ हेरीरैना, हेमरीना/ होयरीक/होरियरीना /होयरीक

२. आ/आ२

आ

३. क लेल/क२ लेल/कय लेल/कय लेल/न/न२/नय/नय

४. भ' गेल/भ२ गेल/भय गेल/भय

गेल

५. कव' गेनाह/कव२

गेनाह/कव२ गेनाह/कवय गेनाह

६.



विथ/दिथ विथ,दिय,विथ,दिय/

१. कव' रैना/कव२ रैना/ कवय रैना कवैरैना/क'व' रैना /

कवैरैनी

५. रैना रना (शुकय), रानी (सूनी) ६

थीय थीय

१०. थीयः थीयल

११. दुःथ दुथ १

२. चलि गेल चव लोव/टेल गेल

१३. देवथिह देवकिह, देवथिन

१४.

देथवहि देथवनि/ देथवैह

१३. डथिह/ डवहि डथिन/ डलैण/ डवनि

१७. चवैत/दैत चवति/दैति

११. एथला

थथला

१५.

रैठनि रैठण रैठहि

१६. ७/७२(सरैणाय) ७

२०

७ (सैयलक) ७/७२

२१. थानि/थानि थानि/थानि

२२.

जे जे/जे२ २३. थ-शुकव थ-शुकव

२४. केवहि/केवनि/कवनि

२७. तथनत/ तथन त



२७. जा

बहव/जाय बहव/जाय बहव

२१. निकमय/निकमय

वागव/ वगव रैलवाय/ रैलवाय वागव/ वगव निकव/रैलवे वागव

२४. उतय/ जतय जत/ उत/ जतय/ उतय

२९.

की कुवव जे कि कुवव जे

३०. जे जे/जे२

३९. कुदि / यदि(योग पावर) कुगद/यागद/कुद/याद/

यदि (योग)

३२. ओलो/ ओलो

३३.

हंसय/ हंसय हंस२

३४. लो आकि दस/लो किरा दस/ लो रा दस

३५. सान्-सन्व सान्-सन्व

३७. डह/ सात ड/डः/सात

३१.

की की/ की२ (दीर्घाकारणसे २ रजित)

३४. जरारै जरारै

३९. कवयताह/ कवयताह कवयताह

४०. दवान दिशि दवान दिशि/दवान दिस

४९

. लोवाह गयवाह/गयवाह

४२. किड आव किड आव/ किड आव

४३. जाग डव/ जागत डव जाति डव/जेत डव

४४. गहुँटा/ जेँ जागत डव जेँ जाग डव गहुँटा/ जेँ जागत डव



४३.

ऊरौन (शर) / ऊरौन(खोजी)

४७. वग/ वष क/ क२/ वष क्य / व२ क२/ व२ क्य

४१. व/व२ क्य/

कष

४४. एखन / एखल / अखन / अखल

४६.

अखिलेँ अखिलेँ

३०. गखीव गखीव

३१.

धाव गौव क्लगध धाव गौव क्लगध/क्लगध

३२. जेकाँ जेकाँ

ऊकाँ

३३. तहिन तहिन

३४. एकव अकव

३३. रँहिन रँहिन

३७. रँहिन रँहिन

३१. रँहिन-रँहिन

रँहिन-रँहिन

३४. नहि/ ले

३६. कवरौ / कवरौय/ कवरौय

७०. तँ/ त २ तय/तय

७१. जेबाकी मे जेठ-बाय/जेठ, जेठ-बाय/जेठ

७२. गिजतीमे दू भाग/भाय/भाय

७३. अ पोथी दू भागक/ भाय/ भाय जेव । यारत जारत

७४. माय मे / माय दू मायक मयत



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

७३. **देहि/ दक्ष दक्षि/ दक्षि/ दक्षि दक्षि/ दैहि**

७७. **द/ द२/ द३**

७१. **उ (संयोजक) उ२ (संरचना)**

७४. **तका कथ तकाय तकथ**

७६. **पौले (on foot) पथले कथक/ कैक**

१०.

तहुमे/ तहमे

११.

रुवीक

१२.

रैजा कथ कथ / क२

१३. **रैजाय/रैजाय**

१४. **रैजा**

१३.

दिका दिका

१७.

ततहि

११. **गवरैउमहि/ गवरैवनि/**

गवरैवहि/ गवरैवनि

१४. **रौव रौव**

१६.

तेह टिह(थरु)

४०. **जे जे**

४१

से/ के से/के

४२. **एथुका थथुका**



झांघ (in different sense)-last word of sentence

१०४. छत गब थांघि झांघ

१०३.

ल

१०६. खेवांघ (play) खेवांघ

१०१. शिकांघत- शिकांघत

१०४.

ठग- ठग

१०६

गठ- गठ

११०. कनिंघ/ कनिंघे कनिंघे

१११. बाकस- बाकसे

११२. लोय/ लोय लोय

११३. अडवदा-

उबदा

११४. बुंमेवहि (different meaning- got understand)

११३. बुंमेवहि/बुंमेवनि/ बुंमेवहि (understood himself)

११६. चलि- चव/ चलि लव

१११. खधांघ- खधांघ

११४.

योम पांघवबिह/ योम पांघवबिनि/ योम पांघवबिह

११६. कैक- कएक- कएक

१२०.

वग वग

१२१. जवनांघ

१२२. जवनांघ जवनांघ- जवनांघ/



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

झरनाथ

१२३. होगत

१२४.

गवरोवहि/ गवरोवनि गवरोवहि/ गवरोवनि

१२५.

टिखेत- (to test) टिखगत

१२६. कवगयो (willing to do) कवोयो

१२७. जेकवा- जकवा

१२८. तकवा- तेकवा

१२९.

विदेसव श्रामे/ विदेसवे श्रामे

१३०. कवरगनहुँ/ कवरगनहुँ/ कवरगनहुँ कवरगो

१३१.

हारिक (उठाव लोकर)

१३२. ओजस रजस अशमोच/ अशमोस कागत/ कागच/ कागज

१३३. आवे भाग/ आव-भागे

१३४. पिटा / पिटाया/ पिटाए

१३५. नए/ ल

१३६. रैठा नए

(ल) पिटा जाय

१३७. तखन ल (नए) कहेत अछि। कहे/ सुले देखे छव दूदा कहेत-कहेत/ सुलेत-सुलेत/ देखेत-देखेत

१३८.

कतेक लोटे/ कतक लोटे

१३९. कयाग-धयाग/ कयाग- धयाग

१४०

. वग वग



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१४१. खेलांग (for playing)

१४२.

डबिहा डबिहा

१४३.

खेलांग खेलांग

१४४. का कियो / केउ

१४५.

कमे (hair)

१४६.

कस (court-case)

१४७

खेलांग/ खेलांग/ खेलांग

१४८. खेलांग

१४९. कमी कमी

१५०. चवटा चटा

१५१. कर्म कर्म

१५२. डुराँखे/ डुराँखे/ डुराँखे/ डुराँखे/ डुराँखे

१५३. एखलाका/

खेलांग

१५४. कस/ कियो (राकाक अंतिम गेह)- कस

१५५. कसक/

कसक

१५६. कस कस

१५७

खेलांग खेलांग

१५८. खेलांग खेलांग/ खेलांग/ खेलांग

१५९. खेलांग-खेलांग



१७०.

तेना ल घेववहि तेना ल घेववनि

१७१. नदी / ले

१७२.

छवा छवा

१७३. कतहु/ कते कही

१७४. उमरिगव-उमरिगव उमरिगव

१७५. भरिगव

१७६. धोन/धोखव धोखव

१७७. गग/गग

१७८.

क क

१७९. दररिजा/ दररिजा

१८०. गी

१८१.

ध ध

१८२.

धु धु

१८३. धोवरेक

१८४. रर

१८५. ले/ ल

१८६. लेहि(गहमे ग्राह)

१८७. लेली / लेलि

१८८.

कवरिगव कवरिगवे

१८९. एकेटी



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१+०. कवितसि / कवतसि

१+१.

गुँटि/ गुँट

१+२. बाखवहि बखवहि/ बखवसि

१+३.

वगवहि वगवसि वागवहि

१+४.

बुनि (उँचावा बुजा)

१+५. अछि (उँचावण अगछ)

१+६. एवसि लोवसि

१+७. रिउल/ रिउेल/

रिउेल

१+८. कवरौवहि/ कवरौवसि

करेवसिह/ करेवसि

१+९. कवएवहि/ कववसि

१९०.

आकि/ कि

१९१. गुँटि/

गुँट

१९२. रौती जवाग/ जवाए जवा (आगि जगा)

१९३.

से से

१९४.

हौ से हौ (लौसे हौ रिउकिउसे लौ कए)

१९५. खेव खेव

१९६. खजव(spacious) खेव



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१७१. होयतहि/ होयतहि/ होयतहि/ होयतहि/ होयतहि

१७४. हाथ मटियाएर/ हाथ मटियाएर/ हाथ मटियाएर

१७७. फेका फेका

२००. देखाए देखा

२०५. देखाए

२०२. सउवि सउव

२०३.

सालेर सालेर

२०४. गोलैह/ गोलैह/ गोलैह

२०३. होयक/ होयक

२०७. केला/ केला/ केला/ केला

२०१. किड न किड/

किड ल किड

२०४. घुमेनह/ घुमेनह/ घुमेनह

२०७. एकाक/ एकाक

२५०. अः/ अः

२५५. नय/

नय (अर्थ-परिवर्तन) २५२ कनक/ कनक

२५३. सरक/ सरक

२५४. गिला/ गिला

२५३. क/ क

२५७. जा/ जा

जा

२५१. आ/ आ

२५४. भ/ भ (‘ फाँटक कमीक हातक)

२५७. गिया/ गिया



२२०

लेबहेअव/ लेबहेयव

२२१. पहिव अफव ठा रीदका रीचक ठ

२२२. तहि/तहिं/ तयिं/ तै

२२३. कहि/ कही

२२४. तँअ

तै / तँअ

२२५. नँअ/ नअं नयिं/ नहि/नै

२२६. तै/ तँअ / एवीतै

२२७. डयिं/ डै/ डैक /डअ

२२८. दृष्टिअ/ दृष्टियै

२२९. अँ (come)/ अँअ (conjunct i on)

२३०.

अँ (conjunct i on)/ अँअ (come)

२३१. कला/ कोला, कोना/कोना

२३२. गोलैह-गोलहि-गोलनि

२३३. लेरीक- लोएरीक

२३४. केरौ- कएरौ-कएरहुँ/केरौ

२३५. किछ न किछ- किछ ल किछ

२३६. केहेन- केहन

२३७. अँअ (come)-अँ (conjunct i on-and)/अँ। अँअ-अँअ /अँअह-अँअह

२३८. एअत-हेत

२३९. घुमेनहुँ-घुमएनहुँ- घुमेनारै

२४०. एअक- अएनाक

२४१. लोनि- लोअन/ लोहि

२४२. उ-बाग उ अंगक रीच (conjunct i on), उअ कहनक (he said)/उ



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२४३. की ह्य/ कोसी अथवा ह्य/ की हे । की हज

२४४. दृष्टिअँ/ दृष्टियैँ

२४५.

. गोमिवा/ सोमेव

२४६. तैँ / तँ/ तमि/ तहि

२४७. जैँ

/ जाँ/ जाँ

२४८. सभ/ सरै

२४९. सभक/ सरैलक

२५०. कहि/ कही

२५१. कला/ कोला/ कोलहँ/

२५२. शबकती भय लोव/ भय लोव/ भय लोव

२५३. कोना/ कोना/ कना/ कना

२५४. अः/ अह

२५५. जलै/ जलै

२५६. लोवनि/

लोवाह (अर्थ परिवर्तन)

२५७. केवहि/ कएवहि/ केवनि/

२५८. नया/ नया/ नयाह (अर्थ परिवर्तन)

२५९. कनीक/ कलक/ कनी-मनी

२६०. गठवहि गठवनि/ गठवजल/ गठवजलहि/ गठवोवनि/

२६१. निथय/ निथय

२६२. हेबईअव/ हेबईअव

२६३. गह्वि अरुव बहल ठा/ रीटमे बहल ठ

२६४. आकावाप्तये रिक्वावीक प्रयोग उचित ले/ अपोद्धातनीक प्रयोग हान्स्टक तकनीकी युगतक परिचायक
ओकव रैदना अरुग्रह (रिक्वावी) क प्रयोग उचित

२६५. केव (अर्थमे जौह) / -क/ क२/ के



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२७७. छेहि- छहि

२७१. बलौष/ बलोये

२७५. होएत/ हएत

२७६. जएत/ जएत

२१०. खएत/ खएत/ खओत

२११

. खएत/ खएत/ खेत

२१२. पिखएरौक/ पिखरौक/ पियरौक

२१३. गुर/ गुरह

२१४. गुरह/ गुरह

२१३. खएत/ खओत/ एत/ एतह

२१७. जाहि/ जाग/ जग/ जे/

२११. जागत/ जेत/ जगत

२१५. खएत/ खएत

२१६. केक/ कक

२१०. खएत/ खएत/ खएत

२१५. जग/ जग/ जग (नामति जाए नगरीह ।)

२१२. गुर/ गुर

२१३. कृखएत/ कृखएत

२१४. ताहि/ ते/ तग

२१३. गायरौ/ गायरौ/ गयरौ

२१७. सके/ सक/ सक

२११. सेवा/ सेवा/ सेवा (नामति सेवा गेन)

२११. कहेत बरी/ देवेत बरी/ कहेत छरी/ कहे छरी- एहिना चरी/ पठेत

(पठे-पठेत अर्थ कथना काय परिवर्तित) - खए बूसे/ बूसेत (बूसे/ बूसे छी हूदा बूसेत-बूसेत)/ सकेत/ सके । करेता करे । दे/ देत । छे/ छे । बूसे/ बूसेक । बयरी/ बयरीक । बिय/ बिय । वातिक/ वातिक बूसे अ बूसेत केव अग-अग अरुणव प्रयोग समीप अछि । बूसेत-बूसेत खए बूसे । हय बूसे छी ।



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२१६. दुखाव/ द्वाव

२१७. भेष्ट/ भेष्ट/ भेष्ट

२१८.

खन/ खन/ खुना (लेव खन लेव खन)

२१९. तक/ धवि

२२०. ग२/ लो (meaning different - जनरो ग२)

२२१. स२/ सँ (दूदा द२, न२)

२२२. उ२ (तीन अक्षरक मेन रँदना प्रकृति एक आ एकरी दोसबक उ२योग) आदिक रँदना ह्रु आदि । महउ२/ महउ२/ कर्ता/ कर्ता आदिमे उ स२अक कोना आर२कता मैथिलीमे ले अछि । रउ२

२२३. रँसी/ रँसी

२२४. रँना/ रँना रँना/ रँना (वहँना)

२२५

२२६. रँनी/ (रँदनेरँनी)

२२७. राती/ राती

२२८. अ२वर्द्धिय/ अ२वर्द्धिय

२२९. ल२/ ल२

२३०. ल२/ ल२

२३१. ल२/ ल२ (

ले२/ ले२)

२३२. ल२/ ल२

२३३. ल२/ ल२

२३४. ल२/ ल२

२३५. ल२ (come)/ ल२ (and)

२३६. ल२/ ल२

२३७. २ केव ल२मे शि२क अ२मे ल२, ल२मे ल२ ।

२३८. ल२/ ल२

२३९.



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बह्व (डव)/ बहे (डवे) (meaning different)

३१. तागति/ ताकति

३२. खवाग/ खवारि

३३. लौगा/ लौगि/ लौगिनि

३४. जार्ति/ जार्ति

३५. कागज/ कागज/ कागज

३६. गिले (meaning different - swallow)/ गिल (थस)

३७. बह्दिय/ बह्दिय

DATE-LIST (year - 2013-14)

(१४२५ फसवी साव)

Marriage Days:

Nov.2013- 18, 20, 24, 25, 28, 29

Dec.2013- 1, 4, 6, 8, 12, 13

January 2014- 19, 20, 22, 23, 24, 26, 31.

Feb.2014- 3, 5, 6, 9, 10, 17, 19, 24, 26, 27.

March 2014- 2, 3, 5, 7, 9.

April 2014- 16, 17, 18, 20, 21, 23, 24.

May 2014- 1, 2, 8, 9, 11, 12, 18, 19, 21, 25, 26, 28, 29, 30.

June 2014- 4, 5, 8, 9, 13, 18, 22, 25.

July 2014- 2, 3, 4, 6, 7.

Upanayana Days:

February 2014- 2, 4, 9, 10.

March 2014- 3, 5, 11, 12.

April 2014- 4, 9, 10.



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

June 2014- 2, 8, 9.

Dvī r agaman Dī n:

November 2013- 18, 21, 22.

December 2013- 4, 6, 8, 9, 12, 13.

February 2014- 16, 17, 19, 20.

March 2014- 2, 3, 5, 9, 10, 12.

April 2014- 16, 17, 18, 20.

May 2014- 1, 2, 9, 11, 12.

Mundan Dī n:

November 2013- 20, 22.

December 2013- 9, 12, 13.

January 2014- 16, 17.

February 2014- 6, 10, 19, 20.

March 2014- 5, 12.

April 2014- 16.

May 2014- 12, 30.

June 2014- 2, 9, 30.

FESTIVALS OF MTHILA (2013-14)

Mauna Panchami -27 July

Madhushravani - 9 August

Nag Panchami - 11 August

Raksha Bandhan- 21 Aug



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

Kr i shnast ami - 28 August

Kushi Amavasya / Somvar i Vr at - 5 Sept ember

Har t al i ka Teej - 8 Sept ember

Chaut hChandr a-8 Sept ember

Vi shwak arma Pooj a- 17 Sept ember

Anant Catur dashi - 18 Sep

Pi t ri Paksha begi ns - 20 Sep

Ji moot avahan Vr at a/ Ji t i a-27 Sep

Mat ri Navami -28 Sep

Kal ashst hapan- 5 Oct ober

Bel naut i - 10 Oct ober

Pat ri ka R avesh- 11 Oct ober

Mahast ami - 12 Oct ober

Maha Navami - 13 Oct ober

Vi j aya Dashami - 14 Oct ober

Koj agar a- 18 Oct

Dhant er as - 1 November

Di yabat i , shyama pooj a-3 November

Annakoot a/ Govar dhana Pooj a-4 November

Bhr at ri dwi t i ya/ Chi t ragupt a Pooj a- 5 November

Chhat hi -8 November

Sama Pooj aar ambh- 9 November

Devot t han Ekadashi - 13 November



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

r avi vr at ar ambh - 17 November
Navanna par van - 20 November
Kar t i k Poor ni ma - Sama Vi sar j an - 2 December
Vi vaha Panchmi - 7 December
Makar a / Teel a Sankranti - 14 Jan
Nar akni var an chat ur dashi - 29 Januar y
Basant Panchami / Sar aswati Pooj a - 4 Febr uar y
Achl a Sapt mi - 6 Febr uar y
Mahashi var at ri - 27 Febr uar y
Hol i kadahan - Fagua - 16 Mar ch
Hol i - 17 Mar ch
Sapt ador a - 17 Mar ch
Var uni Trayodashi - 28 Mar ch
Jur i shi t al - 15 April
Ram Navami - 8 April
Akshaya Tritiya - 2 May
Janaki Navami - 8 May
Ravi Br at Ant - 11 May
Vat Savi tri - bar asai t - 28 May
Ganga Dashhar a - 8 June
Har i vasar Vr at a - 9 Jul y
Shr ee Guru Poor ni ma - 12 Jul



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

VI DEHA ARCHIVE

१.पत्रिकाक सबठो पुराण अंक ब्रैल-रिदेह ज, तिवहूत आ देरणागरी कसमे Vi deha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

रिदेह ज अंक ३.० पत्रिकाक पहिल -

रिदेह जमा मँ आगाँक अंक ३.० पत्रिकाक -

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-i/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-ii/>

२. मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi>

३. डिप्लोम संकलन आ मैथिली. Maithili Audio Downloads

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio>

४. मैथिली रीडियोक संकलन Maithili Videos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-videos>

५. आधुनिक चित्रकला आ चित्र / चिथिना चित्रकला. Maithila Painting/ Modern Art and Photos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>

रिदेहक एहि सब सल्लयोगी विकसव सेहो एक लेब जाई ।

७. रिदेह मैथिली ब्लिज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. रिदेह मैथिली जानबूत एग्रीगेटर :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

+ रिदेह मैथिली साहित अग्रेजीमे अनुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

९. रिदेहक पुरि-कप "भाकसविक गाछ" :



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

<http://gajendrathakur.blogspot.com/>

१०. रिदेह ङडिअ :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. रिदेह फांगन :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. रिदेह: सदेह : पलिन तिवहूता (मिथिलासुवर) जानवृत्त (रैजंग)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. रिदेह:रैबन: मैथिली रैबनमे: पलिन रैब रिदेह द्वावा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. VI DEHA I ST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archives.blogspot.com/>

१३. रिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका मैथिली पोथीक आर्कांगर

<http://videha-pothi.blogspot.com/>

१३. रिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका ऑडियो आर्कांगर

<http://videha-audio.blogspot.com/>

११. रिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका रीडियो आर्कांगर

<http://videha-video.blogspot.com/>

१४. रिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१६. मैथिल आर मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जानवृत्त)

<http://maithilaurmaithila.blogspot.com/>

२०. प्रकाशिसि श्रुति.

<http://www.shrutipublication.com/>

२१. <http://groups.google.com/group/videha>



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२२. <http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

२३. गजेन्द्र ठाकुर गडेकर

<http://gajendrathakur123.blogspot.com>


२४. लषा लुठका

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

२५. विदेह रेडियोकारिता आदिक पहिल पोडकास्ट साँठ-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२६.  [Videha Radio](http://videharadio.com)

२७.  [Join official Videha facebook group](http://joinofficialvidehafacebookgroup.com)

२८. विदेह मैथिली नाँठे उमेर

<http://maithili-drama.blogspot.com/>

२९. समदिया

<http://esamad.blogspot.com/>

३०. मैथिली फिल्म

<http://maithilifilms.blogspot.com/>

३१. अचरिहार आखर

<http://anchinharakharakolkata.blogspot.com/>

३२. मैथिली हाँकु

<http://maithili-haikeu.blogspot.com/>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

३४. विहसि कथा

<http://vihankatha.blogspot.in/>



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३३. मैथिली कविता

<http://maithili-kavitablogspot.in/>

३७. मैथिली कथा

<http://maithili-kathablogspot.in/>

३१. मैथिली समालोचना

<http://maithili-samalochnablogspot.in/>

महत्वपूर्ण सूचना: The Maithili pdf books are AVAILABLE FOR free PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

<http://videha123.wordpress.com/about/>



मनूषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



बिदेह:सदर:९: २: ३: ४:३:७:१:४:२९० "बिदेह"क छिष्ट संस्करण: बिदेह-७-पत्रिका
(<http://www.videha.co.in/>) क छन वचना समिति ।

सम्पादक: गजेश्वर ठाकुर ।

Details for purchase available at publisher's (print-version) site
<http://www.shruti-publication.com> or you may write to
shruti_publication@shruti-publication.com

बिदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VI DEHA

(c) २००४-१४. सररिषिकाव लेखकाधीन ँा जतए लेखकक नाम नहि अछि ततए संपादकाधीन । रिदेह- प्रथम मैथिली पाष्किक ङ-पत्रिका । SSN 2229-547X VI DEHA संपादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-संपादक: उषेने मंडव । सहायक संपादक: गिर कयाव साँ, बाय रिवाम सङ्गु ँा कुमारी गेलोज कयाव कर्षी । भाषा-संपादन: नगेंद्र कयाव साँ ँा पञ्जीकाव विद्यानन्द साँ । कव-संपादन: जति साँ टोधरी ँा बमि लेखी मिह । संपादक-शोध-अवस्था: स. जया रमि ँा स. बाजौर कयाव रमि । संपादक-नाटक-वंगम-चवचि- लेख ठाकुर । संपादक-सुला-सर्क-समाद- पुनम मंडव ँा धिबका साँ । संपादक-अववाद विभाग- विनीत उषेव ।

बचनाकाव अणम योनिाक ँा अत्रकाशित बचना (जकब योनिाकताक संपूर्ण उतबदागिन्न लेखक गणक मया छहि) ggajendra@vi.deha.com केँ मेन अटैचमेण्टक कगमेँ .doc, .docx, .rtf राँ .txt फॉर्मेटमे पठा सकैत छथि । बचनाक संग बचनाकाव अणम सक्रिय परिचय ँा अणम केल कएन गेन ह्वाणै पठैतह, मे अशिा करैत छी । बचनाक अतमे षाँगण बहय, जे ङ बचना योनिाक अछि, ँा पहिन प्रकाशिक हेतु रिदेह (पाष्किक) ङ पत्रिकाकेँ देन जा बहन अछि । मेन थ्राणु होयराँक राँद यथार्तभर शीघ्र (सात दिनक तीतब) एकब प्रकाशिक अकक सूचना देन जायत । 'रिदेह' प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका अछि ँा एमे मैथिली, संसृत ँा अत्रेज्जामे मिथिला ँा मैथिलीसँ सररिषित बचना प्रकाशित कएन जागत अछि । एहि ङ पत्रिकाकेँ त्रीमति नक्का ठाकुर द्वावा मासक ०१ ँा १३ तिथिकेँ ङ प्रकाशित कएन जागत अछि ।

(c) २००४-१४ सररिषिकाव स्वबसित । रिदेहमे प्रकाशित सभषाँ बचना ँा आर्कागरक सररिषिकाव बचनाकाव ँा सत्रहकतार्किक नगमे छहि । बचनाक अववाद ँा पुनः प्रकाशिक किरा आर्कागरक उपायोगक अषिकाव किराँक हेतु ggajendra@vi.deha.com पब संपर्क कक । एहि साँगठकेँ तीति माँ ठाकुर, मनुषिका टोधरी ँा बमि शिया द्वावा डिजागण कएन गेन । ३. जूनाँ २००४ केँ

<http://gajendrat.hakur.bl.ogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> "भानसविक गाँठ"- मैथिली ज्ञानरूतसँ थ्रावसु ङठबलैषव मैथिलीक प्रथम उपाष्कितिक यात्रा रिदेह- प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका धवि पँचन अछि,जे <http://www.videha.co.in/> पब ङ प्रकाशित होगत अछि । आँ "भानसविक गाँठ" ज्ञानरूत रिदेह ङ-पत्रिकाक प्ररडाक संग मैथिली भाषाक ज्ञानरूतक एणीषैषवक कगमे प्रयाँ ७२ बहन अछि । रिदेह ङ-पत्रिका । SSN 2229-547X VI DEHA

